प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष-02, अंक - 26 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 02 अप्रैल 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

देश में कोरोना की दोगुनी रफ्तार, केस 1600 पार

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया भर में कोहराम मचाने वाले कोरोना वायरस की चपेट में अब भारत भी फंसता दिख रहा है। मंगलवार को देश में कोविड-19 के 315 नए मामले सामने आए हैं। ये पहली बार है, जब देश में एक दिन में तीन सौ से ज्यादा मामले दर्ज किए गए हैं। सोमवार की तुलना में कोविड-19 पॉजिटिवों का यह आंकड़ा लगभग दोगुना है। अब देश में कोरोना वायरस पीड़ितों की कुल संख्या 1618 हो गई है और इसके चलते मरने वालों की संख्या भी बढ़कर 52 हो गई है। बीते तीन दिनों में 626 नए मामले सामने आए हैं। सबसे ज्यादा मामले महाराष्ट्र से हैं, जहां 302 लोग इसकी चपेट में आ चुके हैं। इसके बाद दूसरे स्थान पर केरल (241), तीसरे पर तमिलनाडु (124) और चौथे स्थान पर देश की राजधानी दिल्ली (120) है।

झारखंड और असम भी अछूते नहीं

अभी तक झारखंड और असम ने इस घातक कोविड-19 वायरस से दूरी बना रखी थी, लेकिन मंगलवार को इन दोनों राज्यों में भी पहला-पहला केस सामने आया। रांची में मलेशिया की एक 22 साल की युवती में इस वायरस की पुष्टि हुई है। यह महिला भी तब्लीगी जमात संगठन का ही हिस्सा थी और यहीं से रांची पहुंची थी। असम के सिल्चर मेडिकल कॉलेज में एक 52 वर्षीय पुरुष की भी रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। वह कैंसर का भी मरीज है और हाल ही में दिल्ली से लौटा है।

हाई रिस्क पर दिल्ली

दिल्ली में इस बीमारी के दो बड़े हॉट स्पॉट बन गए हैं- ये हैं निजामुद्दीन और दिलशाद गार्डन। मंगलवार को यहां 23 नए केस सामने आए, जिससे कोविड-19 पीड़ितों की संख्या यहां 120 तक पहुंच गई। हालांकि इस आंकड़े में अभी निजामुद्दीन मस्जिद से बाहर ले जाए गए (हॉस्पिटल और क्वॉरेंटाइन सेंटर) लोगों में से एक भी नया केस शामिल नहीं है क्योंकि सरकार ने बताया है कि अभी यहां के लोगों की रिपोर्ट आने का इंतजार है। दिल्ली सरकार ने बताया, इन 23 केसों में 8 का यात्रा इतिहास था, जबकि 7 लोगों को संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में आने से यह हुआ। आठ अन्य लोगों को यह संक्रमण होने की जांच जारी है। सूत्रों का कहना है कि दिल्ली में कोरोना पीड़ितों का यह आंकड़ा तेजी से बढ़ता दिख सकता है क्योंकि तब्लीगी जमात के 1548 लोगों में से रविवार और सोमवार को क्वारेंटाइन के लिए ले जाए गए 441 लोगों में इस वायरस के लक्षण चरम पर दिख रहे थे।

रसोई गैस सस्ती

नई दिल्ली, एजेंसी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में जारी गिरावट के बीच देश में रसोई गैस लगातार दूसरे महीने सस्ती हुई है। देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के अनुसार राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 14.2 किलोग्राम के बिना सब्सिडी वाले रसोई गैस सिलेंडर की कीमत एक अप्रैल से 61.50 रुपये घटाकर 744 रुपये कर दी गई है। मार्च में इसकी कीमत 805.50 रुपये थी। सब्सिडी वाले घरेलू रसोई गैस सिलेंडर के दाम में इसके अनुरूप कर का हिस्सा कम हो जायेगा। कोलकाता में सब्सिडी वाले सिलेंडर की कीमत 65 रुपये घटकर 744.50 रुपये, मुंबई में 62 रुपये घटकर 714.50 रुपये और चेन्नई में 64.50 रुपये घटकर 761.50 रुपये रह गयी है।

निजामुद्दीन मरकज खाली 2361 लोग निकाले गए

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के निजामुद्दीन की मरकज को खाली करा लिया गया है और यहां से कुल 2361 लोगों को निकाला गया है। उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने बुधवार को बताया कि निजामुद्दीन के आलमी मरकज में 36 घंटे का सघन अभियान चलाकर सुबह चार बजे पूरी बिल्डिंग को ख़ाली करा लिया गया है। इस इमारत में कुल 2361 लोग बाहर निकाले गये जिनमें से 617 को अस्पतालों में और बाकी को अलग-अलग क्वारंटीन में भर्ती कराया गया है।

सिसोदिया ने लॉकडाउन में सभी से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि क़रीब 36 घंटे के इस अभियान में मेडिकल स्टाफ़ प्रशासन, पुलिस और डीटीसी स्टाफ सबने मिलकर तथा अपनी जान जोखिम में डालकर काम किया। इन सबको दिल से सलाम।

गौरतलब है कि निजामुद्दीन की मरकज में तब्लीगी समाज का कार्यक्रम था। जिसमें बडी संख्या में लोग जमा हुए थे। बाद में यहां से लोग देश के विभिन्न राज्यों में गये जिससे कोरोना वायरस का संक्रमण बड़े पैमाने पर फैलने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

निजामुद्दीन मरकज से लौटे चार देशों के 32 नागरिक भोपाल से मिले

भोपाल, एजेंसी। राजधानी भोपाल में बर्मा, इंडोनेशिया, मलेशिया और तुर्किस्तान से आईं विदेशी जमातें मिली हैं, जो यहां स्थानीय मस्जिदों में रुकी हुई हैं। इन सभी का कनेक्शन निजामुद्दीन मरकज से जुड़ा हुआ है। निजामुद्दीन की तब्लीगी जमात के मरकज में शामिल हुईं इन विदेशी जमातों के सभी लोगों का कोरोना टेस्ट करके मस्जिद में क्वारेंटाइन कर दिया गया है। इस मरकज से लौटकर मध्य प्रदेश में 107 जायरीन आए हैं। इनमें से भोपाल की तीन मस्जिदों से अब तक 32 लोग मिल चुके हैं, जिनमें 4 महिलाएं भी शामिल हैं। मंगलवार को पुलिस एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम भोपाल की 4 मस्जिदों में पहुंची। जांच-पड़ताल के दौरान विदेशों से आए लोगों को खोजने के अलावा यह भी पता लगाने की कोशिश की गई कि निजामुद्दीन की मरकज में प्रदेश से कौन-कौन लोग शामिल होने गए थे। पिछले दिनों इस मरकज से करीब 800 लोग बाहर जा चुके हैं, अब राज्यों की पुलिस इन्हें ढूंढ़ रही है।

पुलिस प्रशासन को मंगलवार को यहां बागफरहत अफ्जा मस्जिद में विदेशी जमातों के रुकने का पता चला, जो 22 फरवरी को भोपाल पहुंची थीं। उसके बाद 24 मार्च को लॉकडाउन की घोषणा होने से ये सभी यहीं रुक गए। एक जमात एशबाग की रहमानी मस्जिद में 13 लोगों की मिली है, जो बर्मा से निजामुद्दीन होते हुए फिर भोपाल आई थी। दूसरी जमात जहांगीराबाद की सिकंदरिया मस्जिद में ठहरी हुई थी, जिसमें 8 लोग शामिल हैं। बताया जा रहा है कि भोपाल में बर्मा, इंडोनेशिया, मलेशिया और तुर्किस्तान से ये विदेशी जमातें आई हैं। जमात में शामिल जायरीनों का कहना हैं कि 25 मार्च को इन्हें अपने मुल्क वापस लौटना था, लेकिन इस बीच लॉकडाउन की घोषणा होने और आवागमन के सभी साधन बंद होने के चलते वे यहीं रुक गए। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने मस्जिदों में रह रहे सभी लोगों का स्वास्थ्य चेकअप किया और सभी का कोरोना टेस्ट भी किया है। अभी फिलहाल इन सभी को मस्जिद में ही आइसोलेट करके रखा गया है।

प्रशासन का हर तरह से सहयोग कर रहे हैं: मरकज

नई दिल्ली, एजेंसी। बड़ी संख्या में कोरोना संक्रमण का कारण बनी तबलीगी जमात के आयोजक मरकज निजामुद्दीन ने अपने परिसर का इस्तेमाल एकांत व्यवस्था बनाने के लिए देने की बात कही है। मरकज का कहना है कि वह हमेशा प्रशासन के साथ सहयोग के लिए पूरी तरह तैयार है और उसने एकत्रीकरण में शामिल रहे सभी लोगों की जानकारी प्रशासन के साथ साझा की है और आगंतुकों से भी स्वास्थ्य संबंधित दिशा-निर्देश पालन कराए हैं। अपने वक्तव्य में मरकज ने पूरे घटनाक्रम की जानकारी साझा की है और कहा है कि 30 मार्च, 2020 को सोशल मीडिया पर एक अफ्वाह फैलने लगी कि कोविड-19 से प्रभावित लोग मरकज में मौजूद थे। यह भी परिचालित किया जा रहा है कि कुछ मौतें उसी के कारण हुई हैं।

लोगों का एकत्र होना 'तालिबानी जुर्म': नकवी

केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने लॉकडाउन के बावजूद निजामुद्दीन में हजारों की संख्या में तब्लीगी समाज के जुटने पर कड़ी नाराजगी जाहिर करते हुए इसे तालिबानी जुर्म करार देते हुए कहा है कि इसे माफ नहीं किया जा सकता है।

नकवी ने कहा कि एक तरफ जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पूरा देश कोरोना वायरस के प्रकोप की चुनौती से पार पाने में जुटा है वहीं तब्लीगी समाज ने लॉकडाउन के बावजूद इतनी बड़ी संख्या में एकत्रित होकर गंभीर अपराध किया है। यह जानबूझकर किया गया अपराध है जो माफनहीं किया जा सकता है। उन्होंने ट्वीट कर कहा,'तबलीगी जमात का 'तालिबानी जुर्म'.. यह लापरवाही नहीं, 'गम्भीर आपराधिक हरकत' है। जब पूरा देश एकजुट होकर कोरोना से लड़ रहा है तो ऐसे 'गम्भीर गुनाह' को माफ नहीं किया जा सकता।

सुविचार

आप तूफान को शांत नहीं कर सकते, कोशिश व्यर्थ है। आप स्वयं को शांत कीजिए, तूफान खुद चला जाएगा।

गौतम बुद्ध

प्रवासी मजदूरों को दी जाए सामाजिक सुरक्षाः सरकार

नई दिल्ली, एजेंसी। कोरोना वायरस के संकट से निपटने के लिए 21 दिन के घोषित लॉक डाउन की वजह से प्रवासी मजदूरों को हुए सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक तनाव से बाहर लाने के लिए सामाजिक सुरक्षा दी जाए। स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस संबंध में एक पत्र जारी कर मजदूरों को इस आघात से बाहर लाने के लिए जरूरी बताया है। प्रधानमंत्री द्वारा 21 दिन के देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा करते ही सभी यात्री सेवाएं बंद होने के कारण विभिन्न महानगरों से प्रवासी मजदूरों ने अपने गृह राज्यों की ओर पैदल ही जाना शुरू कर दिया।

दस्तावेज में कहा गया है कि प्रवासी मजदूरों के सामने भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य सुविधा और रोजी-रोटी से हाथ धो बैठने की चिंता के अलावा वायरस के संक्रमण का भय भी मन में बैठ गया है। मंत्रालय ने माना कि कभी-कभी उन्हें शोषण के अलावा स्थानीय समुदायों की नकारात्मक टिप्पणियों का भी सामना करना पड़ा। इन परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें मजबूत सामाजिक सुरक्षा की दरकार है।

मध्यप्रदेश में कोविड-19 संक्रमितों की संख्या बढ़कर हुई 86, सबसे अधिक प्रभावित इंदौर

भोपाल, एजेंसी। देश के अन्य प्रदेशों की तरह ही मध्यप्रदेश में भी समय बीतने के साथ कोरोना का कहर बढ़ता जा रहा है। कुछ ही दिनों में संक्रमित मरीजों की संख्या 86 पर पहुंच गई है। सबसे अधिक इंदौर जिला कोराना से प्रभावित है। प्रदेश में कोरोना वायरस संक्रमण के 20 नये मामले सामने आए हैं, जिसमें अकेले इंदौर के 19 लोग संक्रमित पाए गए हैं। इंदौर में अब तक मिले संक्रमितों का यह आंकड़ा सूबे के कुल कोरोना वायरस संक्रमित लोगों की तादाद का करीब 75 फीसद हो गया है।

ताजा आंकड़ों को देखें तो इंदौर में 63, जबलपुर के आठ, उज्जैन के छह, भोपाल के चार और शिवपुरी एवं ग्वालियर के दो-दो लोगों में भी इस संक्रमण की पुष्टि हुई है। सूबे में कोरोना संक्रमण से अब तक छह लोगों की मौत हो चुकी है। मृतकों में इंदौर के तीन और उज्जैन शहर के दो लोग और खरगोन का एक 65 वर्षीय पुरुष शामिल है। इंदौर में रानीपुरा, हाथीपाला सबसे ज्यादा घनी बस्ती वाले क्षेत्र होने के कारण से प्रशासन के लिए भी चुनौती बनकर उभरे हैं। यहां पर कोरोना संक्रमण बहुत तेजी से फैला है। चंदन नगर और खजराना में डिटेल सर्वे प्रशासन द्वारा कराया जा रहा है। आशा, एएनएम और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की टीम घर-घर जाकर दवा बांटने के साथ ही सर्वे कर रही है।

कोरोना संक्रमण के प्रचारक पैदा कर गया निजामुद्दीन मरकज

माही की गूंज, झाबुआ। धर्मेंद्र पंचाल

कोरोना के अंतर्राष्ट्रीय विस्फोट के बावजूद दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज में लोगों की भारी भीड़ और उसके बाद उसमें शामिल जमातियों के देश और विदेशों में अलग-अलग स्थानों पर जाकर भी किसी भी प्रकार की 'सामाजिक दूरी' के नियम का निर्वाह न करने की दुर्घटना चौंकाने वाली है। जहां एक ओर सामूहिक लापरवाही का दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण है। वहीं एक शामिल समुदाय की घोर मूढ़ता और भीषण अज्ञानता का भी सूचक है। ऐसी धर्मांधता को अगर आपराधिक भी कह दिया जाए, तो शायद ज्यादती न होगी। संपूर्ण मनुष्यता के विरूद्ध जान बूझकर किया गया कृत्य अपराध की श्रेणी में ही आएगा। भले ही इसकी जड़ में यह मासूम नादानी ही क्यों न निहित हो कि हम तो अपने मजहब का काम करने निकले हैं, कोई महामारी हमारा क्या कर लेगी। कहना न होगा कि इससे अधिक बचकाना और अवैज्ञानिक तर्क कोई और हो ही नहीं सकता।

तमाम तरह की चेतावनियों के बावजूद बना रहा यह जमावड़ा किसी आत्मघाती अभियान से कम खतरनाक सिद्ध नहीं होने वाला है। इस संभावना के प्रमाण अलग-अलग स्थानों पर कोरोना बम के फूटने की तरह मिलने भी शुरू हो गए हैं। इसे अब और क्या कहिएगा कि इस जमात में शामिल होकर कई राज्यों में 6 से अधिक लोग खुद तो मौत का निवाला बन ही गए, इस बीच और न जाने कितने लोग उनसे संपर्क में आकर संक्रमित हो गए होंगे। इस संक्रमण से अनजान ये लोग आगे और भी संक्रमण फैला सकते हैं। यह क्या खतरे की घंटी नहीं है कि 25 मार्च को रात 12 बजे से लॉक डाउन के दौरान निजामुद्दीन के इस तबलीगी मरकज में शामिल लोगों में से 24 लोग कोरोना पॉजिटिव पाए जा चुके हैं।

कहना न होगा कि यह तो आइसबर्ग का एक हिस्सा भर है। इसके नीचे ज्वालामुखी भी छिपा हो सकता है। उम्मीद की जानी चाहिए कि इन लोगों ने इस अवधि में अन्य लोगों को संक्रमित नहीं किया होगा।

खतरा कितना बड़ा हो सकता है, इसका अंदाजा इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि कोरोना के कारण अखिल भारतीय तालाबंदी की घोषणा के बाद भी इस मरकज में चीन, यमन, बांग्लादेश, श्रीलंका, अफग़ानिस्तान, सऊदी अरब सहित 100 से अधिक विदेशी जमाती मौजूद थे। इनके अलावा देशी जमातियों की संख्या भी लगभग 1500 बताई गई है। इनमें से 200 से अधिक कोरोना संदिग्धों की पहचान भी की जा चुकी है और उन्हें क्वारंटाइन किया जा रहा है। साथ ही बुधवार को प्रशासन ने सख्ती कर इस मरकज से 2300 से अधिक लोगों को बाहर निकाला है। लेकिन उस बड़े समूह का क्या किया जा सकता है जो इस महामारी के वैश्विक प्रसार के बीच यहां से निकलकर देश-विदेश के अलग-अलग स्थानों पर पहले ही पहुंच चुके हैं।

इस्लाम से जुड़े कुछ लोग बताते हैं कि निजामुद्दीन मरकज भारत में तबलीगी जमात का केंद्र है। भारत ही नहीं, दुनिया भर के अनेक मुल्कों से घर-घर जाकर इस्लाम का प्रचार करने वालों की जमातें निजामुद्दीन मरकज पहुंचती रहती है। यहां उन्हें इस्लामी शिक्षा के साथ-साथ यह निर्देश दिया जाता है कि इस्लाम का प्रचार करने के लिए कौन-कौन, कहां-कहां जाएगा। यह भी महत्वपूर्ण है कि इस मरकज में विदेशों से आने वाली जमातें आमतौर पर 4 महीने के लिए आती है। देशी जमातों की अवधि 3 दिन से लेकर 4 माह तक की हो सकती है। इस विशाल आंकड़े से सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि नवंबर 2019 में दुनिया में कोरोना के जिन्न के जागने बाद से अब तक अनजाने ही जाने कितने धर्म प्रचारक यहां कोरोना लेकर आए होंगे तथा जाने कितने इस्लाम के स्थान पर कोरोना संक्रमण के प्रचारक बनकर यहां से दुनिया के अलग-अलग कोनों में गए होंगे। खुदा खैर करें.....।

निःस्वार्थ सेवा की मिसाल बने थांदला के युवा, सभी ने सराहा

युवा 'समर्थ' बन कोरोना महामारी के बने 'अजय' योद्धा

माही की गूंज, थांदला।

छोटी काशी के नाम से पहचानी जाने वाली थांदला नगरी का अपना इतिहास रहा है। जब-जब स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कोई आपदा आती है, तब सेवा से लेकर आर्थिक स्तर तक की मदद बिना किसी जाति, धर्म-वर्ग व दलगत राजनीति से हटकर बिना भेदभाव नगर के लोग निस्वार्थ भाव से आगे आते हैं।

वर्तमान में जब सम्पूर्ण देश कोरोना जैसी महामारी से ग्रस्त है। हर नगर- शहर लॉक डाउन (तालाबंदी) से गुजर रहा है। इस महामारी का इतना खौफबना हुआ है कि जनता भय के दौर से गुजर रही हैं। ऐसे विकट समय में भी इस नगर के सर्व समाज के नवयुवकों के विभिन्न ग्रुप्स ने बिना भय के जात-पात से परे हटकर सेवा के जज्बे के साथ सड़क पर उतरकर मानवता की मिसाल पेश की है।

आवश्यक चीजों को पूरा करने उतरी टीम

'भूखे को भोजन, प्यासे को पानी सब मिलकर रोकेंगे यह हमारी'। किसी ने ग्रुप बनाकर मरीजों को घर बैठे दवाइयां लेकर पहुंचाने का जिम्मा संभाला तो कोई ग्रुप सड़कों पर भटक रही गायों को घास व श्वानों को रोटियां खिलाने में व्यस्त हो गया। कोई बेरोजगार हो चुके मजदूर व गरीब वर्गों के घरों में खाद्य सामग्री राशन पहुंचाने की जिम्मेदारी का मानवीय उदाहरण प्रस्तुत करने में लगा, तो कोई चाय, पानी, दूध की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी व कर्तव्य समझने लगा। किसी संगठन ने भोजन के पैकेट तैयार कर जरूरतमंद तक पहुंचाने का जिम्मा पूर्ण किया तो किसी ने लॉक डाउन में फंसे लोगों को उनके घर तक पहुंचाने व बाहर रुके नगर के लोगों को यहां बुलवाने जैसी जिम्मेदारी का निर्वहन किया। अपनी इन जिम्मेदारियों व मानवता के कार्यो में हिन्दू संगठन ही नही दाउदी बोहरा समाज व मुस्लिम समाज के नवयुवकों ने भी आगे आकर अपने-अपने स्तर पर जिम्मेदार व मानवीय कर्तव्यों को पूर्ण कर एक बार फिर थांदला नगर के गौरवशाली इतिहास को बरकरार रखा। सेवा का यह कार्य आज भी चल रहा है और परिस्थिति बनी रहने तक चलता रहेगा।

परिवार की तरह संभाली जिम्मेदारियां

22 मार्च के जनता कर्फ्यू के बाद जब प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 21 दिन के लॉक डाउन की घोषणा होते ही नगर के सेवाभावी युवा वर्गों के विभिन्न ग्रुप्स ने इस स्थिति से निपटने व आमजन को परेशानियों का सामना न करना पड़े, इसे ध्यान में रखते हुए अपनी जिम्मेदारियां संभालना शुरू की। जिससे समाज का हर वर्ग लाभांवित हुआ। इन युवाओं ने अपने परिवार के सदस्यों की तरह सभी जिम्मेदारियों को निभाया।

चाय-दूध से लेकर दवाई उपलब्ध कराई

नगर की 'ब्लड डोनेशन टीम' ने पहले विभिन्न चिकित्सालयों में भर्ती मरीजों, चिकित्सा सेवा व पुलिस सेवा में नगर में जुटे कर्मचारियों, बाहर के ट्रक चालकों को चाय, दूध, बिस्किट की व्यवस्थाएं जुटाई। इस कार्य में जब नगर का दाउदी बोहरा समाज आगे आया तो ब्लड डोनेशन टीम ने नगर के अन्य बीमारियों से ग्रस्त उन लोगों की समस्याओं को हल करने का बीड़ा उठाया, जो निकटस्थ गुजरात के चिकित्सकों के ईलाज पर आश्रित थे। परन्तु यातायात सुविधाएं बन्द होने से उन्हें गुजरात की दवाइयां उपलब्ध होना मुश्किल हो रहा था। टीम ने इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को लिया व टीम के अर्पित लुणावत, गोलू उपाध्याय (समर्थ), अजय सेठिया, भोला चौहान, श्याम मोरिया व मोंटू उपाध्याय नगर के ऐसे सैकड़ों मरीजों को प्रतिदिन दाहोद (गुजरात) जाकर दवाइयां लेकर उपलब्ध करवा रहे हैं।

संघ की भोजन शाला

21 दिन के लॉक डाउन में रोज कमाकर परिवार का पेट पालने वाले छोटे गरीब दुकानदारों, फेरी वालों, मजदूरों का दुःख दर्द राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने समझा। स्थानीय हनुमान अष्ट मंदिर परिसर में भोजनशाला शुरू कर उन लोगों तक रोटी, सब्जी-पूड़ी के पैकेट तैयार कर उनके घरों तक भेजने की व्यवस्था की। 100 परिवारों के लिए बनने वाले भोजन के पैकेट 7वें दिन में 500 से अधिक पैकेट पर जा पहुंचा। गुजरात में विभिन्न प्रदेशों के कार्यरत हजारों मजदूरों व अन्य कर्मचारीयो को जब इस विकट परिस्थिति में गुजरात से पैदल निकलना पड़ा तो थांदला होकर गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति को भूखा नहीं जाने दिया गया। आरएसएस का यह भंडार दिनरात चलता रहा व आज भी चल रहा है।

खाद्य सामग्री वितरित

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जब गुजरात की ओर से प्रतिदिन लौटने वाले सैकड़ों मजदूरों व अन्य लोगों को भोजन उपलब्ध कराने में भूमिका शुरू की, तो नगर के जैन सोश्यल ग्रुप व राकेश-प्रफुल्ल तलेरा परिवार ने नगर के गरीब मजदूर परिवारों के राशन पानी की जिम्मेदारी लेते हुए उनके घरों में खाद्य सामग्री गेंहू, चावल, दाल, शक्कर आदि के पैकेट वितरण कर अपने मानवीय कर्तव्यों को समझा। बाद में मुस्लिम पल संस्था के साथ ही थांदला के व्यापारियों ने तहसील के अन्य ग्राम में जाकर जरूरतमंद परिवारों को राशन बांटा।

मूक पशुओं की सेवा

नगर के बीसीबी ग्रुप ने जीवदया का विशेष उदाहरण प्रस्तुत किया व नगर में घूमने वाले पशुओं तथा श्वानों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था जुटाने की जिम्मेदारी व कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए ग्रुप के सदस्यों ने घास व रोटियों के माध्यम से इन मूक पशुओं के पेट को तृप्त किया।

समाज के वर्ग को राहत

नगर के सकल मुजलिम समाज का युवा वर्ग भी सेवा कार्य में जुटा व उन्होंने भी समाज के उन गरीब परिवारों के लिए राशन सामग्री की व्यवस्था की जिनके परिवार प्रतिदिन अपनी मजदूरी व व्यवसाय पर ही जीवन आधारित थे।

परेशानियों से निजात

पत्रकार संघ के सदस्यों ने इस संकट की घड़ी में नगर के उन व्यक्तियों तक जो अन्य शहरों में रह गए थे, उन्हें अपने घर तक लाने व अन्य शहरों के व्यक्ति जो यहां रुके थे उन्हें अपने शहर, गांवों तक भिजवाने की जिम्मेदारी में प्रशासन को पूर्ण सहयोग दिया।

घर पहुंच शुरू हुई सेवा

नगर में आम जनता को सब्जी, दूध, फल, किराना सामग्री आदि घर बैठे प्राप्त हो जनता को इस हेतु बाजार में नहीं आना पड़े। क्षेत्र के गांवों में भी इन चीजों का अभाव न हो इसके लिए समाजसेवी व किराना व्यापारी एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल भंसाली व एसोसिएशन के सदस्यों ने प्रशासन के साथ योजनापूर्वक रणनीति बनाई। जिसके तहत सभी किराना व्यापारियों के वाट्स एप्प नम्बर की सूची जारी की गई। उस पर आर्डर भेजने पर सामग्री घर पहुंचाई जा रही है। नगर में 20 सब्जी विक्रेता को अधिकृत किया, जो ठेलागाड़ी से गलियों में घूमकर सब्जी दे रहे है। जिसे बाद में दशहरा मैदान में स्थापित किया गया। इसी तरह दूध विक्रेता भी साइकलों के माध्यम से नगर की गलियों में घूमकर घर-घर दूध पहुंचने हेतु अधिकृत किए जाने से सारी व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। जिसमें आमजन को घर बैठे ही सामग्री उपलब्ध हो रही है।

पुलिस व्यवस्था माकूल

नगर के प्रमुख चौराहों व नगर के प्रवेश मार्गो पर पुलिस जवानों को तैनात किया गया है। जो बिना वजह सड़कों पर घूमने वालों को पहले प्रेम से समझाते रहे और न समझने वालों को पुलिसिया सख्ती से समझाइश देते भी नजर आए। नतीजतन नगर की सड़कों पर फालतू घूमने वालो पर रोक लगी।

प्रशासन का मिल रहा सहयोग

नगर में सम्पूर्ण व्यवस्था व सेवा कार्य सुचारू बनाए रखने में नगर के सामाजिक कार्यकर्ताओं, समाजसेवी संस्थाओं, समस्त ग्रुप सदस्यों, मीडिया का प्रशासन से समन्वय तथा सहयोग ही इस नगर को सेवा के साथ सावधानी बरतने व कोरोना मुक्त करने में सहायक बन रहा है।

फुटतलाब मंदिर पर की गई प्रवासी मजदूरों के लिए भोजन और बस की व्यवस्था

माही की गूंज, मेघनगर। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल वनेश्वर मारुति नंदन फुटतलाब मंदिर पर भोजन की व्यवस्था के साथ लोगों को कर रहे कोरोनावायरस से बचने के लिए मुंह पर मास्क लगाने के लिए जागरूक भी किया गया। साथ ही हाथों को धोकर एवं सैनिटाइजर का उपयोग करने के बारे में भी जानकारी दी गई। यहां से भोजन का वितरण आसपास के इलाकों के ग्रामीणों के घरों पर तक किया जा रहा है। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए एक लाइन में दूर-दूर खड़े होकर भोजन के पैकेट वितरण करने की व्यवस्था की गई हैं। साथ ही हाथों को सेनिटाइज कर कर भोजन बनाकर पैक किया जा रहा है। समाजसेवी सुरेशचंद्र जैन (पप्पू भैया) द्वारा बस सेवा की व्यवस्था भी की गई। जिसमें अपने गंतव्य की ओर जा रहे त्रियों के लिए भोजन के पैकेट की व्यवस्था पप्पू भैया और चुन्नू भैया मित्र मंडल ने की। प्रतिदिन 2500 से 3000 लोगों के भोजन की व्यवस्था की जा रही है। सुरेश चंद्र जैन (पप्पू भैया), चुन्नू शर्मा, रिंकू जैन एवं मंदिर के महंत मुकेशदास जी महाराज ने लोगों से घर से ना निकलने की अपील की एवं मुंह पर माक्स बांधने और हाथों को सैनिटाइज करने की अपील की है।

ग्राम पंचायत बनी लापरवाह, युवा खुद कर रहे नालियों की सफाई

माही की गूंज, खच्चरटोडी। देश में कोरोना वायरस (कोविड-19) के बढ़ते मामलों के बावजूद भी मेघनगर जनपद के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत खच्चरटोडी को गांव के लोगों की चिंता नहीं है। ग्राम पंचायत ने अभी तक नालियों की सफाई नहीं करावाई है। लिहाजा ग्रामीण युवा खुद नालियों की सफाई कर रहे है। ग्राम पंचायत कोरोना वायरस को हल्के में ले रही है। ग्राम पंचायत की लापरवाही से ग्रामवासियों की जिन्दगी खतरे में पड़ सकती है। अभी भी ग्राम पंचायत में कई स्थानों पर गन्दगी पसरी है, तो कई जगह कीचड़ रोड़ पर बह रहा है। इससे भी बीमारी का खतरा बढ़ता जा रहा है। इस सम्बन्ध में जब ग्राम पंचायत के सचिव से बात करने की कोशिश की गई तो सवालों के जवाब देने में असमर्थ होने के कारण उन्होंने फोन कट कर दिया।

चिराग फाउंडेशन ने लौटे ग्रामीणों को बांटी खिचड़ी

माही की गूंज, झाबुआ। चिरांग फाउंडेशन झाबुआ से जुड़े सभी सेवाभावी सदस्य 25 मार्च से देष में लगे 21 दिन के लॉक डाउन के बीच अपनी सरहनीय सेवाएं देते हुए गुजरात और राजस्थान राज्य के बड़े शहरों से विभिन्न वाहनों के माध्यम से मप्र की सीमा पिटोल बैरियर एवं फुल्लमाल तिराहे पर प्रतिदिन जाकर ग्रामीणों को सकल व्यापारी संघ द्वारा प्रदत्त स्वादिष्ट खिचड़ी एवं थुल्ली का वितरण कर निःस्वार्थ भाव से कर रहे है। इन सेवाभावी सदस्यों द्वारा बीते दिनों शहर में 24 घंटे ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को अपनी ओर से पानी एवं चाय पिलाने का भी कार्य किया गया।

मुस्लिम महासभा ने पहुंचाई जरूरतमंदों को सामग्री

माही की गूंज, झाबुआ। शहर में कार्यरत मुस्लिम महासभा के सेवाभावी सदस्यों ने सोशल मीडिया पर अपने मोबाईल नंबर जारी किए है। जिसमें ऐसे लोगों से कहा गया है कि जिनके पास लॉक डाउन के बीच दुकानें बंद एवं व्यवसाय पूरी तरह से ठप्प होने से राशन एवं अन्य रोजगार की सामग्रियां उपलब्ध नहीं है, तो वह उनके मोबाईल नंबर पर फोन कर सकते है। जिसके बाद संस्था के सदस्य उनके घर पहुंचकर निःशुल्क रूप से रोजमर्रा की सामग्रियां उपलब्ध करवा रहे है।

कोरोना वायरस के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए जिला पंचायत सीईओ ने जारी किया आदेश

माही की गूंज, झाबुआ। लॉक डाउन में कई मजदूरों ने बिना किसी जांच के गांवों में प्रवेश किया है। इसी को देखते हुए जिला सीईओ संदीप शर्मा ने आदेश जारी किया है कि जनपद स्तरीय एवं पंचायत स्तरीय समस्त अधिकारी और कर्मचारियों को अपने मुख्यालय पर निवास करना होगा। साथ ही कोरोना वायरस के चलते जिले से अन्य राज्यों में मजदूरी करने गए व्यक्तियों की ग्राम पंचायत में वापसी हो रही है। पंचायत में वापस आने वाले व्यक्ति परिवार को जीवन यापन करने हेतु आवश्यक मूलभूत सुविधा और राशन आदि तत्काल उपलब्ध कराए जाने का भी निर्देश दिया। पंचायत में वापसी करने वाले परिवार, मजदूरों की विस्तृत जानकारी संकलित करने का भी निर्देश दिया।

एटीएम का हाथ धोकर करें उपयोग

माही की गूंज, झाबुआ। कोरोना वायरस के प्रकोप को देखते हुए हर जगह हर संभव प्रयास किये जा रहे है कि इस वायरस के संक्रमण से दूर रहा जाए। वहीं नगर में एसबीआई एटीएम के बाहर हैंड वॉश के साथ ही एक पानी की कैन भी रखी गई है। जिसमें एटीएम पर पैसे निकालने वाले हर एक व्यक्ति को सबसे पहले हैडवॉश से हाथ धोने के बाद ही एटीएम मे प्रवेश कर उसे पैसे निकालने दिया जा रहा है। हर एक व्यक्ति स्वेच्छा से अपने हाथ धोकर ही एटीएम में प्रवेश कर पैसा निकालने के लिये अंदर जा रहा है ओर बाहर आकर पुनः हाथ धो रहा है।

समाजसेवियों ने नगर को कराया सैनेटाइज

माही की गूंज, थांदला। जहां एक ओर पूरा भारत एक होकर कोरोना के खिलाफ जंग में खड़ा है। वहीं प्रतिदिन ब्लड डोनेशन टीम अपना काम कर रही है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोग अपने सेवाकार्य लगातर कर रहे हैं।विभिन्न समाज सेवी मयूर तलेरा,अनिल भंसाली,प्रफुल्ल तलेरा,पत्रकार संघ, डॉक्टर्स, एसडीएम जेएस बघेल , एसडीओपी एमएस गवली की टीम सहित पूरा प्रशासन बखूबी अपना काम कर रहे हैं, तो वहीं थांदला शहर के नागरिक भी अपनी जिम्मेदारी भी निभा रहे हैं। वहीं समाजसेवी कमलेश दायजी ने अपने चिर-परिचित अंदाज में ट्रैक्टर पर जुगाड़ मशीन द्वारा पूरे नगर में दवाई का छिड़काव कर सेनेटाइजेशन का कार्य किया। पहले सिर्फएक ही फायर ब्रिगेड से सेनेटाइजेशन किया जा रहा था। नगर बड़ा होने से 1 और मशीन की आवश्यकता थी। ऐसे में समाजसेवी कमलेश जैन दायजी ने जुगाड़ के ट्रेक्टर में अपने निजी खर्च से दवाई डलवा कर उस कमी को भी पूरा कर दिया। लोगों ने उनके काम की सराहना भी की है।

कोरोना का डर व लॉकडाउन का असर नहीं आज भी अंचल में, नहीं बरती ऐहतियाद तो संक्रमण की चपेट में आ सकता है जिला

हम इंडियन है और हम कभी नहीं हारते हैं, हम सब मिलकर जरूर जीतेंगे कोरोना से जंग-संदीप शर्मा

जिला मुख्यालय पर इण्डिया मेडिकल पर बिना सोशल डिस्टेंसिंग व बिना मास्क के दवाई खरीदते हुए भीड का एक मंजर।

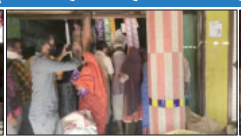

मेघनगर ब्लॉक के मदरानी कि एक किराना दुकान पर इस तरह कि भीड़ जो ग्रामीण अंचल की दुकानों पर आम बात है।

इस तरह से ग्रामीण तीन से चार व्यक्ति बाईक पर सवार होकर आ-जा रहे है।

खवासा चौकी क्षेत्र के ग्राम भामल में तेजाजी मंदिर व आस-पास अपने झुंड के साथ बड़ी संख्या में व्यक्ति लॉकडाउन के बाद भी बैठकर बतियाते रहते है।

माही की गूंज, झाबुआ।

कोरोना वायरस (कोविड-19) से संक्रमित मरीज, 1 दिसंबर को चीन के वुहान में मिला। वही 11 जनवरी को पहली मौत इस संक्रमण से हुई। चीन से निकला यह संक्रमण वायरस, चीन के बाद दूसरा देश थाईलैंड में कोरोना वायरस से संक्रमित पहली महिला का केस 13 जनवरी को सामने आया। वहीं 23 जनवरी को चीन से वुहान को अलग कर दिया और यह महामारी का संक्रमण धीरे-धीरे 30 जनवरी तक यानी एक माह के अंदर ही भारत सहित 18 देशों में कोरोना वायरस का यह संक्रमण पहुंच गया और 30 जनवरी को केरल में वुहान यूनिवर्सिटी का छात्र इस संक्रमण से संक्रमित पहला मरीज मिला । आज यह संक्रमण विश्वव्यापी समस्या बन चुका है। तो वही विश्व में स्वास्थ्य सुविधा में अव्वल अमेरीका व इटली के स्पेन, जर्मनी आदि देशों में ऐसी स्थिति बन गई है कि वहां इस कोरोना संक्रमण से मरने वालों की संख्या इतनी हो गई की अंतिम संस्कार के लिए भी जगह कम पड़ गई। कारण लापरवाही सोशल डिस्टेंसिंग का नहीं होना रहा है। कोरोना संक्रमण का इलाज मात्र वर्तमान में सोशल डिस्टेंसिंग ही है।

भारत में उक्त संक्रमित मरीज के पौने दो माह बाद केंद्र सरकार व प्रदेश की सरकारें सतर्क हुई और देश के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ सप्ताह की मांग के साथ 1 दिन के जनता कर्फ्यू की अपील की। जनता कर्फ्यू के साथ ही प्रदेश सरकार एवं देश के नाम दूसरे संबोधन में 14 अप्रैल तक लॉक डाउन के निर्देश एवं जनता से सोशल डिस्टेंसिंग (समाजिक दूरी) बनाए रखने एवं बिना किसी अति आवश्यक कार्य के घर से बाहर नहीं निकलने की अपील की। कई आदेश दिन प्रतिदिन लॉकडाउन व शक्ति बरतने हेतु जारी किए। प्रशासनिक अमला विशेष रूप से पुलिस, स्वास्थ्य विभाग के साथ सभी प्रशासनिक अधिकारी कोरोना की जंग से जितने हेतु अपने सार्थक प्रयास कर रहा है, जो सराहनीय है। तो वही मीडिया भी अपनी अहम भूमिका निभाकर शासन व प्रशासन को पूरा सहयोग कर आम लोगों से शासन-प्रशासन के निर्देशों को पालन करने की अपील कर रहे है।

साथ ही कई समाज व संगठन अपने स्थानीय स्तर पर परिस्थितियों से हारे हुए व गरीब परिवारों के साथ हर आम लोगों को इस विकट परिस्थिति में जातिवाद से ऊपर उठकर अपने-अपने हिसाब से सहयोग प्रदान कर रहे हैं। यह सामाजिक सौहार्द भी सिर्फहमारे भारत देश में ही देखा जा सकता है। यह भी तय है कि हम सभी शासन-प्रशासन के निर्देशों का पालन कर, इस कोरोना वायरस के संक्रमण की जंग से हम भारतवासी जीतेंगे ही। जिस किसी के द्वारा भी जानबूझकर शासन के निर्देशों का पालन नहीं किया जा रहा है वहां सख्ती के साथ पेश आना भी आवश्यक हो गया है।

बड़े कस्बों में ही हो रही प्रशासनिक कार्यवाही

बात करें आदिवासी इस बाहुल्य झाबुआ जिले की तो यहां बड़े कस्बों में जहां पुलिस चौकी व पुलिस थाना है। वहां तक ऐहतियात के तौर पर पुलिस व प्रशासनिक कार्यवाही की जा रही है। रोजमर्रा की अति आवश्यक सामग्री हेतु सुबह 10 बजे तक छूट दी गई थी जो लाजमी भी था। परंतु इसमें भी आम लोगों की लापरवाही का आलम यह रहा कि बाजार में एक ही बाईक पर एक ही परिवार के तीन-तीन, चार-चार लोग वह भी बिना मास्क के बैठकर आना व बाजार में हाट जैसी भीड़, बिना सोशल डिस्टेंसिंग के साथ होना, तो वहीं कुछ व्यापारियों को छोड़ किराना, मेडिकल, दूध व सब्जी की दुकानों पर भी बिना सोशल डिस्टेंसिंग व भीड़ का होना इस संक्रमण के संदेह को बढ़ा रहा था।

जिले में पूर्णतः लॉकडाउन ला सकता है सार्थक परिणाम

किसी की भी एक छोटी सी लापरवाही से खुदा न खास्ता एक व्यक्ति भी कोरोना से संक्रमित पाया जाता है तो वह जिले में व्यापक रूप से यह संक्रमण फैल सकता है। जिला प्रशासन ने जिले की वस्तु स्थिति को देखते हुए 1 से 3 अप्रैल तक का पूर्णतः लॉकडाउन का निर्णय सार्थक परिणाम ला सकता है। 3 दिन के लॉकडाउन के निर्देश के बाद भी प्रशासन को इन 13-14 दिन में इस जिले में पूरी ऐहतियात के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। जिले में उपरोक्त कुछ असुविधा के साथ लॉकडाउन का पालन किया जा रहा है परंतु ग्रामीण अंचल में आज भी सोशल डिस्टेंसिंग और लॉक डाउन का अर्थ व कोरोना वायरस का संक्रमण किस तरह से जानलेवा है को अभी तक भी नहीं समझ पा रहे हैं।

ग्रामीण अंचल में हो रही शादियां, हजारों मजदूर लौटे पलायन से

ग्रामीण अंचल में पहले की तरह ही सामूहिक रूप से घूमना, बातें करना व मुख्य मार्ग पर कभी कभार पुलिस के वाहन व सायरन को सुन कर भाग जाते हैं, जो देखा जा रहा है। इतना ही नहीं ग्रामीण अंचल में शादियां भी हो रही है। जिसे भी गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। तो वहीं झाबुआ जिला गुजरात और राजस्थान सीमा के साथ इंदौर, उज्जैन, मालवा से भी जुड़ा हैं। जहां जिले से पलायन कर मजदूर, मजदूरी करने गए हुए थे। राजस्थान के कोटा, भीलवाड़ा, गुजरात के सूरत, अहमदाबाद व मध्यप्रदेश के इंदौर, उज्जैन, मालवा क्षेत्र यहां कोरोना के संक्रमण का कहर भी बड़े रूप से है और इसी स्थान से होकर जिले में लॉकडाउन के बाद गूंज के एक आंकलन अनुसार सवा लाख से अधिक मजदूर पैदल या फिर वाहनों से आए हैं, जिनमें कई मजदूरों की जांच अब तक भी नहीं हो पाई और वे सामान्य स्थिति में ही अपने परिजन एवं गांव वालों के साथ घूम रहे है, वही ये सामग्री खरीदने के नाम पर दुकानों व कस्बों में भी जा रहे हैं। खुदा न खास्ता इनमें से एक भी मरीज कोरोना से संक्रमित पाया जाता है तो तय है जिले में बड़ी महामारी इस संक्रमण से फैल सकती है।

फलियों तक सर्तकता आवश्यक

इसलिए प्रशासन को चाहिए कि किसी भी तरह से गांव-गांव व फलिये-फलिये में जिस तरह से चुनाव के समय अनाउंसमेंट होता है व मतदान हेतु अपील की जाती है, उसी तरह से गांव-गांव व फलिये-फलिये में जाकर अनाउंसमेंट कर एवं समझाइश देकर अपने जीवन को सुरक्षित रखने हेतु लॉकडाउन, होम क्वारंटाइन (अपने घर के अंदर ही रहना) एवं सोशल डिस्टेंसिंग का अर्थ समझाया जाए तथा बाहर से आए हर मजदूर जिनकी जांच नहीं हुई हो उनकी जांच त्वरित की जाए। तो वहीं किसी भी बीमारी से असमय मौत होने पर उसका पीएम करवाया जाए, ताकि किसी कारण से डाक्टर को परिवार द्वारा असल बीमारी व मरीज की तकलीफको नहीं बताया हो और उसकी मौत हो गई हो तो, बीमारी का पुख्ता कारण से प्रशासन अवगत हो सके और इससे संदेह व अफवाहों का दौर भी नहीं रहेगा । प्रशासन को अपनी इस मुहिम को साकार करने हेतु ग्राम पंचायत स्तर पर सभी जवाबदारो के साथ ग्राम सुरक्षा समिति, कोटवाल व जो भी समाज-संगठन के सदस्य कार्य करना चाहते हैं उनका भी सहयोग लेकर कार्य करते हैं तो तय है हम इस कोरोना की जंग को बिना किसी संक्रमण के ही इस जिले में जीतेंगे।

76 हजार मजदूर जिले में आए 8 हजार रवाना

माही की गूंज ने कोरोनावायरस व इसके संक्रमण से बचाव को लेकर पूरे मामले में जिला पंचायत के सीईओ संदीप शर्मा से बात हुई तो गूंज प्रतिनिधि के उपायों को सराहा और गूंज परिवार से कोरोना वायरस से लड़ने के लिए सहयोग की बात की। जिस पर गूंज परिवार ने आश्वस्त किया कि इस लड़ाई में प्रशासन के साथ पूरा गूंज परिवार खड़ा है और जो भी होगा वह हर संभव हमारी लेखनी के साथ आमजन को जागरूक करने के लिए प्रयासरत रहेगा। शर्मा ने बताया लॉकडाउन के बाद सरकारी रिकॉर्ड अनुसार जिले में कुल 76 हजार मजदूर राजस्थान, गुजरात एवं अन्य स्थानों से आए हैं, जिनमें से 68 हजार मजदूर जिले के ही हैं और 8 हजार मजदूर जो जिले के बाहर के थे। वे अपने घर तक पहुंच गए हैं। मजदूरों का स्वास्थ्य परीक्षण भी करवाया गया है। जिले में 39 क्वारंटाइन केंद्र खोले गए हैं। एकमात्र थांदला क्वारंटाइन केंद्र पर 200 मजदूर को रोका गया है, बाकी सभी होम क्वारंटाइन है। अभी एक प्रयोग के साथ जिले के सभी 31 सेक्टर पर पदस्थ अधिकारियों के लिए ड्यूटी निश्चित की है कि, वह लगातार प्रतिदिन ग्राम पंचायत स्तर समन्वय बनाकर सचिव व जीआरएस से बात करें और जो भी लोग बाहर से आए हैं उनका स्थानीय स्तर पर देखरेख होती रहे, उनका रूटीन स्वास्थ्य चेकअप, खाने-पीने की व्यवस्था सुनिश्चित होती रहे और किसी प्रकार के कोई लक्षण या परेशानी देखते हैं तो तत्काल सूचना जिला मुख्यालय पर दी जाए। उक्त कार्य की ही आवश्यकता है जिसे गूंज ने सराहा।

शादी समारोह पर भी होगी कार्यवाही

शर्मा ने कहा, यह सही है कि ग्रामीण अंचल में अभी भी लोगों में जागरूकता नहीं है वर्तमान में कही भी विवाह समारोह हो रहा है तो यह एक तरह से अपराध है, किसी भी स्थिति में कोई भी समुदाय को इकट्ठा होना ही नहीं है। अगर कोई ऐसे आयोजन होते हैं तो सचिव कंट्रोल रूम को सूचना दें, अगर नहीं देते हैं तो उनके विरुद्ध भी कार्यवाही की जाएगी।

वर्तमान में किसी भी मरीज की असमय मौत होती है तो उसका पीएम हो ताकि बीमारी का पता भी चल सके व अफवाहों का दौर भी नहीं रहे? शर्मा ने कहा सही है मैं, सीएचएमओ साहब से चर्चा कर इस व्यवस्था को करवाता हूं।

सुबह 7 से 10 के बीच अति आवश्यक कोई कार्य नहीं होने के बाद भी खवासा में इस तरह से ग्राम के चौराहों पर भीड देखने को मिल रही थी।

भीलवाड़ा व कोटा से पैदल चलकर एमपी सीमा गरोठ तीन दिन में पहुंचे। सीमा से पुलिस ने जांच के बाद बसों व ट्रकों में 28 मार्च को जिले में आए मजदूर।

उज्जैन के 5 स्टेशन आगे से 5 दिन में पैदल चलकर बिना किसी जांच के बोयडी (थांदला) पहुंचे उक्त मजदूर। इसी तरह हजारों मजदूर बडी परेशानियों के साथ हजारों की संख्या में बिना किसी स्वास्थ्य जांच के घर पहुंचे है।

बामनिया में कोरोना के संदिग्ध होने की खबर से मचा हड़कंप

धतुरिया में मिले संदिग्ध को इलाज के लिए पेटलावद में आसुलेशन वार्ड में रखने के लिए रेफर किया।

माही की गूंज, पेटलावद। ग्राम बामनिया में महाराष्ट्र (मुम्बई) से आए एक इंदौर निवासी युवा के बामनिया आने की सूचना पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉ. मनीष द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पेटलावद के लिए रेफर किया गया। इसके लिये एम्बुलेंस 108 के डॉ. रवि शर्मा व पॉयलेट राजेंद्रसिंग धाकड़ द्वारा पेटलावद लाया गया। जहां सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर डॉ. चंदन जैन द्वारा मरीज की स्क्रीनिंग की गई। उन्हें जांच रिपोर्ट नहींआने तक बामनिया में ही सेल्फ होम क्वारेंटाइन के लिए 14 दिन के लिए घर पर रहने को कहा गया। चूंकि महाराष्ट्र में कोरोना के सबसे ज्यादा मामले सामने आ चुके है। ऐसे में महाराष्ट्र से आने की जानकारी मिलने पर नगर में हड़कंप की स्थिति निर्मित हो गई और पूरा प्रशासन मुस्तैद हो गया। फिलहाल युवक को किसी प्रकार के संक्रमण की पुष्टि स्वास्थ्य विभाग कीओर से नहीं की है। बीएमओ एमएल चौपड़ा ने बताया युवक कि जांच कर ली है। फिलहाल कोई बीमारी होने की पुष्टि नही हुई है। फिर भी एहतिहात के लिए अगले 14 दिन के होम क्वारेंटाइन की सलाह दी है। स्वास्थ्य विभाग पूरे मामले पर नजर रखे हुए है।

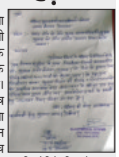

एक को लिया निगरानी में

कोरोना वाइरस के चपेट में आने के बीच पेटलावद ब्लॉक के धतुरिया ग्राम पंचायत के पीपलीपाडा ग्राम में एक ड्रायवर को लेकर अफवाह फैला दी गई कि यह हैदराबाद जा कर आया है। साथ ही कोरोना पॉजिटिव मरीजों के साथ रहा है। अफवाह फैलने के बाद बीएमओ डॉ एमएल चौपडा ने तुरंत मरीज को झकनावदा अस्पताल में जांच की। किंतु उसमें कोरोना के कोई भी प्रभाव नहीं देखे गए। इसके बाद ड्रायवर की ट्रेवल हिस्ट्री की जांच की गई। यह जिन लोगों के साथ गया था, वे पूरी तरह स्वस्थ्य है। किंतु सुरक्षा की दृष्टि से ड्रायवर को पेटलावद अस्पताल में चिकित्सकों की निगरानी में ही रखा जा रहा है। बड़ी मात्रा में लोगों के बाहर से मजदूरी करके लौटने के बाद कोरोना के संदिग्धों के मिलने की अफवाह लगातार मिल रही है। जिससे क्षेत्र में भय का माहौल हैं। वही प्रशासन किसी भी अफवाह पर ध्यान नहीं देने और लॉक डाउन में रहने की अपील कर रहा है।

एक किमी दूर स्थित गांव से बल्लियां गाढ़कर ला रहे बिजली

ग्राम खालसा में आज भी ग्रामीण जूझ रहे बिजली समस्या से

माही की गूंज, खच्चरटोडी। विकास साबलिया

मेघनगर तहसील की ग्राम पंचायत खच्चरटोडी का गावं खालसा। यह गांव जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर है। एक हजार की आबादी वाला यह गांव आज भी बिजली समस्या से जूझ रहा है। वसुनिया फलिये में स्थित बिजली के खम्भों से दूसरे सभी फलियों के ग्रामीण खुद वायर टांगकर एक किलोमीटर तक लकड़ी की बल्लियां गाड़कर अपने घरों तक बिजली ले जा रहे हैं। लेकिन फिर भी निराशा ही हाथ लगती हैं। ट्रांसफार्मर नहीं होने के कारण वोल्टेज की कमी आ रही है। तो कभी बिजली की ही सप्लाई नहीं की जाती हैं। गांव के कई घर ऐसे हैं, जहां आज तक आजादी के बाद भी बिजली नहीं पहुच पाई है। मोबाइल चार्ज कराने के लिए इन ग्रामीणों को दूसरों के घर जाना पड़ता है।

ग्रामीणों का कहना है कि 20 वर्ष पूर्व गांव में बिजली के लिए शासन ने बिजली के पोल लगाए थे। इसमें तार भी लगाए थे। इसमें आशा की किरण दिखी थी लेकिन आज तक इनमें बिजली की सप्लाई नहीं की गई है। वसुनिया फलिये में बिजली आती है। इस फलिये में एक किलोमीटर दूर स्थित नवापाडा धन्ना से 11केवी लाइन से बिजली आ रही है। लम्बी दूरी होने के कारण पहले से ही वॉल्टेज कम हो जाता है। यही से हम बिजली खम्भों पर वायर टांगकर लकड़ी की बल्लियां गाड़कर अपने घरों तक लाइट लाते है। लेकिन वॉल्टेज कम होने के कारण पंखा व कंई उपकरण ठीक से नहीं चल पाते है। फिर भी बिजली विभाग बिजली के बिल भेज देता है।

लाईन हो गई पुरानी

गांव के मात्र एक वसुनिया फलिया में बिजली लाइन है, लेकिन यह लाईन काफी पुरानी हो गई है। कई बार तार टूट गए है। जिससे हादसे की संभावना बनी रहती है। काफी समय पहले यहां बिजली का तार टूट गए थे, जिसके कारण भोवन पिता झितरा देवता का घास चर रहे बैल की मृत्यु हो गई थी। तार टूटने से ग्रामीणों की फसल जलने का भी डर रहता है।

इन घरों में अभी तक लाईट नहीं

लेविन पिता रुपिन कटारा, झेरु कटारा, रमेश पिता जामुडा, जतन रालु कटारा, हेन्ड्री कटारा, बदिया जतन, नारफेट पीटर आदि ग्रामीणों के घरों तक आज तक बिजली नहीं पहुंची है।

जनप्रतिनिधियों ने किए थे वादे

ग्रामीणों ने बताया की जब चुनाव होते है तो गांव में जनप्रतिनिधि ओर राजनितिक पार्टियों के नेता आते है। जब उन्हे समस्या बताते है तो वे हर बार बिजली देने का वादा करते हैं। लेकिन आज तक वादा पुरा नही किया गया।

कई बार आवेदन दिए

ग्रामीणों ने कई बार इस समस्या को जनप्रतिनिधियों से लेकर बिजली विभाग के उच्च अधिकारियों को गांव की बिजली समस्या से अवगत कराया, लेकिन आज तक समस्या का समाधान नहीं किया गया। आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में भी आवेदन दिया था, लेकिन अभी तक समस्या का समास्या का समस्या का समाधान नहीं किया गया हैं।

सौभाग्य योजना की भी खुली पोल

सौभाग्य योजना के तहत सरकार हर दूरस्थ गांव में बिजली पहुंचाने का दावा करती है। लेकिन खालसा गांव में ग्रामीणों की आप बीती सुनकर सौभाग्य योजना को लेकर सरकार जो दांवों पोल खुल गई है।

हम प्राथमिकता से हल करेंगे

आपके द्वारा मुझे बिजली समस्या का पता चला है। खालसा गांव की समस्या को हल करना हमारी प्राथमिकता होगी। नया अलाउटमेंट आने पर उस गांव की बिजली की समस्या का हल किया जाएगा। ताकि वहां बिजली नियमित रुप से ग्रामीणों को मिल सकें।

राजूसिहं बघेल, कनिष्ठ यंत्री, मेघनगर

उल्टी-दस्त से बच्चे की मौत, गूंज की समझाइश के बाद हुआ पीएम

माही की गूंज, खवासा।

रविवार को उल्टी-दस्त हुई और सोमवार को 9 वर्षीय मासूम बालक की मौत हो गई। भामल ग्राम पंचायत के ग्राम रूपापाड़ा का निवासी सुरतान सिंगाड़ का 9 वर्षीय पुत्र नारायण उर्फ राहुल को उल्टी-दस्त होने पर सोमवार को खवासा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सुबह में लाया गया। परिजन ने एक दिन पूर्व ही बच्चे को उल्टी-दस्त होना बताया। डॉक्टर ने उल्टी-दस्त का इलाज किया और परिजन मेडिसिन लेकर घर आ गए। परिजनों अनुसार बच्चे ने दिन में खाना भी खाया और दवाई भी ली, लेकिन शाम को ही तबीयत ज्यादा खराब होने पर 108 को सूचना कर बच्चे को पेटलावद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाया जा रहा था कि रास्ते में बामनिया के समीप ही बच्चे की मौत हो गई। बच्चे की मौत के बाद बिना पोस्ट मार्टम के ही 108 वापसी मृत बच्चे को रुपापाड़ा छोड़कर चली गई। गूंज को पता चलने पर परिजनों को समझाइश के साथ कहा कि, बच्चे का पीएम करवाए ताकि असल बीमारी का पता चल सके कि बच्चे की मौत आखिर किस बीमारी से हुई। जिस पर मंगलवार को सुबह परिजन बच्चे के शव को लेकर खवासा आए और पोस्टमार्टम करने के बाद अंतिम संस्कार किया गया।

खवासा स्वास्थ्य केंद्र के डॉ. गुर्जर ने गूंज को बताया कि, परिजन ने एक दिन पूर्व ही उल्टी-दस्त होना बताया और बच्चे की ऐसी कोई क्रिटिकल स्थिति भी नहीं थी कि उसकी मौत हो जाए। बच्चे की मौत अचानक कैसे हुई यह विचारणीय है। बच्चे का पीएम परिजनों के कहने पर किया गया है। मौत का कारण जांच रिपोर्ट आने के बाद ही पता चलेगा।

विदेश से आए 19 व्यक्तियों की स्वास्थ्य विभाग ने जांच की

माही की गूंज, झाबुआ। रविवार को स्वास्थ्य विभाग को विदेश से आए 19 व्यक्तियों की लिस्ट प्राप्त हुई। सूची प्राप्त होते ही स्वास्थ्य विभाग का अमला पूरे शहर में लगातार घूमते हुए सभी संबंधित 19 व्यक्तियों की जांच करने पहुंचा। स्वास्थ्य विभाग से जांच टीम डॉ निसार खान पठान, जितेंद्र बघेल आईडीएसपी कंसलटेंट व सुभाष आरबीएसके मैनेजर द्वारा उनके घर जाकर स्वास्थ्य की जानकारी लेकर समझाइश दी कि घर में रहे और खुद को आइसोलेट करके रखें तथा सोशल डिस्टेंस बना कर रखें। यह जानकारी मुख्य चिकित्सा एव स्वास्थ्य अधिकारी डॉ बीएस बारिया ने दी।

लॉकडाउन में पुलिस ने की चालानी कार्यवाही

माही की गूंज, खवासा। 22 मार्च से 31 मार्च तक पिछले माह में लॉकडाउन के बाद भी लोग लापरवाही पूर्वक बाईक से बिना किसी काम के घर बाजार में आते है। बाईक पर तीन व चार एक ही परिवार के लोग रोजमर्रा की अति आवश्यक सामग्री, दवाई व इलाज करवाने के बहाने आने वाले साथ ही पुलिस के वाहन को देख भागने वाले दो पहियां वाहन के 60 व्यक्तियों के विरुद्ध चालानी कार्यवाही की। इसमें करीब 18 हजार रुपए की वसूली की गई। खवासा पुलिस ने अपने स्तर पर लॉकडाउन के आदेशों का पालन करवाने हेतु अपनी अहम भूमिका निभा रही है, जिसे आमजन जो इस लॉकडाउन का पूर्णतः से समर्थन कर रहे हैं और अपनी जान की अहमियत समझ रहे हैं वह हर व्यक्ति पुलिस की ओर की जा रही शक्ति और उसकी कार्यप्रणाली की प्रशंसा कीं जा रही है।

इंदौर-भोपाल में फंसे विद्यार्थियों के लिए डॉ. विक्रांत भूरिया की पहल रंग लाई

4 बसों से 200 से अधिक विद्यार्थियों को गंतव्य तक पहुंचाया

माही की गूंज, झाबुआ।

कांग्रेसजनों द्वारा सभी विद्यार्थियों को बिस्कीट के पैकेट वितरित कर घरों के लिए किया रवाना।

पूर्व केंद्रीय मंत्री, पूर्व सांसद तथा झाबुआ विधायक कांतिलाल भूरिया के पुत्र जिला युवक कांग्रेस अध्यक्ष एवं विधायक प्रतिनिधि डॉ. विक्रांत भूरिया मप्र के इंदौर एवं भोपाल में लॉक डाउन के दौरान शासन-प्रशासन के सख्त आदेशों के बीच फंसे झाबुआ एवं आलीराजपुर जिले के कई छात्र-छात्राओं के लिए अब तक 4 निजी बसों की व्यवस्था कर उन्हें सुरक्षित और सावधानी के साथ घर पहुंचाया गया है। उनके इस कार्य में पूर्ण सहयोग जिले के कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं द्वारा भी प्रदान किया गया।

इन दिनों नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) से बचाव हेतु संपूर्ण देश में लॉक डाउन किया गया है। इसी बीच मप्र के प्रमुख शहर इंदौर एवं भोपाल में कोरोना वायरस के संक्रमित मरीज अधिक आने से यहां शासन-प्रशासन द्वारा सख्ती से लॉक डाउन का लोगों से पालन करवाया जा रहा है। इंदौर और भोपाल में वर्तमान में झाबुआ और आलीराजपुर जिले के कई छात्र-छात्राओं के साथ नौकरी-पेशा करने वाले लोग भी बुरी तरह से फंसे हुए है। प्रशासन की अत्यधिक सख्ती के कारण एवं बस-रेल्वे परिवहन सेवा पूरी तरह से ठप्प होने से वह अपने घर वापस नहीं लौट पा रहे है। उन्हें इंदौर एवं भोपाल में रहने के दौरान कई तरह की तकलीफों का सामना करना पड़ रहा है।

छात्र-छात्राओं ने डॉ. भूरिया को बताई अपनी समस्या

इंदौर और भोपाल में लॉक डाउन के दौरान अत्यधिक समस्याओं से जूझ रहे कई छात्र-छात्राओं द्वारा लगातार झाबुआ एवं अलीराजपुर जिले में अपने परिवार के पास लौटने के लिए इस समस्या से डॉ. विक्रांत भूरिया से मोबाइल पर चर्चा की गई। जिस पर डॉ. भूरिया ने ऐसे विद्यार्थियों एवं नौकरी पेशा लोगों को झाबुआ एवं आलीराजपुर अपने घरों तक पहुंचाने के लिए लगातार प्रायवेट बसों की व्यवस्था अपने निजी व्यय से करते हुए इन्हें अपने घरों तक सुरक्षित और सावधानी के साथ पहुंचाने का कार्य किया गया है।

भूरिया के अथक प्रयासों से अब तक चार बसों की व्यवस्था की जा चुकी है, जिनके द्वारा इंदौर एवं भोपाल के प्रशासन और पुलिस से समन्वय स्थापित उन्हें सुरक्षित और सावधानीपूर्वक लाने का कार्य किया जा चुका है। चार बसों के माध्यम से करीब 200 से अधिक छात्र-छात्राओं और अन्य लोगों को डॉ. भूरिया झाबुआ और आलीराजपुर में लाकर उन्हें घर तक पहुंचाने की समुचित व्यवस्था करवा चुके है।

जिला चिकित्सालय आए 50 छात्र-छात्राएं

डॉ. विक्रांत भूरिया ने रविवार शाम को एक निजी बस की व्यवस्था कर उसे इंदौर भेजकर करीब 50 छात्र-छात्राओं को झाबुआ लाने का कार्य करवाया। रात करीब 10.30 बजे बस से जिला चिकित्सालय झाबुआ यह छात्र-छात्राएं और अन्य लोग यहां पहुंचे। जहां जिला चिकित्सालय के आरएमओ डॉ. सावनसिंह चौहान के नेतृत्व में डॉक्टरों के टीम ने इन सभी विद्यार्थियों का चेकअप किया। सभी की थर्मल स्केनिंग से जांच की गई। बाद सभी को बिस्किट के पैकेट का वितरण एवं उन्हें यहां से गंतव्य स्थल तक पहुंचाने की व्यवस्था प्राथमिकतापूर्वक युवा कांग्रेस नेता आशीष भूरिया, गौरव सक्सेना, पार्षद रशीद कुरैशी, हेमेन्द्र बबलू कटारा, जनपद सदस्य मथियास भूरिया, देवेन्द्र प्रसाद अग्निहोत्री बंटू भैया, आलोक भट्ट, हर्ष जैन आदि द्वारा की गई।

मुश्किल समय में जरूरतमंदों की मदद को सामने आए कोरोना वीर

गौतम ग्रुप, अयोध्या फाउंडेशन सहित कई लोगों की मदद

माही की गूंज, पेटलावद। कोरोना वाइरस से फेल रही महामारी से पूरे देश की अर्थ व्यवस्था को उथल पुथल कर दिया। इस गंभीर परिस्थिति में कई लोगों के खाने तक के लाले पड़ गए। कई दानदाता इनकी व्यवस्था के लिए मदद के हाथ बड़ा रहे हैं। देश में आ इस मुसीबत के समय गरीबों की मदद के लिए आगे आए इन मददगारों ने मिसाल पेश की है। ऐसे समय में नगर में सेवा का दूसरा नाम बन चुके गौतम ग्रुप के संचालन गौतम गरीब जनों और जरूरत मंदों के लिए दिल खोल कर आगे आए, न केवल नगर के जरूरतमंदों बल्कि अन्य राज्यों से मजदूरी करके के लिए साधनों के अभाव में पैदल लौट रहे मजदूरों के खाने पीने और जाने तक व्यवस्था करने में जुट गए है। गौतम स्वयं भी सेवा कर रहे हैं और दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं। अब तक सैकड़ों परिवारों को निःशुल्क राशन दे चुके हैं और भी आवश्यकता पड़ने गौतम दोनों हाथों से सेवा के लिए तैयार हैं।

वहीं सेवा कार्य मे अग्रणी रहने वाले शिक्षक भरत चौधरी भी लॉक डाउन की विकट परिस्थितियों में अपनी माता की अयोध्या फाउंडेशन द्वारा सैकड़ों गरीब परिवारों को राशन व भोजन की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही अन्य राज्यों से नगर से होकर गुजरने वाले जरूरतमंद लोगों को भोजन वितरित किया गया। लोगो को कोरोना संक्रमण के बारे में जागरूक करते हुए डिटोल साबुन,मास्क भी वितरित किये जा रहे हैं। नगर की सुरक्षा में लगे पुलिस महकमे को भी चाय बिस्किट देकर सेवा की जा रही हैं। हमेशा अयोध्या फाउंडेशन द्वारा भरत चौधरी के नेतृत्व मे सहायता के कदम उठाये जाते रहे है। शिक्षक चौधरी ने खुद भोजन बना कर उसके पैकेट बना कर कई जरूरत मंदों तक पहुंचा कर उनकी सतत मदद कर रहे हैं। उनसे प्रेरित होकर अन्य लोग भी मदद को आ रहे हैं। भरत चौधरी अब तक अपने निजी खर्च से 5000 हजार मास्क वितरित कर चुके है और उनकी सेवा सतत जारी है।

ऐसे मुश्किल समय मे पेटलावद शहर मे दवाई की निरूशुल्क व्यवस्था के लिये महावीर जैन समिति पेटलावद ने समाज की सेवा का यह दायित्व हाथ में लिया और निश्चय किया कि कोई हमारे शहर में दवाई के अभाव में दम न तोड़े। सोशल मीडिया के माध्यम से ऐसे लोगों को दवाइयां उपलब्ध करा रहे हैं। इसी तरह लाइंस क्लब सहित कई समाज सेवी संस्था और कई सेवा भावी लोग अपनी ओर से इस मुश्किल दौर में जरूरतमंदों के निस्वार्थ रूप से सामने आ रहे है। एक के बाद लोग जिस तरह से मदद के लिए आगे आ रहे है। देश की एक और तस्वीर सामने आई है जिसे हर कोई सराह रहा है।

श्याम परिवार ने जरूरतमंद लोगों को बांटे भोजन के पैकेट

माही की गूंज, खच्चरटोडी। सकंट की इस घंडी में जरुरतमंदों की मदद के लिए श्याम परिवार भी आगे आया है। लॉक डाउन के कारण यातायात परिवहन बंद होने से मजदूर भूखे प्यासे पैदल चलकर अपने घर की ओर जा रहे है। इसी के चलते इस संगठन के युवाओं ने गुजरात से आ रहे मजदूरों के लिए भोजन के पैकेट तैयार कर गुजरात बॉर्डर (पिटोल) में जाकर बांटे। इस सेवा कार्य में गांव के किशोर कछोटिया, भेरू दादा, दीपक जैन, हिंमाशु साबलिया, अजय घोती, धर्मेंद्र मेरावत, राहुल ,सेलू ,विकास कछोटिया एवं श्याम परिवार रंभापुर के युवा सहयोग दे रहे हैं।

चैत्र नवरात्रि में महाकालिका का कालरात्रि के रूप में हुआ श्रृंगार

माही की गूंज, झाबुआ।

शहर में नौ दिवसीय चौत्र नवरात्रि पर्व 25 मार्च से चल रहा है। जिसमें 7वें दिन मां आध्य शक्ति को कालरात्रि के रूप में पूजा गया। इस दिन मंदिरों में माताजी का कालरात्रि के रूप में श्रृंगार हुआ। नवरात्रि में लोग अपने घरों पर ही रहकर माताजी की पूजा-अर्चना, आराधना, भक्ति, व्रत, उपवास आदि कर रहे है। मंदिरों में प्रतिदिन पूजन-आरती हो रहीं है।

शहर के नेहरू मार्ग स्थित प्राचीन दक्षिण मुखी महाकालिका माता मंदिर में चौत्र नवरात्रि में प्रतिदिन माताजी का अलग-अलग रूपों में श्रृंगार मंदिर के व्यवस्थापक कांतिलाल नानावटी एवं माताजी को चोला मंदिर के पुजारी राजेन्द्रपुरी गोस्वामी चढ़ा रहे है। प्रतिदिन अलसुबह काकड़ आरती के साथ शाम को भी आरती हो रहीं है। शहर के कॉलेज मार्ग स्थित अंबे माता मंदिर पर नौ दिनों तक प्रतिदिन सुबह एवं शाम को पूजन, आरती एवं श्रृंगार सेवक पं. विजय शर्मा द्वारा किया जा रहा है।

शहर के राजगढ़ नाका कृषि विभाग के पीछे बालाजी धाम मातंगी धाम पर सुबह एवं शाम को आरती, पूजन के साथ यहां भी माताजी का अलग-अलग रूपों में श्रृंगार हो रहा है। मंदिर में प्रतिदिन मातंगी पारमार्थिक ट्रस्ट के अध्यक्ष राकेश त्रिवेदी, धर्मेन्द्र करण जाकर नित्य सेवा भाव कर रहे है। इसके साथ ही सतत दुर्गा सप्तशति पाठ करने का लाभ श्री शर्मा ले रहे है।

पार्षद ने दो माह का वेतन मुख्यमंत्री राहत कोष में करवाया जमा

माही की गूंज, झाबुआ। शहर के वार्ड क्र. 1 के युवा एवं जागरूक पार्षद पपीश पानेरी ने कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण से मप्र में जूझ रहे व्यक्तियों की मदद के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया है। जिसमें उन्होंने अपने दो महीने का वेतन कोरोना मरीजों की मदद के लिए डोनेट किया है। जिसका चेक बनाकर उन्होंने 31 मार्च, मंगलवार दोपहर नगरपालिका सीएमओ को प्रदान किया। यह सहायता राशि मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा होगी।

सप्ताह में दो दिन मिलेगा पानी, ग्रामीणों की जद्दोजहद जारी

माही की गूंज ,बामनिया।

बामनिया से लगे चित्तोदिरुंडी फलिये के रहवासी भारी किल्लत से जूझ रहे थे। कई बार शिकायत करने के बाद भी ग्राम पंचायत ग्रामीणों की समस्या पर ध्यान नहीं दे रही थी। कोरोना संक्रमण के चलते पूरे देश मे लॉक डाउन की स्थिति बनी हुई है। ऐसे में यहां के ग्रामीणों को फलिये से लगभग एक किलोमीटर दूर पानी की व्यवस्था के लिए निजी बोरिंग पर पानी के लिए जाना पड़ रहता। फलिये के ग्रामीणों ने गूंज से समस्या उठाने की गुहार लगाई जिसके बाद गूंज ने ग्रामीणों की समस्या को प्रमुखता से उठाया। ग्राम पंचायत ने फलिये तक तक बिछी हुई नल जल योजना को शुरू किया। ग्राम पंचायत ने फिलहाल फलिये में घरों पर कनेक्शन नहीं दिए है, लेकिन दो कनेक्शन पूरे फलिये के लिए किए गए थे। खबर के बाद फिलहाल शुरू जिसके सप्ताह में दो दिन पानी दिया जायेगा। जिसके बाद फलिये वासियों ने थोड़ी राहत की सांस जरूर ली हैं, लेकिन फलिये की जनसंख्या के हिसाब से उक्त व्यवस्था से पूर्ति होना संभव नहीं है। फलिये निवासी यशवंत डामर और पंच गुमानसिंह ने बताया कि चित्तोदिरुंडी में कम से कम सौ परिवार रहते हैं। जिनको पानी देने के लिए केवल दो नलों से हप्ते में दो दिन पानी पंचायत देगी। जिससे पूरे फलिये में पूर्ति हो पानी की सम्भव नहीं है, लेकिन पानी मिलने से कुछ तो राहत जरूर मिलेगी। वार्ड पंच ने ग्राम पंचायत से मांग की है कि फलिये में रखी सिंटेक्स की टंकी को भरने और फलिये में अलग-अलग स्थान पर दो टंकी रखी जाए और फलिये के बन्द पड़े तीनों हैंडपंप को शुरू करने की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे फलिये वासियों को लंबे समय से चले आ रहे जल संकट से मुक्ति मिल सके। ग्रामीणों का कहना है कि ग्राम पंचायत ने व्यवस्था सुधारने ने की शुरुआत की है, तो उम्मीद हैं कि गर्मी के पूर्व पंचायत हमारी जल व्यवस्था को पूर्ण रूप से सुचारू कर देगी।

संपादकीय

पूर्ण बंदी के मकसद पर पानी फेरते प्रवासी मजदूर

कोरोना वायरस की प्रकृति जिस तेजी से फैलने की है, उससे साफ है कि इसकी चपेट में आने वाला एक व्यक्ति बहुत ही आसानी से हजारों लोगों तक यह संक्रमण फैला सकता है। लाखों लोगों का इस तरह पलायन पूर्ण बंदी के मकसद पर पानी फेर सकता है।

कोरोना महामारी से निपटने के लिए देशव्यापी पूर्ण बंदी जैसे जरूरी कदम से निश्चित ही आमजन को भारी मुश्किलों का सामना तो करना पड़ रहा है, लेकिन इसमें कोई संशय नहीं होना चाहिए कि आज हम जिस गंभीर संकट से रू-ब-रू हो रहे हैं, उसमें ऐसा करना अपरिहार्य हो गया था। भारत के अलग-अलग हिस्सों में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या रोजाना जिस तरह बढ़ रही है, वह चिंताजनक है। जिस तरह से राजधानी दिल्ली सहित अन्य राज्यों में पलायन करने वालों की भीड़ दिखी, वह एक गंभीर खतरे की ओर संकेत कर रही है। अगर इस भीड़ से यह महामारी देश के दूसरे हिस्सों में फैल गई तो क्या होगा! इस वक्त लोगों को यह समझने की जरूरत है कि वे जहां हैं, वहीं रुकें, ताकि कोरोना संक्रमण के फैलाव को रोका जा सके।

लाखों लोगों का इस तरह पलायन पूर्ण बंदी के मकसद पर पानी फेर सकता है। इसीलिए केंद्र सरकार को सख्ती दिखाते हुए सभी राज्यों से यह कहने को मजबूर होना पड़ा है कि पूर्ण बंदी के मकसद को हासिल करने के लिए कड़े से कड़े कदम उठाए जाएं और जो जहां है, उसे वहीं रखा जाए और जांच की जाए।

लोगों के पलायन को रोकने के लिए राज्यों ने अपने स्तर पर जो कदम उठाए हैं, वे सराहनीय हैं। पंजाब सरकार ने ईंट-भट्ठे सहित कुछ उद्योगों को काम शुरू करने की इजाजत दी है, ताकि मजदूरों को वहीं रोका जा सके। दिल्ली सरकार ने ऐसे सभी कामगारों और मजदूरों को दिल्ली में ही रोकने के लिए उनके रहने-खाने का बंदोबस्त किया है, जो लोग किराया दे पाने में अक्षम हैं, उनके घर का किराया दिल्ली सरकार खुद देने की बात कही है।

सरकार ने भी बाहर से आए मजदूरों के लिए सभी सुविधाएं मुहैया कराई हैं। इन्हें अलग रख कर इनकी जांच भी कराई जाएगी। बड़ी समस्या यह है कि यह तबका कोरोना फैलने के खतरों को लेकर जागरूक नहीं है। पलायन रोकने को लेकर केंद्र सरकार अब सख्त रुख अपना रही है। राज्यों को भी सख्ती बरतने को कहा गया है। इसलिए राज्य सरकारों ने लोगों को वहीं रोकने का फैसला किया है, जहां वे हैं। उन्हें अब पूर्ण बंदी तक वहीं रोका जाएगा और हरेक की जांच की जाएगी। हालांकि यह बहुत ही मुश्किल कवायद है, लेकिन इसे करना जरूरी है।

सरकार के साथ ही चिकित्सा विशेषज्ञ सब इस बात पर शुरू से जोर देते रहे हैं कि जांच और उपचार से पहले इस महामारी से बचाव का पहला उपाय यही है कि लोग दूर रहें। ऐसे में अगर लाखों की संख्या में लोग देश में एक हिस्से से दूसरे में चले गए, तो यह महामारी गांवों में तेजी से फैल जाएगी और इससे निपटना एक तरह से असंभव हो जाएगा। गांवों में कोरोना की जांच तो दूर, सामान्य बीमारियों के इलाज तक के लिए सुविधाएं नहीं होती और गंभीर स्थिति में लोग शहरों की ओर ही भागते हैं। पूर्ण बंदी जैसा कदम तकलीफदेह जरूर हो सकता है, लेकिन कुछ समय की यह तकलीफ बड़ी संख्या में लोगों को मौत के मुंह में जाने से बचा सकती है, इस बात को समझने की जरूरत है।

शिवराज के सिर चुनौतियों का ताज

ओमप्रकाश मेहता
लेखक

शिवराज सिंह चौहान का चौथी बार राजतिलक ऐसे समय हुआ है, जब यह प्रदेश कई गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है, कुछ प्राकृतिक गंभीर चुनौतिया है तो कुछ मानव निर्मित । सबसे बडी और अहम चुनौती जहॉ कोरोना वायरस से निपटने की है, तो कुछ प्रशासिनक व राजनैतिक, यहॉ अहम सवाल यह है कि प्रशासनिक व राजनैतिक चुनौतियो से तो येन-केन-प्रकरेण निपटा जा सकता है, किन्तु कोरोना वायरस संक्रमण जैसी विश्वव्यापी महामारी से निपटना बहुत ही टेढी खीर है, निपटना तो दूर की बात प्रधानमंत्री ने जो तीन सप्ताह की तालाबंदी की है उसे ही सफलतापूर्वक लागू करवाना मुश्किल प्रतीत हो रहा है, क्योकि आजादी के पिछ्ले सत्तर सालों मे देश-प्रदेश की जनता ने आजादी के अर्थ ही बदल दिए है और अब यह आजादी स्वेच्छाचारिता का पर्याय बन चुकी है, इसलिए अब बिना डराए धमकाये सरकार कोई भी नियम या प्रतिबंध लागू नही कर सकती, लॉक डाउन के साथ भी यही हो रहा है, बिना सख्ती के यह तालाबंदी व आम व खास को घरों में कैद करके रखना मुश्किल ही है। इसलिए मध्यप्रदेश के संदर्भ में शिवराजजी के सामने यह सबसे बडी चुनौती है।

यह तो हुई प्राथमिक अहम चुनौती, अब इसके बाद यदि हम प्रशासनिक चुनौतियों पर द्रष्टिपात करें तो सबसे पहली चुनौती अफसरशाही है, जो अब शुद्व रूप से राजनीतिक दलों के साथ विभाजित हो चुकी है, इसलिए पूर्ववर्ती कांग्रेसी सरकार के खास-सिपह-सालार माने जाने वाले शीर्ष अफसरो से निपटने की चुनौती है, जिससे मुख्य सचिव बदलकर निपटने का श्री गणेश किया जा चुका है, इसके अलावा प्रदेश के सामने सबसे बडी चुनौती आर्थिक संकट है, प्रदेश पर तीन लाख करोड़ का कर्ज है, जो शिवराजजी के पूर्वकाल से चला आ रहा है इसके अलावा किसानों की समस्या? व कर्मचारियों के भत्तेवृद्धि भी आर्थिक संकट से जुडी हुई है। फिर इस सरकार की बदला-बदली में भी सबसे अहम समस्या नए साल का बजट पारित कराने की थी, जिससे अब अध्यादेश के अस्त्र से निपटने की तैयारी है। वर्ना प्रदेश के कर्मचारियों को अगले एक अप्रेल को वेतन भी नही बंट पाता ? वित्तीय संकट के अलावा भी अनैक प्रशासनिक संकट है जिससे निपटने के रास्ते खोजे जा रहे है।

अब यदि हम शिवराज जी की राजनीतिक चुनौतियों की बात करें तो वे भी कम नही है, सबसे बडी चुनौती मंत्रिमंडल का गठन है, नई सरकार के मुख्य सूत्रधार ज्योतिरादित्य सिंधिया के सभी समर्थक आधा दर्जन पूर्व मंत्री पुनरू मंत्री पद चाहते है, वही भाजपा में भी इस अहम मसले को लेकर काफी असंतोष व हडबडी की स्थिति देखी जा रही है, भाजपा के असंतुष्ट गुट का कहना है कि वे समर्पित कार्यकर्ता जो पिछ्ले कई दशकों से निष्ठापूर्वक पार्टी के साथ सेवाभाव से जुडे हुए है उनकी उपेक्षा करके 'अवसरवादियों' को मंत्री पद नवाजने की तैयारियॉ चल रही है। इसलिए पार्टी में काफी असंतोष देखा जा रहा है, जो लोग हाल ही के राजनीतिक घटनाक्रम में स्वंय मुख्यमंत्री पद की दौड में रहे वे भी अब सक्रीय हो गए है, ऐसे में अपनी पार्टी के असंतुष्ठो को संतुष्ट करना भी एक बडी चुनौती है।

इस तरह कुल मिलाकर शिवराज जी के आसपास इन दिनों सिर्फ और सिर्फ चुनौतियॉ ही है, और यही उनके लिए 'अग्निपरीक्षा' का समय है, वे काफी अनुभवी व सुलझे हुए नेता है, इसलिए सभी की यह अपेक्षा है कि वे इनसे बखूबी पार पा लेगें।

पलायन की भीड़ के बीच बेचैनी और अभाव का बोध क्यों?

पलायन की भीड़ लॉकडाउन का मकसद ध्वस्त कर सकती है। यह भीड़ कोरोना वायरस को और हवा दे सकती है। यदि यह वायरस पूरी तरह हमारे गांवों तक फैल गया, तो उसके बाद के भयावह प्रलय की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसी चेतावनी प्रधानमंत्री, कई मुख्यमंत्रियों और प्रख्यात चिकित्सकों ने कई बार दोहराई है। उसके बावजूद देश की कई प्रमुख सड़कों और राजमार्गों पर भीड़ पैदल चल रही है। गठरी उठाए, छोटे-छोटे बच्चों को पीठ या कंधों पर बिठाए, युवा और बूढ़े लाचार, बेबस चेहरे टीवी चौनलों पर लगातार दिखाए जा रहे हैं। अचानक देश का एक तबका बेरोजगार हो गया है, उसकी जेबें खाली हो गई हैं और वह भूखमरी के कगार पर है। आश्चर्य है कि देश में भुखमरी के कोई भी आसार नहीं हैं। इस बार अनुमान है कि 847 लाख टन के करीब खाद्यान्न की पैदावार होगी। दालें भी करीब 25 लाख टन पैदा हो सकती हैं और चीनी का उत्पादन भी करीब 40 लाख टन संभावित माना जा रहा है। भूखमरी के आसार नहीं हैं, तो राजमार्गों पर पैदल चल रही भीड़ भूखी क्यों है? कई मुख्यमंत्रियों ने कई घोषणाएं की हैं, फंड तैयार किए हैं और राहत राशि भी दे रहे हैं। फिर इस भीड़ के भीतर बेचौनी और अभाव के बोध क्यों हैं? यदि यही असल भारत की तस्वीर है, तो हम किस भारत में जी रहे हैं? कौन विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनने के सपने देख रहा है? किसने बनाया है ऐसा हिंदोस्तान3? चमकते-दमकते भारत के नीचे घनघोर अंधेरा है! दरअसल ये तस्वीरें सामाजिक-आर्थिक विभाजन का आभास कराती हैं। इस भीड़ ने न तो प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान को समझा या आत्मसात् किया है, न ही मुख्यमंत्रियों की अपील पर यकीन किया है और न ही कोरोना सरीखी महामारी को गंभीरता से लिया है। यह भीड़ भी हिंदोस्तान है। प्रधानमंत्री और सरकारें जरूर जानती होंगी कि आज भी करीब 27 करोड़ भारतीय 'गरीबी रेखा के नीचे' हैं। करीब 19 करोड़ तो भूखे ही सोने को अभिशप्त हैं। ऐसा संभव नहीं था कि सामने कोरोना और गरीब, खाली हाथ भारत दोनों ही मौजूद हों और वायरस से बचने के बंदोबस्त और उपाय न किए जाएं। दिल्ली के आनंद विहार बस अड्डे समेत कई जगहों पर जन-समुद्र दिखाई दिया। भीड़ को बसों में ठूंसकर भरा गया था और कई लोग बसों की छतों पर भी बैठे थे। सड़कों पर भीड़ मौजूद थी, तो एक-दूसरे से चिपक कर लोग खड़े थे। इन स्थितियों में कोरोना वायरस से कैसे लड़ा जा सकता है? लिहाजा प्रधानमंत्री मोदी को 'मन की बात' के जरिए कहना पड़ा है कि अब भी लोग बीमारी की गंभीरता को नहीं समझ रहे हैं। हालांकि उन्होंने लॉकडाउन जैसे कड़े फैसलों के लिए देश से क्षमा मांगी है। उन्होंने कोरोना के खिलाफ लड़ाई को जीवन और मौत की लड़ाई करार दिया है। कमोबेश प्रधानमंत्री की चिंता के भावार्थ को समझिए। फिलहाल भारत में संक्रमितों की संख्या 1440 से अधिक हो गई है। मौतें 47 हो चुकी हैं। सुखद खबर यह है कि 140 से ज्यादा बीमार कोरोना संक्रमण से ठीक भी हुए हैं, लेकिन दुनिया की तस्वीर बेहद डरावनी है। दुनिया में 6.50 लाख से ज्यादा लोग कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं और मौतें भी 30 हजार का आंकड़ा पार कर चुकी हैं। इटली में ही मरने वाले 10,000 से ज्यादा हो चुके हैं। ये आंकड़े लगातार बढ़ रहे हैं। साबित हो चुका है कि कोरोना ने किसी देश, सीमा, वर्ग, गांव-कस्बे, नस्ल को नहीं छोड़ा है। यदि अब भी यह भीड़ और देश की जनता यथार्थ को स्वीकार नहीं करती है, तो पूछना पड़ेगा कि आखिर वाकई लॉकडाउन कब तक लागू होगा?

फर्जी खबरों से बढ़ती कोरोना की समस्याएं

कोरोना वायरस के संक्रमण के बारे में हम मानकर चल रहे हैं कि देर-सवेर देश इससे मुक्ति पा लेगा। लेकिन एक खतरा इस समय ऐसा दिख रहा है, जिससे मुक्ति पाना शायद आसान नहीं है, और जिसमें वक्त भी लंबा लग सकता है। यह खतरा है फेक न्यूज, यानी फर्जी खबरों का। कोरोना वायरस के बारे में तरह-तरह की जो फर्जी खबरें इस समय चलाई जा रही हैं, वे इस समस्या को कहीं ज्यादा बढ़ा रही हैं। खासकर सोशल मीडिया तो इस तरह की खबरों से भरा पड़ा है। इन्हीं में से कुछ खबरें कभी-कभार मुख्यधारा के न्यूज चौनलों तक भी पहुंच जाती हैं, जिससे कई बार लोगों का इन पर यकीन पक्का होने लगता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण यह है कि सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने यह शेयर करना शुरू कर दिया कि सरकार देशव्यापी लॉकडाउन को 21 दिन से आगे बढ़ाने की तैयारी कर रही है।

इस खबर की निरर्थकता इसी से समझी जा सकती थी कि सरकार की तरफ से न तो यह बात कही गई और न ही कभी इस बाबत संकेत दिए गए, न उन पत्रकारों या विश्लेषकों को इसका अंदाज हुआ, जो सरकार के हर कदम को बहुत गौर से देखते और विश्लेषित करते हैं, फिर भी अनाम, गुमनाम लोग सोशल मीडिया पर इसका प्रसारण करने लगे। जब इस खबर ने कुछ टीवी चौनलों पर भी जगह बना ली, तब सरकार को आगे आकर इसका खंडन करना पड़ा। इस समय, जब सरकार कोरोना संक्रमण पर लगाम लगाने के लिए हर मुमकिन तरीके से जुटी हुई है, तब उसे एक बेसिर-पैर की खबर के खंडन में समय और संसाधन व्यय करने पड़ रहे हैं।

केंद्र सरकार ने कहा है कि 21 दिनों के देशव्यापी लॉकडाउन को आगे बढ़ाने की फिलहाल कोई योजना नहीं है। वैसे तो लॉकडाउन को आगे बढ़ाने का पूरा तर्क ही अपने आप में आधारहीन है। इतने लंबे लॉकडाउन का मकसद है कोरोना वायरस के संक्रमण को सामुदायिक संक्रमण में तब्दील होने से रोकना। 21 दिनों की मौजूदा अवधि विशेषज्ञों की सिफारिश के आधार पर ही तय की गई है और शुरू से ही यह उम्मीद बांधी जा रही है कि इससे संक्रमण के विस्तार को काफी हद तक रोका जा सकेगा। हालांकि सभी विशेषज्ञ मानते हैं कि लॉकडाउन इसे रोकने का एक प्रभावी तरीका है, लेकिन सिर्फ यही शायद पर्याप्त न हो। इसलिए यह भी संभव है कि लॉकडाउन के बावजूद कुछ पॉकेट में, जहां पहले ही इसकी पहुंच बन चुकी है, यह परेशानी की हद तक पहुंच जाए। अगर यह होता भी है, तब भी पूरे देश को एक साथ लॉकडाउन करने की आज जैसी जरूरत शायद तब नहीं पड़ेगी। तब कुछ इलाकों को ही सील करने भर से काम चल सकता है।

अगर हम यह मान भी लें कि किन्हीं वजहों से लॉकडाउन की मियाद बढ़ाने की जरूरत पड़ ही जाए, तब भी यह फैसला लॉकडाउन की ज्यादातर अवधि बीतने पर उसके असर के आकलन के बाद ही होगा। लॉकडाउन की अवधि बढ़ाने का फैसला उसके शुरू होने के चार दिन बाद तो किसी भी सूरत में नहीं हो सकता। फर्जी खबरों की खासियत यही होती है कि वे किसी तर्क से नहीं चलतीं, लोगों की भावनाओं से खेलने के हिसाब से चलती हैं। लॉकडाउन को लागू करने का फैसला पूरे देश को एक महामारी से बचाने के लिए किया गया है, अगला फैसला भी इसी मकसद को ध्यान में रखकर होगा।

चाणक्य नीति

राजा, योगी और ब्राह्मण घूमते हुए ही अच्छे लगते है।

राजा यदि अपने राज्य के दूसरे नगरों में जाकर प्रजा से संपर्क बनाए रखता है, तो उसका वनाश निश्चित ही है। प्रमादी राजा के सेवक कभी सही जानकारी नहीं देते। वे तो सदैव चापलूसी करते हैं। इसी प्रकार योगी एक स्थान पर रहने से आसक्ति में पड़ जाता है। जिससे उसका विरक्त भाव लुप्त होने लगता है। शास्त्रों में योगी को तीन रातों से अधिक एक स्थान पर न टिकने का निर्देश दिया गया है। ब्राह्मण भी यदि भ्रमण नहीं करता तो उसे नए यजमान प्राप्त नहीं होते। पुराने यजमान भी उसके ज्ञान में नवीनता न पाकर तथा सदैव उसके मांगते रहने से परेशान होकर उससे विमुख हो जाते हैं।

एक सलाह

उन पर ध्यान मत दीजिये जो आपकी पीठ पीछे बात करते है, इसका सीधा सा अर्थ है आप उनसे दो कदम आगे है।

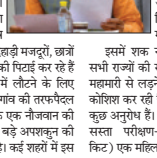

काम की बात

अजीब सी दुनिया है अजीब से ठिकाने है, यहां लोग मिलते कम है झांकते ज्यादा है।

कोरोनाः सरकारी दिग्भ्रम क्यों?

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के उन लोगों से माफी मांगी है, जिन्हें इस तालाबंदी (लाकडाउन) के कारण अपने गांवों की तरफ दौड़ना पड़ा है। लेकिन उन्होंने तालाबंदी की मजबूरी पर भी जोर दिया है। मोदी की इस विनम्रता और सहृदयता पर किसी को भी शक नहीं होना चाहिए। लेकिन मेरा निवेदन है सरकारें सारे कदम हड़बड़ी में क्यों उठा रही हैं? हर कदम उठाने के पहले वे आगा-पीछा क्यों नहीं सोचतीं? उन्होंने नोटबंदी की भयंकर भूल से भी कोई सबक नहीं सीखा। अब जबकि उ.प्र. के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी ने अपने लाखों नागरिकों को उनके गांवों तक पहुंचाने के लिए सैकड़ों बसें चला दी हैं तो प्रधानमंत्री ने आदेश जारी कर दिया है कि सारे राज्यों की सीमाएं बंद कर दी जाएं और राज्यों के अंदर भी जिलाबंदी कर दी जाए। योगी की सरकार भाजपा की है, कांग्रेस की नहीं है लेकिन भाजपा की ही केंद्र सरकार ने अब उसके सारे प्रयत्नों पर पानी फेर दिया है। मैंने सभी मुख्यमंत्रियों से अनुरोध किया था कि वे कृपया तीन दिनों के लिए इस यात्रा की सुविधा दे दें। कुछ राज्यों ने यह काम शुरु भी कर दिया था लेकिन अब

पुलिसवाले उन दिहाड़ी मजदूरों, छात्रों और कर्मचारियों की पिटाई कर रहे हैं और उन्हें शहरों में लौटने के लिए बाध्य कर रहे हैं। गांव की तरफ पैदल लौटनेवाले मप्र के एक नौजवान की मौत की खबर ने बड़े अपशकुन की शुरुआत कर दी है। कई शहरों में इस 'लाकडाउन' की खुले-आम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। देश के इन करोड़ों प्रवासी मजदूरों को अब दोहरे अत्याचार का शिकार होना पड़ रहा है। उनके खाने और रहने के इंतजाम में बड़े शहरों की राज्य सरकारों की कमर टूट जाएगी। यह सरकारी दिग्भ्रम क्यों है? कोरोना से ज्यादा लोग इस दिग्भ्रम के कारण मर सकते हैं।

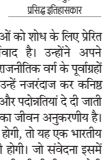

इसमें शक नहीं कि केंद्र और सभी राज्यों की सरकारे इस कोरोना महामारी से लड़ने के लिए जी-तोड़ कोशिश कर रही हैं लेकिन मेरे उनसे कुछ अनुरोध हैं। पहला, कोरोना का सस्ता परीक्षण-उपकरण (टेस्ट किट) एक महिला वैज्ञानिक ने खोज निकाला है। उसकी कीमत सिर्फ 12 रु. है। उसे लाखों में बंटवाएं। दूसरा, मुंह की लाखों पट्टियां तैयार करवाकर बंटवाई जाएं। तीसरा, कोरोना हमले से ठीक हुए मरीजों के 'प्लाज्मा' के इस्तेमाल की बात सोची जाए। चौथा, प्रधानमंत्री ने वैद्यों से जो बात की है, उसके निष्कर्षों से सारे देश को लाभ पहुंचाया जाए। पांचवां, गैर-सरकारी अस्पतालों को कोरोना-मरीजों के मुफ्त इलाज के आदेश दिए जाएं। छठा, देश के सारे पंचों, पार्षदों और विधायकों तथा हारनेवाले उम्मीदवारों को भी घर-घर जाकर लोगों को खाद्यान्न बंटवाना चाहिए। सातवां, जनता खुद जागे। अपने भाइयों की मदद करे।

अपने दौर से मुठभेड़ की गाथाएं

रामचंद्र गुह
प्रसिद्ध इतिहासकार

उन्नीसवीं सदी में इटालियन लेखक इमिलियो सलगारी ने एक बार कहा था कि 'पढ़ना सामान की चिंता बिना सफर करना है'। यह एक महान सलाह है, खास तौर पर कोविड-19 के समय। आज जब हर कोई अपने घर से बंध गया है, तब साहित्य और अन्य विद्वतापूर्ण रचनाएं उसे किसी दूसरे देश व दूसरे समय में ले जाने में मदद कर सकती हैं। ये रचनाएं दिमाग को बल और दिल को सुकून दे सकती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा नई महामारी की घोषणा से पहले मैंने अग्रणी नारीवादी और नागरिक अधिकारों की पैरोकार पॉली मरे की आत्मकथा को पढ़ना शुरू कर दिया था। अमेरिका के दक्षिण में 1910 में जन्मी पॉली ने दुनिया में आने के साथ ही तीन तरह के भेदभाव का सामना किया थाय वर्ग भेद, नस्ल भेद और लिंग भेद। इन भेदभावों के साथ अनाथ होने का बोझ अलग से था। जब वह बहुत छोटी थीं, तभी मां छोड़ गईं और बीमार पिता एक मनोरोग संस्थान में भर्ती कर दिए गए। पॉली को उनकी मौसी पॉलीन ने पाला-पोसा। मौसी पॉलीन एक बेहतरीन महिला थीं, उन्होंने शादी नहीं की, क्योंकि उन्हें भाइयों-बहनों और भतीजे-भतीजियों का ख्याल रखना था। पॉली ने अपने संस्मरण में मौसी पॉलीन का बहुत प्यारा चरित्र उकेरा है, उनके साहस, बलिदान, समर्पण की खूब तारीफ की है।

पॉलीन एक स्कूल शिक्षिका थीं, उन्हीं की प्रेरणा से पॉली ने तय किया था कि वह विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली परिवार की पहली सदस्य बनेंगी। अथक संघर्ष के बाद उन्हें न्यूयॉर्क के बर्नार्ड कॉलेज में दाखिला मिला। इस शहर में रहते हुए ही उन्हें रचनात्मक लेखन, कविता और कहानी से लगाव पैदा हुआ। यहीं पर रहते उन्होंने खुद को संघर्ष और नागरिक अधिकार आंदोलन से जोड़ा। 1930 के दशक में अमेरिका के उत्तरी हिस्से में भी नस्लवाद था, लेकिन दक्षिणी हिस्से की तुलना में कम क्रूर था। अपने संस्मरण में पॉली ने विस्तार से जिक्र किया है कि बसों, ट्रेनों और होटलों में किस तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ता था। पॉली ने अपने राज्य उत्तरी कैरोलिना की मुख्य यूनिवर्सिटी में दाखिले के लिए आवेदन किया था, पर चूंकि वह अश्वेत थीं, उन्हें प्रवेश नहीं मिला, भले ही उनके पास दाखिले के लिए सारी जरूरी योग्यताएं थीं।

नस्लीय भेदभाव का इस तरह का पहला बड़ा अनुभव होने के बाद पॉली ने सोचा कि उन्हें वकील बनना चाहिए, लड़ने के लिए सबसे बेहतर यही होगा। उन्हें वाशिंगटन डीसी स्थित अश्वेतों की ऑल-ब्लैक होवार्ड यूनिवर्सिटी के लॉ स्कूल में प्रवेश मिला। यहां पर उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया और आगे की पढ़ाई के लिए हार्वर्ड लॉ स्कूल में अर्जी लगाई। शानदार रिकॉर्ड के बावजूद उनके आवेदन को खारिज कर दिया गया। इसके बाद पॉली ने नस्ल, वर्ग और लिंग के अवरोधों के खिलाफ कामयाब वकालत की शुरुआत की। वह महात्मा गांधी की बहुत बड़ी प्रशंसक थीं। कुछ समय तक नए आजाद हुए घाना में पढ़ाने के बाद अमेरिका लौटीं। येल लॉ स्कूल से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की। वह एपिस्कोपल चर्च में विशेष सम्मान हासिल करने वाली पहली महिला बनीं। उनकी जीवन-कथा दिलचस्प है। मैंने बहुत सारे संस्मरण और आत्मकथाएं पढ़ी हैं और मैं उनकी इस रचना को तीन या चार सर्वश्रेष्ठ आत्मकथाओं में रखूंगा। पॉली ने बहुत प्यार, सीख और करुणा से लिखा है। पॉली मरे की आत्मकथा के बाद मैंने अग्रणी महिला वैज्ञानिक ई के जानकी अम्मल की जीवनी की पांडुलिपि को पढ़ना शुरू किया। इसकी लेखिका विज्ञान इतिहासकार सावित्री प्रीथा नायर हैं। जानकी अम्मल, पॉली से थोड़ी भाग्यशाली थीं। उनका परिवार मध्यवर्गीय था। पर औपनिवेशिक व पितृ-सत्तात्मक भारत में जन्मी इस महिला को बड़े पैमाने पर बाधाओं का सामना करना पड़ा। उन्होंने साहस और संकल्प के साथ बाधाओं को पार किया।

सन 1897 में मालाबार में जन्मी जानकी अम्मल की शिक्षा मद्रास में हुई, जहां उन्होंने असामान्य रूप से विज्ञान जैसे विषय को चुना। स्नातक होने के बाद और मिशिगन यूनिवर्सिटी की छात्रवृत्ति पाने से पहले उन्होंने एक स्थानीय कॉलेज में वनस्पति विज्ञान पढ़ाया। साड़ी पहने एक पतली-सी मलयाली महिला 1924 में समुद्र पार एक अनदेखी जमीन पर जा पहुंची। उन्हें ऐन आर्बर में एमएससी और पीएचडी, दोनों करना था। वह विज्ञान में डॉक्टरेट करने वाली पहली भारतीय महिला के साथ ही अमेरिकी यूनिवर्सिटी से वनस्पति विज्ञान में पहली महिला डॉक्टरेट बनीं। जानकी अम्मल के कई शुरुआती शोध घास पर थे। पीएचडी के बाद वह ब्रिटेन चली गईं, जहां वह सरे में जॉन इन्स हॉर्टिकल्चरल इंस्टीट्यूट में शामिल हो गईं। वहां उन्होंने महान जीव-विज्ञानी सिरिल डार्लिंगटन के साथ काम किया। एक ऐतिहासिक कृति 'अ क्रोमोजोम एटलस ऑफ कल्टिवेटेड प्लांट्स' के लेखन में उन्होंने सहयोग दिया। भारत के आजाद होने के बाद जानकी अपने देश की सेवा करने लौट आईं। लंदन में पंडित नेहरू से हुई मुलाकात से उन्हें देश लौटने की प्रेरणा मिली थी। उन्होंने भारतीय विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत के वानस्पतिक सर्वेक्षण को पुनर्गठित किया। युवा महिलाओं को शोध के लिए प्रेरित किया। उनका ज्ञान निर्विवाद है। उन्होंने अपने सहयोगियों, नौकरशाही और राजनीतिक वर्ग के पूर्वाग्रहों का भी खूब सामना किया। उन्हें नजरंदाज कर कनिष्ठ पुरुष वैज्ञानिकों को पुरस्कार और पदोन्नतियां दे दी जाती थीं। बेशक, जानकी अम्मल का जीवन अनुकरणीय है। जब उनकी जीवनी प्रकाशित होगी, तो यह एक भारतीय वैज्ञानिक की सर्वश्रेष्ठ जीवनी होगी। जो संवेदना इसमें बरती गई है, उसके बल पर यह जीवनी सी वी रमन, होमी जहांगीर भाभा और मेघनाद साहा जैसे आदर्श पुरुष वैज्ञानिकों की मौजूदा जीवनियों से आगे निकल जाएगी।

एक विशेषाधिकार प्राप्त उच्च जाति के पुरुष के रूप में मैंने विस्मय के साथ इन दो पुस्तकों को पढ़ा है और अपनी खुद की कमजोरियों के प्रति मेरी जागरूकता बढ़ी है। मुझे कभी उन भेदभावों का सामना नहीं करना पड़ा, जिन्हें पॉली और जानकी ने एक या दो बार नहीं, बल्कि ताउम्र झेला था। दोनों ने संकल्प व गरिमा के साथ दुर्गम बाधाओं को पार किया था। दोनों ज्ञान के क्षेत्र व समाज में बड़े योगदान के लिए आगे बढ़ी थीं। कोविड-19 के समय में उनकी गाथाएं पढ़ना समृद्ध कर गया। पॉली और जानकी ने समग्रता में जिस साहस और सुघड़ता का परिचय दिया था, उसका एक हिस्सा भी अगर मानवता आज दिखा सके, तो कमाल हो जाएगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

बांटने वाला ही जीवन को भरपूर जीने की क्षमता रखता है

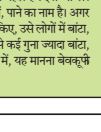

कुछ लोग अक्सर अपनी बदकिस्मती को लेकर आश्वस्त दिखाई देते हैं। एक शायर के शब्दों में-हम वो स्याह नसीब है तारीक के शहर में, खोलें दुकान कफन की तो लोग मरना छोड़ दें।

जिंदगी के हर मोड पर आपका नजरिया महत्वपूर्ण होता है। गौतम बुद्ध ने सदियों पहले कहा था कि आप सिर्फ वही होते हैं, जिससे आप चिपके होते हैं। बुद्ध ने जो कहा, उसको जिया भी। उन्होंने दुखों को दूर करने के उपाय भी बताए। दरअसल नजरिया चीतों को देखने, शब्दों को कह देने तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। छोटी हो या बड़ी, मिसाल बनना जरूरी है। यह सोच ही है, जिसने भूटान को सबसे सुखी देश बना रखा है। भूटान की रॉयल यूनिवर्सिटी के वीसी निडुप दोरजी कहते है-हमारा नजरिया जीवन को लेकर बाकी लोगों से थोड़ा अलग है। हम अपना पैसा हथियार खरीदने में खर्च नहीं करते, बल्कि हम इसे शिक्षा पर खर्च करते हैं। हमारे नजरिये से शिक्षा का मतलब यह नहीं कि हम डॉक्टर, इंजीनियर, टीचर बनाने वाली फैक्ट्रियां खड़ी करें, बल्कि हम तो छात्रों को मानवीय मूल्य के बारे में बताते हैं और यह भी कि मौत जिंदगी का असली सत्य है और उससे भी बड़ा सत्य यह है कि जीवन के खत्म होने से पहले हम इसे जी लें। उनकी बातों का मर्म समझें। जिंदगी खोने का नहीं, पाने का नाम है। अगर आपने जीवन भर तरह-तरह के अनुभव हासिल किए, उसे लोगों में बांटा, धरती और उसके बाशिंदों से जितना लिया, उससे कई गुना ज्यादा बांटा, तो समझिए कि आपने भरपूर जीवन जिया। ऐसे में, यह मानना बेवकूफी है कि आप स्याह नसीब रहें।

धर्म को कोसने से पहले धार्मिकता को समझें

मनोज ज्वाला

कोरोना संक्रमण के बढ़ते विस्तार के साथ बौद्धिक वैचारिक विवाद भी बढ़ता जा रहा है। कुछ लोग तैंतीस कोटि देवी-देवताओं की ओर से कॉरोना-उन्मूलन का कोई चमत्कार न किये जाने पर सवाल उठाने लगे हैं तो कुछ लोग धार्मिक मान्यताओं पर। कुछ लोग अस्पतालों की कमी का सवाल उठा भी उठा रहे हैं। लेकिन इनकी बुद्धि वहां नहीं जा पा रही है जहां कोई देवी-देवता नहीं हैं और अस्पताल तो एक से एक हैं- सर्वसुविधा-सम्पन्न। लेकिन फिर भी यूरोप-अमेरिका में कॉरोना का संक्रमण और संक्रमितों का चिकित्सीय कुप्रबंधन भारत से कई गुणा ज्यादा है। बावजूद इसके अपने देश के इन बुद्धिबाजों को कॉरोना की भयावहता से निजात पाने में आनेवाली कठिनाइयों के लिए देवी-देवताओं के आख्यानों पर उंगली उठाना ही मुनासिब समझ में आ रहा है। किन्तु उन्हें यह सच समझ में नहीं आ रहा है कि इस कॉरोना-संक्रमण की भयावहता को अस्पतालों की बहुलता कम नहीं कर सकती है। जबकि सनातन देवी-देवताओं के आख्यानों में अभिव्यक्त शिक्षाओं को लोग अगर आत्मसात कर चुके होते और धार्मिक कर्मकाण्डों की सूक्ष्म वैज्ञानिकता को नजरंदाज कर उन्हें महज पाखण्ड नहीं समझ रहे होते तो कॉरोना जैसी त्रासदी से इतना भयभीत कतई नहीं होना पड़ता। यह त्रासदी प्रकृति-प्रदत हो या चीन के कम्युनिस्ट हुक्मरानों की धूर्त्त बुद्धि से व्युत्पन्न य किन्तु इसकी भयावहता एक प्रकार की दैवीय विभीषिका ही प्रतीत हो रही है। ऐसा इस कारण क्योंकि इसका संक्रमण प्राकृतिक आपदा विकरालता व भयंकरता के समान ही है। साथ ही उन्हीं देशों में सर्वाधिक है जहां प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व पर आधारित सनातन धार्मिक जीवन-शैली का तिरस्कार करते हुए प्रकृति-विरोधी जीवन-पद्धति रच-गढ़कर सम्पूर्ण सृष्टि को मनुष्येत्तर प्राणियों से विहीन कर देने वाली अधार्मिकता को अंगीकार किया गया है।

जिन देवी-देवताओं से सनातन धर्म का बोध होता है उनपर कटाक्ष कर अपनी बौद्धिकता झाड़ने वालों को पहले धार्मिकता और अधार्मिकता को समझ लेना चाहिए। जीवन जीने की जो पद्धति धारण करने योग्य है वही धर्म है और वही जीवन-पद्धति धारण करने योग्य है या हो सकती है। जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी हो य जबकि मनुष्य का कल्याण व्यष्टि से लेकर समष्टि तक मनुष्येत्तर प्राणियों के सह-अस्तित्व से समस्त विश्व-वसुधा व सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण में ही सन्निहित है। क्योंकि अन्य प्राणियों-वनस्पतियों के बिना मनुष्य का जीवन सुखमय कतई नहीं हो सकता। अतएव ऐसी जीवन-पद्धति ही धर्म है जो समस्त सृष्टि को सनातन स्रष्टा का ही विराट रूप अर्थात ब्रह्म-स्वरूप समझकर समस्त प्राणियों-वनस्पतियों के सह-अस्तित्व को आत्मसात करती है। धर्म रूपी इस जीवन-पद्धति का अनुसरण ही धार्मिकता है। ठीक इसके विपरीत सृष्टि को सनातन 'ब्रह्म-स्वरूप' के बजाय किसी 'अब्रह्म' (अब्राहम) की कायनात और मनुष्य को किसी एड्म या आदम की औलाद मान समस्त मनुष्येत्तर प्राणियों सहित सम्पूर्ण सृष्टि को सिर्फ आदमी के भोग-उपभोग की वस्तु मान प्रकृति के विरुद्ध शत्रुवत व्यवहार करने वाली जीवन-पद्धति सर्वकल्याणकारी नहीं है। एक ने आदमी को 'अशफरूल

मक्खलुकात' कहकर उसे अभक्ष्य का भी भक्षण करने में लगा दिया य तो दूसरे मजहब ने 'डार्विनवाद' के सिद्धांत को अपना कर सबलों के द्वारा निर्बलों के शोषण को वैधता प्रदान कर दिया। परिणाम यह हुआ कि एडमध्आदम की औलादों ने प्रकृति को रौंद डालने और समस्त प्राकृतिक उपादानों-संसाधनों को अपनी मुट्ठी में कर लेने का अभियान-सा चला दिया, जिसकी परिणति दो-दो विश्वयुद्धों की विभीषिका के रूप में दुनिया देख चुकी है। इन दोनों मजहबों की दृष्टि में आदमी सर्वभक्षी सामाजिक पशु (सोशल एनिमल) है, जिसके लिए वनों को उजाड़ना और मानवेत्तर जीव-जन्तुओं को मारकर खाना मानवीय सभ्यता की तरक्कीशीलता है। इन मजहबियों ने सारी दुनिया में मांसाहार को इस कदर फैला दिया कि पारिस्थितिकीय संतुलन के लिए आवश्यक 'जैव विविधता' के समक्ष असंतुलन का भारी संकट खड़ा हो गया है।

इसी धार्मिकता व अधार्मिकता के भाव-स्रोत से सम्पन्न जीवन-पद्धति को भारतीय ज्ञान-परम्परा में धर्म व अधर्म कहा गया है। धर्म ही भारत की राष्ट्रीयता है जो सनातन धर्म, वैदिक धर्म अथवा हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाता है। इसे आप मानवधर्म भी कह सकते हैं य क्योंकि मानवोचित भी यही है, जो हमें 'ईशोपनिषद' के एक मंत्र के रूप में ÷ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत÷ की उदार व व्यापक दृष्टि प्रदान करता है। अर्थात ÷जड़-चेतन समस्त प्राणियों-वनस्पतियों वाली यह सम्पूर्ण सृष्टि परमात्मा से व्याप्त है। मनुष्य इसके पदार्थों का आवश्यकतानुसार भोग करे, परंतु 'यह सब मेरा नहीं है के भाव से करे और इसके उलट भाव से इनका संग्रह न करे।÷ धार्मिकता को व्याख्यायित करने वाले वेद में वर्णित शांतिमंत्र के शब्दों पर आप गौर करें तो पाएंगे कि धर्म तो मामूली तृण व चिंटी से लेकर नदी-पर्वत व हाथी-पर्यंत समस्त जीव-जगत की शुभता के अनुकूल जीवन जीने की दृष्टि प्रदान करता है।

इन दिनों चीन देश से उत्पन्न जिस कॉरोना-संक्रमण की मार सारी दुनिया को झेलनी पड़ रही है सो चीनियों की अभक्ष्य-भक्षण से युक्त अधार्मिक जीवन-शैली अथवा सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में कर लेने को उद्धत वहां के कम्युनिज्म की अधार्मिकता का ही परिणाम है। जबकि यह संक्रमण उन्हीं लोगों को ज्यादा ग्रस रहा है जो मांसाहारी हैं। भारतीय वांगमय में देवासुर संग्राम के जो आख्यान वर्णित हैं सो सृष्टि-क्रम के अनुकूल और प्रतिकूल जीवन-पद्धति का वरण करने वाले देव-पक्ष व असुर-पक्ष के बीच धर्म व अधर्म का ही परस्पर संघर्ष है, जो सभी युगों में होता रहा है और अन्ततः धर्म की ही विजय होती रही है। धर्म व मजहब दोनों को एक समझना भ्रांति है और इसी कारण आज के इस कॉरोना-संकट से घबराये हुए कतिपय लोग धर्म एवं धर्म को अभिव्यक्त करने वाले देवी-देवताओं को कोस रहे हैं जो सर्वथा अनुचित है। इस संक्रमण-युद्ध में धर्मधारी भारत की विजय सुनिश्चित है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

कर्मवीर डॉक्टरों को सलाम

जगदीश बाली
लेखक

अपने एक डाक्टर मित्र को हालचाल जानने के लिए फोन किया। उसने कहा, 'अपने घर की रोशनी का तो पता नहीं दोस्त, अभी तो फिक्र है किसी के घर का चिराग न चला जाए।' उसकी बात सुनकर मुझे लगा कि किसी ने सच ही कहा है कि जब ईश्वर को लगा कि वह हर जगह पहुंच कर इनसान की मदद नहीं कर सकता, तो उसने संसार में एक स्वार्थहीन व जहीन आदमी को भेजा जिसे हम डाक्टर कहते हैं। कोरोना ग्रसित विश्व में आज ये बात सत्य व प्रासंगिक साबित हो रही है। अपने जीवन की सुख-सुविधाओं को छोड़कर डाक्टर दूसरों को जीवन प्रदान करने में लगातार जुटा है। कोरोना से हुई मौतों को देखकर यही लगता है जैसे लोग किसी युद्ध में मर रहे हों। इस युद्ध में देश के सैनिक नहीं लड़ रहे, न ही ये इनसानों का इनसानों से युद्ध है। यह मानव जाति का एक अति सूक्ष्म जानलेवा वायरस के विरुद्ध संघर्ष है जो पूरे विश्व में मौत का कहर बरपा रहा है। सूर्य के कोरोना की शक्ल से मिलते-जुलते इस वायरस के विरुद्ध चल रहे संघर्ष में सैनिक की तरह पहली पंक्ति में जो आदमी खड़ा है, वह है डाक्टर और उसकी सेना में शामिल हैं नर्सें व स्वास्थ्य सेवा में कार्यरत लोग। जिस तरह सैनिक सीमा पर व रणभूमि में दुश्मनों से लोहा लेता है और हमें सुरक्षा का भरोसा दिलाता है, उसी तरह डाक्टर भी इनसानों के जीवन को बचाने के लिए तत्परता से जुटा है। इनसानी जिस्म से इनसानी जिस्म में घर करने वाले कोरोना से वैसे तो हर आदमी संघर्षरत है, परंतु इस युद्ध में डाक्टर ऐसे कमांडो हैं, जो लगातार कोरोना से सीधी टक्कर ले रहे हैं। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए वे खुद को भी जोखिम में झोंक रहे हैं। कोरोना के कोप से संघर्ष में सबसे अहम भूमिका निभा रहे सफेद कोट पहने हुए ये डाक्टर, नर्स व सहायक स्वास्थ्य कर्मी बड़ी शिद्दत से अपने काम को अंजाम दे रहे हैं। उन्हें देख कर कहा जा सकता है कि ये बेशक खुदा नहीं पर खुदा जैसे लोग जरूर हैं।

लगातार अपने कार्य में व्यस्त इन्हें मालूम ही नहीं कि कब सुबह हुई और कब रात ढली। किसी दिन तो ये सूरज के दर्शन भी नहीं कर पाते। हफ्ते- हफ्ते तक घर नहीं जा पा रहे हैं। और जब जाते हैं तो दूर से ही अपने परिवार के लोगों से बातचीत व राम-सलाम कर लेते हैं। वे ठीक से अपनी पत्नी और बच्चों से भी नहीं मिल पाते। मासूम बच्चे डबडबाई आंखों से कहते हैं, 'पापा बाहर मत जाओ, बाहर कोरोना है।' वे खामोश हो कर इस दर्द को अपने दिल में छिपाते हुए फिर से अस्पताल रवाना हो जाते हैं और अपने काम पर लग जाते हैं। उन्हें मरीज को हौसला भी देना है और उन्हें कोरोना से भी बचाना है। उन्हें मरीज का दर्द भी बांटना है और मर्ज की दवा भी करनी है। उन्हें खुद को भी इनफैक्ट होने से बचाना है। कई डाक्टर तो इस जानलेवा वायरस से संक्रमित भी हो चुके हैं व कुछ डाक्टरों की मौत भी हो चुकी है। समझा जा सकता है कि कोरोना का इलाज कर रहे डाक्टरों का काम ऐसा है जैसे उन्हें आग भी बुझाना है और दामन भी बचाना है। सफेद लिबास में कंधे पर स्टेथोस्कोप लटकाए हुए ये भगवान का रूप ही तो हैं।

ऐसे मुश्किल हालात में उसके साथ काम कर रही टीम फरिश्ते की टोली ही लगती है। जिंदगी तो इन्हें भी भगवान ने एक ही दी है, पर सब भूल कर इन्हें तो बस औरों की जिंदगी बचानी है। परिवार तो इनका भी है, पर वक्त ऐसा आन पड़ा है कि अभी सब कुछ भूल कर कोरोना से लड़ना है। चाहे ये खुद घर नहीं जाते, पर औरों के घरों की खुशी न चली जाए, इसलिए अपने घर में मिलने वाली सुख-सुविधाओं का त्याग करते हैं। खेद का विषय है कि हमारे देश के कुछ शहरों में कुछ मकान मालिक डाक्टरों व नर्सों को मकान खाली करने का दबाव बना रहे हैं। दूसरों की जान बचाने वाला डाक्टर कभी किसी की जान के लिए खतरा नहीं हो सकता। उससे ज्यादा कौन समझ सकता है कि कोरोना जैसे घातक वायरस से लड़ाई में उसे खुद को आइसोलेट हो कर रहना है। डाक्टरों व नर्सों से अभद्र व्यवहार की खबरें भी आई हैं। ऐसे विकट समय में ऐसे संवेदनहीन हो कर बर्ताव करना अमानवीय कृत्य है जो अक्षम्य है, फिर ऐसा करने वाला चाहे कोई पुलिसकर्मी हो, मकान मालिक हो या कोई और रसूखदार आदमी हो। कोरोना के विरुद्ध लड़ाई में यदि हमें जीतना है तो हमें डाक्टरों व नर्सों की सेवाओं को सराहना होगा। ताली, थाली और शंख बजाने से हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। वास्तव में भूतल पर हमें कोरोना से लड़ रहे इन योद्धाओं को सम्मान व संरक्षण देना होगा। उनके साथ अभद्रता तनिक भी सहनीय नहीं। खुद को खतरे में डालकर वे मरीजों का इलाज कर रहे हैं। इस कोरोना काल में भले ही समाज के विभिन्न वर्गों के लोग व कर्मी अपनी भूमिका व कर्त्तव्य निभा रहे हैं, परंतु डाक्टर, नर्सें व स्वास्थ्य कर्मी वास्तव में कोरोना से संघर्ष में हमारे महानायक हैं। डाक्टर के सिर पर भले ही ताज नहीं, उनके सीने पर भले ही तगमे नहीं, पर वे सुपर हीरो हैं। इनकी व इनके घरों की सलामती के लिए दुआओं में अनगिनत हाथ उठने चाहिए। इन कोरोना कमांडो व कर्मवीरों के जज्बे, कर्मठता व स्वार्थहीन सेवा को हजारों-लाखों सलाम।

सरकार का आर्थिक पैकेज नाकाफी

भारत में कोरोना वायरस से फैली अफरा-तफरी के बीच पिछले हफ्ते केंद्र सरकार ने महामारी से होने वाले आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए आर्थिक पैकेज की घोषणा की। एक लाख सत्तर हजार करोड़ रुपए के इस राहत पैकेज का नाम प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना रखा गया है। सरकार ने दावा किया कि इसका फोकस आर्थिक रूप से कमजोर लोगों पर है। मगर बारीक नजर डालें तो इस घोषणा में कई बातें दिखावटी हैं। मसलन, इसमें 31 हजार करोड़ रुपए वो भी हैं, जो निर्माण मजदूर कोष में हैं। सरकार पहले ही राज्य सरकारों को उसका उपयोग करने को कह चुकी है। इसी तरह पीएम किसान योजना की 2000 रुपए की किस्त वैसे भी किसानों के खाते में जानी थी। उसका कुछ दिन पहले अग्रिम भुगतान कोई अतिरिक्त राहत नहीं है। यही बात मनरेगा मजदूरी में वृद्धि का है, जो मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी के साथ पहले से अपेक्षित था। इन सारी रकमों को एक लाख सत्तर हजार में शामिल कर बड़ी राहत का संदेश देना क्या सिर्फ सुर्खियां हासिल करना नहीं माना जाएगा? वैसे ये सच है कि इस पैकेज में घोषित कई उपाय सही दिशा में हैं। जन धन खातों वाली 20 करोड़ महिलाओं को अगले तीन महीने तक 500 रुपए प्रति माह मिलेगा। ये रकम कम है, फिर भी कुछ ना होने से बेहतर है।

गरीबी रेखा से नीचे गुजर करने वाले लगभग 8 करोड़ परिवारों को अगले तीन महीनों तक गैस के सिलिंडर मुफ्त दिए जाएंगे। यह एलान भी सही दिशा में है। मगर इसके साथ सप्लाई सुचारू बनाने की बड़ी समस्या है। गौरतलब है कि देश इस समय ठहराव की हालत में है। तमाम तरह की आपूर्तियां बाधित हैं। एक अन्य उपाय के तौर पर दीन दयाल उपाध्याय योजना के तहत आने वाले महिला स्वयंसेवी समूहों की कोलैटरल मुक्त लोन की सीमा को 10 लाख से बढ़ा कर 20 लाख कर दिया गया है। इसका लाभ मिलेगा, बशर्त इन समूहों के लिए कामकाज की स्थितियां आम दिनों जैसी हों। गरीब और जरूरतमंद लोगों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत जो खाद्यान्न मिलते हैं, उसके अतिरिक्त अगले तीन महीनों के लिए पांच किलो गेहूं या चावल मिलेगा। उन्हें इस अवधि में हर महीने एक किलो दाल भी निशुल्क मिलेगी। हालांकि इसमें भी पेच है और आपूर्ति का सवाल है। इसलिए फिलहाल, यही कहा जा सकता है कि सरकार ने सही दिशा में सोचा है, मगर वह बहुत साहसी सोच नहीं दिखा पाई है।

मुश्किल होती लड़ाई

सिद्धार्थ शंकर

देश भर में 21 दिन का लॉकडाउन लागू कर दिया गया है। पिछले दिनों जिस तरह कई इलाकों में लोगों ने लॉकडाउन को लेकर लापरवाही दिखाई, उससे सरकार को इस बार सख्त रुख अपनाना पड़ा। नियम तोडने वालों पर एक महीने से दो साल तक की सजा का प्रावधान कर दिया गया है। इस सख्ती की तात्कालिक वजह यह है कि पिछले दिनों 64 हजार के करीब भारतीय और विदेशी यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों से यहां आए हैं। इन इलाकों में कोविड-19 का प्रकोप बहुत ज्यादा है, लिहाजा वहां से इनके आने के बाद भारत में बीमारी फैलने का खतरा काफी बढ़ गया है। इस लंबे लॉकडाउन का मकसद यह है कि बाहर से आए किसी व्यक्ति में अगर वायरस है भी तो वह इसे फैला न पाए। जिन मरीजों में लक्षण आने होंगे उनमें ये 14 दिन में दिख जाएंगे और उनका इलाज शुरू हो जाएगा। दूसरी तरफ जो पहले से संक्रमित हैं उनका इलाज इस बीच पूरा हो जाएगा। मगर पिछले दो दिनों में दिल्ली, गुजराज और हरियाणा में मजदूरों का पलायन और हजारों की घर जाने की जो बेबसी दिखाई दी, वह चिंतित करने वाली है। सोशल डिस्टेंशिंग का संदेश तार-तार होते दिखा। इससे संदेश यह मिला है कि लंबे लॉकडाउन से कई अप्रत्याशित चुनौतियां भी सामने आने वाली हैं। उनसे निपटने के लिए सरकार को दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देना होगा। उपभोक्ता मामलों के मंत्री रामविलास पासवान ने कहा है कि जरूरी चीजों का मिलना सुनिश्चित करने के लिए सरकार हालात की निगरानी कर रही है। लोगों को रोजमर्रा की चीजों की किल्लत नहीं होनी चाहिए और इनकी कीमतें नियंत्रित रहनी चाहिए। कंस्ट्रक्शन सेक्टर में लगे मजदूरों के लिए श्रम मंत्री संतोष गंगवार ने राहत का ऐलान किया है। 52,000 करोड़ के लेबर सेस फंड से पैसा सीधे मजदूरों के अकाउंट में भेजा जाएगा। इसके अलावा विभिन्न श्रेणी के मजदूरों को एक माह का राशन मुफ्त दिया जाएगा।

फिर, भारत समेत पूरी दुनिया में सरकारों के सामने आर्थिक मोर्चे पर अभी तिहरी चुनौती है। एक तरफ काफी पहले से निजी क्षेत्र की ओर उन्मुख हो चुके स्वास्थ्य और चिकित्सा ढांचे के बल पर विशाल आबादी की कोरोना वायरस से जुड़ी जांच कराना और बड़ी तादाद में लोगों का इलाज सुनिश्चित करना, जिसके लिए सरकारी खजाने से काफी सारी रकम खर्च करनी पड़ रही है। दूसरे, बिना किसी काम-धाम के अपने घरों में कैद करोड़ों लोगों के कम से कम तीन-चार महीने जिंदा रहने की व्यवस्था करना। और तीसरे, आधुनिक इतिहास की सबसे बड़ी- 2008 तो क्या, 1929 की महामंदी से भी बड़ी- आर्थिक मंदी से यथाशीघ्र उबरने का एक खाका भी तैयार रखना, ताकि महामारी से बचे लोग आने वाले दिनों में बेरोजगारी और भुखमरी के शिकार न हो जाएं।

लगभग सभी देशों की सरकारों ने इन तीनों लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए विशाल राहत पैकेजों की घोषणा करनी शुरू कर दी है, हालांकि ज्यादातर के यहां विभिन्न वजहों से खजाने का बाजा बजा हुआ है। अमेरिका में 2200 अरब डॉलर के ऐतिहासिक राहत पैकेज के तुरंत बाद अपने यहां वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन ने पेंशनयाफ्ता बुजुर्गों, अकेले घर चलाने वाली महिलाओं, दिव्यांगों और अकुशल ग्रामीण मजदूरों से लेकर किसानों, कंपनी कर्मचारियों और स्व-सहायता समूहों तक के लिए 1 लाख 70 हजार करोड़ रुपये की ऐसी कई योजनाएं घोषित की हैं, जिनके जरिये तीन महीने तक या तो कुछ अतिरिक्त रकम सीधे उनके खाते में जाएगी, या अपनी ही रकम एडवांस में निकाल कर वे अपने पारिवारिक खर्चे पूरे कर सकेंगे।

संकट की घड़ी में लोगों को सरकारी मदद देने की बात कहने में आसान लगती है लेकिन व्यवहार में यह काम बहुत मुश्किल होता है। सीधे खाते में रकम भेजना तकनीकी तौर पर इस समस्या को संबोधित करने का सबसे अच्छा तरीका है, लेकिन सालोंसाल हम देखते आ रहे हैं कि बीच में बैठे घडियालों ने इस अमानत में भी खयानत करने के तमाम तरीके खोज लिए हैं।

क्यों भाग चले प्रवासी मजदूर

आरके सिन्हा

जब सारी दुनिया कोरोना वायरस से थर्र-थर्र कांप रही है, तब हमारे सामने एक अन्य बेहद विषम परिस्थिति अचानक उत्पन्न हो गई है। इसके कारण कोरोना के खिलाफ लड़ी जा रही जंग भी अचानक कमजोर पड़ती नजर आ रही है। दरअसल देश में लॉकडाउन की घोषणा के दूसरे दिन से ही राजधानी दिल्ली समेत देशभर के राज्यों से प्रवासी मजदूर अपने गांवों की तरफ पलायन करने लगे हैं। चौबीस घंटों में ऐसा क्या हो गया कि लाखों मजदूर और उनके परिवार एकदम से भयाक्रांत हो उठे। यह अफवाह कैसे फैली कि अब उनका काम हुआ खत्म। तुरंत गाँव जाकर ही किसी तरह अपने और अपने परिवार का पेट पालना होगा।

सबसे ज्यादा विकट स्थिति देश की राजधानी दिल्ली की है। धौलाकुंआ और आनंद विहार के रास्ते हजारों प्रवासी श्रमिक अपने गांवों की तरफ जुलूस की शक्ल में पैदल ही चले ही जा रहे हैं। यह परिस्थिति एकाएक क्यों उत्पन्न हो गई। फिलहाल इस संबंध में पुख्ता तौर पर कुछ भी कहना सही नहीं होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विगत 24 मार्च को 21 दिनों के राष्ट्रव्यापी बंद की घोषणा की थी, जिसके बाद सड़क, रेल और हवाई यातायात सहित सभी तरह का परिवहन बंद हो गया। उनका साफ कहना था कि तीन हफ्ते का लॉकडाउन किए बगैर बात नहीं बनेगी। यानी देश में कोरोना के खतरे को फैलने से बचाना कठिन होगा। उनके आह्वान के बाद देशभर में सारा कामकाज बंद हो गया। गृहमंत्री अमित शाह ने भी सभी मकान मालिकों से एक माह का किराया मजदूरों से न लेने की अपील की और कारोबारियों को पूरे महीने के वेतन देने को कहा, चाहे मजदूर काम पर आयें या अनुपस्थित रहें। लेकिन, सरकारी अधिकारियों से चूक यह हुई कि उन्होंने तत्काल कोई योजना ही नहीं बनाई न ही कोई सार्वजानिक घोषणा की जो मकान मालिक किराये की आमदनी पर ही जी रहे हैं उनका क्या होगा? जिन छोटे कारोबारियों के सामर्थ्य में सारे स्थायी और ठेके पर काम करने वाले कर्मचारियों और मजदूरों के वेतन का भार उठाना संभव ही नहीं था, उन्होंने कारोबार रोककर सारे मजदूरों से जगह खाली करने और घर वापस जाने को कहा। किसी ने तो विनम्रता से अपनी मजबूरी जताई तो ज्यादातर मकान मालिकों और फैक्टरी मालिकों ने सख्ती का ही इस्तेमाल किया। यही वक्त था जब उन्हें तत्काल रोकने की जरूरत थी और वित्त मंत्रालय और श्रम मंत्रालय को भी तत्काल इस समस्या पर सोचना चाहिये था कि इन करोड़ों ठेका मजदूरों का क्या होगा, जिनमें ज्यादातर गरीब हैं और दिनभर कमाते हैं तो शाम को रोटी बनती है। इसका मतलब यह नहीं था कि दिहाड़ी मजदूरों का सरकार द्वारा ख्याल नहीं किया जाता। सरकार इनके लिए भी कुछ न कुछ करती जरूर। पर इन दिहाड़ी मजदूरों को लगा कि अब इनके लिए दिल्ली में कुछ बचा ही नहीं। फिर तो इन्होंने विभिन्न राज्यों में खासकर पूर्वांचल प्रदेशों में स्थित अपने गावों की ओर पलायन शुरू कर दिया। परिवहन के अभाव में बड़ी संख्या में ये लोग पैदल ही सैकड़ों किलोमीटर दूर अपने घर वापस जाने को तैयार हो गये। दिल्ली सरकार के स्थानीय अधिकारियों को इन्हें जहाँ सड़क पर आने से रोकना था, वहीं यह पता है कि इन्होंने अपनी जीपों में लगे लाऊडस्पीकरों पर घोषणा की कि बसें दिल्ली सीमा पर लगी हैं, जिनको अपने गांव जाना है जायें। स्वाभाविक तौर पर केंद्र सरकार को उम्मीद थी कि कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए लॉकडाउन करने के बाद लोग अपने घरों में ही रहेंगे। पर इधर तो स्थिति बिल्कुल उलट हो गई। क्योंकि, हजारों की संख्या में दिहाड़ी मजदूर घरों से बाहर निकल पड़े और स्थानीय अधिकारियों ने इन्हें रोकने के बजाये दिल्ली-यूपी सीमा पर जाने को कहकर गुमराह किया। यह निश्चित रूप से एक अत्यंत ही गैर-जिम्मेदाराना कृत्य था, जिसके लिये ऐसे सभी अफसरों को चिन्हित कर कठोर दंड देना चाहिए।

अब क्या करे सरकार

अब सरकार के पास विकल्प ही क्या बचा है? मोटा-मोटी सरकार अब यही कर सकती है कि इन गरीब मजदूरों को वे अभी जहाँ हैं वहीं आसपास के रेलवे स्टेशनों पर खड़ी ट्रेनों में 14 दिन आइसोलेशन में रहने की जगह दिलवा दे, जिधर से भी ये परिवार सहित गुजर रहे हैं। ये सब अभी हाईवे पर हैं। हाईवे से कोई बहुत दूर नहीं होते हैं रेलवे स्टेशन। चूंकि रेलवे की सेवाएं फिलहाल ठप हैं इसलिए इन प्रवासी मजदूरों को स्टेशनों पर ट्रेनों में रखा जा सकता है। सब स्टेशनों पर ट्रेनें खड़ी हैं। वहां पर ही इनके लिए भोजन आदि की व्यवस्था हो सकती है। ट्रेनों में शौचालय भी होता है बिजली-पंखा भी और ये कुछ-कुछ दूरी पर रह भी सकते हैं। चूंकि रेलवे के पास अपना बहुत ही विशाल और उम्दा इंफ्रास्ट्रक्चर है इसलिए सरकार रेलवे के संसाधनों का फिलहाल लाभ उठा सकती है। आज रेलवे मंत्रालय ने इस सम्बन्ध में पहल भी की है।फिलहाल इसके अतिरिक्त इन्हें बंद स्कूलों-कालेजों में भी आइसोलेट किया जा सकता है। इन्हें किसी भी हालत में गांवों की ओर कूच करने से रोकना होगा। क्योंकि, इनमें से यदि एक भी संक्रमित अपने गाँव में चला गया तो पूरे गाँव भर में ही संक्रमण फैला देगा। मैं यह इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मैं जानता हूँ कि इन्हीं मजदूरों में कारोबारियों और फैक्ट्री मालिकों के व्यक्तिगत स्टाफ जैसे कुक, ड्राइवर, सफाई कर्मचारी, माली आदि भी हैं। चूंकि, ये छोटे कारोबारी अपनी फैक्ट्री के पीर-बाबर्ची-भिश्ती-खर सभी होते हैं, इसलिये चमड़े और जूते के कारोबारी इटली और कंप्यूटर, फर्नीचर और कपड़े के कारोबारी चीन नियमित रूप से जाते ही रहते हैं।

अब यदि ये इटली, चीन या कहीं भी विदेश से लौटे होंगे तो उनके व्यक्तिगत स्टाफ में संक्रमण की आशंका तो होगी ही।

किससे डरते हैं मजदूर

एक बात यह भी लग रही है कि इन प्रवासी मजदूरों को किसी स्तर पर पूरी तरह षड्यंत्रपूर्वक उकसाया गया कि वे लॉकडाउन के दौरान दिल्ली या अन्य शहरों से अपने गांवों की ओर निकल लें। यदि वे यहां पर रहे तो भूख से मर जाएंगे। वर्ना एक साथ हजारों की संख्या में मजदूर सड़कों पर तो कभी भी नहीं उतर सकते थे। इसकी गहन जहंच होनी चाहिए। ये गरीब तो रोग से भी नहीं डरते। अगर डरते तो नरक जैसी झुग्गियों में नहीं रहते, जहां से शायद आप गुजरना भी न पसन्द करें। वे सिर्फ भूख से डरते हैं। यही भूख उन्हें उनके अपने गांव के सुन्दर परिवेश और परिवार से दूर नरक जैसी दुनिया में रहने को मजबूर कर देती है। उनका पेट भर रोटी का यही सपना टूटा या तोड़ दिया गया है और वे चल पड़े हैं मौत से बिना डरे उस जगह को जिससे उनकी नाल जुड़ी हुई है।

किस स्तर पर हुई गड़बड़

आप सरकारों की लाख कमियां निकालें या उन्हें बुरा-भला कहें पर ये किसी को रामभरोसे तो छोड़ती नहीं है। हालांकि दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार को जरूर ऐसे प्रयास करने चाहिए थे कि इन्हें अपने घरों से निकलने से रोका जाता। पर हुआ बिलकुल उलटा, केजरीवाल सरकार इस मोर्चे पर तो जरूर फेल हुई। स्थितियाँ जैसी उत्पन्न हुईं उससे तो यही कहा जा सकता है कि लॉकडाउन के मद्देनजर अपने गांव लौटने को मजबूर हुए इन मजदूरों के लिए केंद्र और राज्य सरकारें लगातार जरूरी कदम नहीं उठा रही थीं? बेशक, उनके लिए खाने-पीने का इंतजाम करने की हरसंभव कोशिश की जा रही है। फिर भी राजधानी दिल्ली में मजदूर रुकने को तैयार क्यों नहीं हैं। इन्हें तो अपने गांवों में जाने की ही जिद और जल्दी है। यही वजह है कि ये हजारों की संख्या में सड़कों पर आ गए हैं। अब चूंकि सारे देश में बंद वाली स्थिति है तो इन्हें बीच रास्ते में खाने-पीने की वस्तुएं कहां मिलेंगी? राशन मिलने में भी दिक्कत है और पहुँचाने में तो और भी भारी दिक्कत है। इन्हें रात को सोने की लिए कौन अपने घर में जगह देगा? इन्हें बीच रास्ते में कोई मंदिर, गुरुद्वारा या कोई और धार्मिक स्थान भी नहीं मिलेगा जहां ये रात गुजार सकें। ये सबके सब भी बंद हैं। इन सबके साथ छोटे-छोटे बच्चे भी हैं। वे कैसे इतना लंबा रास्ता तय कर सकेंगे? अब तो ऐसी खबरें आ रही हैं कि लोग पैदल चलकर जब अपने गाँव पहुंचे तो गाँव वालों ने गाँव की सीमा में घुसने ही नहीं दिया। पुलिस के बीच बचाव पर इन्हें दो-तीन हफ्ते आइसोलेशन में रखा गया। तो फिर इन मजदूरों को सरकारी मेहमान बनना ही बेहतर है न कि अपने ही गाँव में ही जाकर बेइज्जत होना।

बहरहाल, इन प्रवासी मजदूरों ने देश को अपनी दर्दनाक हालत की जानकारी सबको दे ही दी है। शहरी मिडिल क्लास और धनी हिन्दुस्तानियों को क्या पता कि इन किस्मत के मारों को जीवन में रोज ही कितने कष्ट झेलने पड़ते हैं। इन्हें क्या पता कि दिहाड़ी मजदूर अब भी रोज राशन खरीद कर खाता है। एक बेलदारी करने वाला अधिकतम छह सौ रुपये रोज कमाता है। दिहाड़ी मजदूर तो तीन सौ से चार सौ। हालांकि वह राशि रोज मिलने की कोई गारंटी भी नहीं है। ज्यादातर हफ्ते में एकबार। चार लोगों के परिवार के लिए दो किलो आटा, पावभर रिफाइंड तेल साथ में सब्जी-भाजी, दाल-चावल, चीनी-चाय की पत्ती, मसाला आदि खरीदने में उसकी औसत दिहाड़ी समाप्त हो जाती है। रसोई को रोज चलाने और पेट भर खाने के लिए पूरे परिवार को कमाना पड़ता है। और उसमें पान, बीड़ी, सिगरेट का खर्च अलग। बीमारी में तो और भी मुश्किल। गांव में रहने वालों से रिश्तेदारी-नातेदारी भी निभानी पड़ती है। आखिर बच्चों के शादी-ब्याह उसी गाँव से करने होते हैं उन्हें। ऐसे में इक्कीस दिनों के लॉकडाउन ने इन्हें हिलाकर रख दिया। इन्हें लगा कि अपने गांव जाने के अतिरिक्त रास्ता ही क्या है? यह ठीक है कि स्थिति अभी बहुत ही खराब है, पर इसे और खराब होने से बचाने के लिए सरकार और समाज को मिलकर आगे तो आना ही होगा। अफसरों को भी अफसरी छोड़कर सेवाभाव से कम करना होगा। इन प्रवासी मजदूरों को यह नहीं लगना चाहिए कि ये मात्र वोटबैंक हैं।

(लेखक वरिष्ठ संपादक एवं स्तंभकार हैं।)

कलेक्टर के निर्देश पर किराणा व्यापारी पर एफआईआर दर्ज

माही की गूंज, खरगोन। महेश्वर के किराणा व्यापारी कमल सराफपर एफआईआर दर्ज कराई गई है। कलेक्टर श्री गोपालचंद्र डाड ने बताया कि जिले में प्रतिबंधात्मक आदेश लागू है और व्यापारी द्वारा निर्धारित दर से अधिक राशि वसूलने पर भारतीय दंड संहिता 1860 के अंतर्गत धारा 188 और आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 3 व 7 के अंतर्गत कमल किराणा दुकान एमजी रोड़ महेश्वर की एफआईआर दर्ज कराई गई है। कलेक्टर श्री डाड ने बताया कि ऐसे समय कई व्यापारी आगे आकर सेवा करने में जुटे है। जिनके पास सेवा का बड़ा माध्यम है, वो ऐसा करे, ऐसी उम्मीद नहीं की जाती है। ऐसी लापरवाही और व्यवहार कतई बर्दाश्त योग्य नहीं है। सोमवार को संयुक्त दल ने जांच की और जांच में सोयाबीन के 2 लीटर की केन जिस पर एमआरपी 200 रूपए प्रिंटेट थी, लेकिन दुकानदार द्वारा 240 रूपए वसूले गए। ऐसा व्यवहार किसी भी व्यापारी से उम्मीद नहीं की जाती है। इसलिए एफआईआर दर्ज कराई गई है। कलेक्टर श्री डाड ने अन्य व्यवसाईयों से अपील भी की है कि इन परिस्थितियों में एक-दूसरे के सहयागी बनें। यदि अन्य शिकायतें प्राप्त होती है, तो सख्त कार्यवाही की जाएगी।

विधायक वर्मा ने बड़गांव गुर्जर में मॉस्क वितरित किए

माही की गूंज, खण्डवा। जिले की ग्राम पंचायत बड़गांव गुर्जर में सरपंच बालकृष्ण करोडी द्वारा सेनेटाइजर का छिड़काव पूरे ग्राम में कराया गया हैं। विधायक देवेन्द्र वर्मा ने कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने हेतु सेनेटाइजर छिड़काव के कार्य की सराहना की। उन्होंने बड़गांव गुर्जर में ग्रामीणों को मॉस्क वितरित भी किए और पंचायत को गांव में साफ सफाई कराने के निर्देश दिए। उन्होंने उपस्थित सभी ग्रामीणों को घर में ही स्वच्छता, साफ सफाई के साथ रहने की सलाह दी। विधायक वर्मा ने राधास्वामी आजीविका स्वसहायता समूह द्वारा गोकुलगांव में निर्मित मॉस्क एवं सेनेटाइजर निर्माण कार्य की सराहना की। उन्होंने कहा कि स्वसहायता समूह की महिलाएं उचित मूल्य पर मॉस्क एवं सेनेटाइजर का विक्रय करें। उन्होंने समूह के प्रबंधन को बड़े स्तर पर मॉस्क एवं सेनेटाइजर का उत्पादन करने की सलाह दी और इस कार्य के लिए उन्होंने एक लाख रूपये राशि की स्वीकृति की अनुशंसा की।

पीड़ितों की मदद के लिए सम्पर्क करें

माही की गूंज, खण्डवा। समूचे देश में लॉक डाउन प्रभावशील है। इस कारण गरीब परिवार रोजगार से वंचित हो रहे हैं और उनके सामने भोजन का संकट भी पैदा हो रहा है। कलेक्टर तन्वी सुन्द्रियाल ने बताया कि प्रदेश सरकार एवं जिला प्रशासन अपनी तरफसे इसके लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। सभी लोग संकट की इस घड़ी में प्रशासन के सहयोग के लिए आगे आएं ताकि संकट की इस घड़ी में उत्पन्न स्थिति का सामना करने जिला प्रशासन समाज के हर तबके का सहयोग लेकर जरूरतमंदों को आवश्यक मदद पहुंचा सकें। जो भी सहयोग करना चाहता है तो कृपया अपर कलेक्टर नंदा भलावे कुशरे के मोबाइल नम्बर 09425015229, एसडीएम खण्डवा संजीव केशव पाण्डेय के मोबाइल नम्बर 09425373614 एवं नगर निगम आयुक्त हिमांशु सिंह के मोबाइल नम्बर 09425184018 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

कोरोना वायरस के बाद जागा जमीर

भ्रष्ट प्रशासनिक अमला व जनप्रतिनिधि ने जिले को भ्रष्टाचार मुक्त करने व प्रदेश को नई दिशा देने की वीडियो कांफ्रेसिंग द्वारा ली शपथ

माही की गूंज, झाबुआ। संजय भटेवरा

एक अप्रैल को पुलिस, आबकारी, खनिज, राजस्व, कृषि मंडी, आरईएस, पीएचई, बाल महिला विकास, सभी जनपद एवं जिला जनपद के साथ आदि सभी विभागों के अधिकारियों के साथ ग्राम पंचायत के सचिव व अपने कार्यकाल को पूरा कर चुके सभी सरपंच, नगर परिषद व नगरपालिका के अध्यक्ष सभी का विश्वव्यापी कोरोना वायरस के संक्रमण को देख ऐसा जमीर जागा कि उन्होंने एकमत होकर 1 अप्रैल को कलेक्टर के साथ सभी अधिकारी व जनप्रतिनिधियों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के साथ जुड़कर जिले को भ्रष्टाचार मुक्त करने व प्रदेश को नई दिशा देने की शपथ ली।

कोरोना वायरस के संक्रमण से कई शक्तिशाली देश में भीं मौत का तांडव देख रहे है। उक्त संक्रमण से मरने वाले व्यक्तियों को परिवार का कंधा भी नसीब नहीं हो पा रहा है। भ्रष्टाचार रूपी व्यवस्थाओं के साथ लाखों-करोड़ों कमा भी लेंगे तो भी व्यक्ति को एक कफन व दो गज जमीन ही नसीब होगी, तो फिर भ्रष्टाचार कर लाखों के व्यारे-न्यारे क्यों करें? जिस तरह से कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए पिछले 22 मार्च से आगामी लॉकडाउन खत्म होने तक बिना भ्रष्टाचार एवं पूर्ण ईमानदारी के साथ जिस तरह से प्रशासनिक कार्य कर रहे हैं। उसी तरह से हम पूरी मानवीयता के साथ आम लोगों के हक में बिना भ्रष्टाचार के कार्य करेंगे के मन्तव्य के साथ सभी ने कोरोना वायरस को साक्षी मानकर कलेक्टर के समक्ष शपथ लेकर कहा कि हम सभी अधिकारी व जनप्रतिनिधि भी हमारे वास्तविक मार्ग से भटक गए थे और अब कोरोना वायरस के संक्रमण के बाद से हम सभी विभाग के अधिकारी एवं पंचायत स्तर तक के जनप्रतिनिधि किसी प्रकार का भ्रष्टाचार नहीं करेंगे और जो पिछले समय में भ्रष्टाचार किया है, उसका पूरी ईमानदारी के साथ हमारे भ्रष्टाचार का लेखा-जोखा शासन को प्रस्तुत करेंगे।

शपथ समारोह की सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि, इस भ्रष्टाचार मुक्त शपथ समारोह की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से माही की गूंज टीम को भी जोड़ा गया और अधिकारियों एवं भ्रष्ट जनप्रतिनिधियों ने शपथ के दौरान कहा कि अगर आज ली गई शपथ से कोई मुकरता है और आमजन व गरीब की हाय लेकर भ्रष्टाचार करता है तो, भगवान हमें ऐसे वायरस के संक्रमण की बीमारी लगे की उस बीमारी से दूसरा कोई संक्रमित ना हो, सिर्फ भ्रष्टाचार को करने वाले व्यक्ति ही उस बिमारी से संक्रमित होकर ऐसी मौत मरे की पास में पानी भी रखा हो तो भी उस पानी को पीने के लिए तरस जाए। उसके अंतिम संस्कार में भी कोई शरीक ना हो, उसे सिर्फस्थानीय इकाई के सफाई कर्मी, जिस तरह से लावारिस पशु के मरने के बाद उनका अंतिम संस्कार किया जाता है उसी प्रकार से अंतिम संस्कार होगा। यह बात भी शपथ समारोह में कही गई।

न हम करेंगे न किसी को करने देंगे भ्रष्टाचार - शर्मा

शपथ समारोह की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान जिला पंचायत के सीईओ संदीप शर्मा ने गूंज को कहा कि, अब आगे से माही की गूंज में पंचायत स्तर पर भ्रष्टाचार के समाचार आपको लिखने को नहीं मिलेंगे। शर्मा ने स्वीकार कर कहा कि, यह सही है कि मैंने जिले में पदस्थ होते ही सभी ग्राम पंचायतों को उनके द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के पुराने आंकड़े नहीं देखूंगा। जिसके लिए मैंने 50 से 70 हजार रुपए तक लिए व भ्रष्टाचार को बढावा दिया। इसके अलावा भी जैसे कुकडीपाड़ा, मालखंडवी, मउडीपाडा कला, मोकमपुरा, असालिया, खोरिया, टेमरिया आदि ऐसी कई पंचायतों में सरपंच सचिवों ने कार्य ही नहीं किया और राशि आहरण कर ली गई, जिसमें हमने या जनपद सीईओ ने जिस-जिस ने संरक्षण देकर जो राशि ली है। वह भी राशि हम उसी ग्राम पंचायत स्तर पर जाकर जरूरतमंदों को दे देंगें। तो वहीं स्थानीय ग्राम पंचायत के विरुद्ध कार्यवाही के साथ राशि की रिकवरी कर गुणवत्ता युक्त सभी कार्य करवाया जाएगा। आज के बाद हम किसी प्रकार का भ्रष्टाचार नहीं करेंगे और नहीं करने देंगे, अगर हम भूल से भी भ्रष्टाचार करते हैं तो हमारा अंतिम संस्कार भी लावारिस मृत पशु की तरह ही किया जाएगा की घोषणा की।

अप्रेल फूल विशेष

भ्रष्टाचार का ही मिला मुझे फल - पंवार

आरईएस के जिला अधिकारी सुरेश पंवार ने कहा की दुर्घटना में मेरा पैर टुट गया। यह मुझे भ्रष्टाचार का ही फल मिला है और आज में 1 अप्रैल को छुट्टी पर होने के बावजूद भी घर पर से ही शपथ लेकर स्वीकार किया कि, हमारे सभी सब डिवीजन में जो भी जिले में जल स्तर को बढ़ाने के लिए तालाब बनाए हैं। हमने ग्रामों में तालाब के माध्यम से जल स्तर तो नहीं बढ़ाया, पर भ्रष्टाचार कर हमने हमारा आर्थिक स्तर जरूर बढ़ाया है। जिसका फल भी हमें मिल रहा है। उक्त सभी भ्रष्टाचार रूपी कार्य इंजीनियर, एसडीओ के द्वारा मेरे ही निर्देशन में हुआ है। अब हम उन सभी तालाबों को फिर से जो राशि भ्रष्टाचार के रूप में हमने प्राप्त की थी। वह राशि वापसी देकर उन सभी तालाबों का फिर से कार्य कर हमारे द्वारा गुणवत्ता युक्त तालाब बना दिए जाएंगे। वहीं अब आगे से कोई कार्य आरईएस में भ्रष्टाचार युक्त नहीं होकर सभी कार्य गुणवत्ता युक्त होंगे।

फर्जी होगें अब जिले से रवाना

सीएचएमओ बीएस बारिया ने शपथ के बाद कहा कि, जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर सुचारू रूप से स्वास्थ्य सुविधा मिलेगी और जो भी राशि मरीजों के हित के लिए आती है उन सभी राशि का लाभ मरीजों को ही मिलेगा। साथ ही जिले में झोलाछाप व फर्जी डॉक्टरों से प्रति माह रूपए लेकर हम आम लोगों की जान के साथ खिलवाड़ कर रहे थें यह सही है। बारिया ने कहा हम कोरोना वायरस के इस संक्रमण के थम जाने के बाद किसी भी फर्जी डॉक्टर से रिश्वत नहीं लेंगे और सभी फर्जी डॉक्टरों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही कर उन्हें यहां से रवाना कर देंगें।

स्कूलों में अब नहीं होगी फर्जी व घटिया सामग्री की सप्लाई

जिला सहायक आयुक्त ने उक्त समारोह में कहा कि, जिले में अब जो भी शासकीय फंड बच्चों की शिक्षा के लिए आता है। उस फंड से बच्चों की शिक्षा का स्तर बढ़ाया जाएगा। जिसमें किसी प्रकार का भी भ्रष्टाचार नहीं होगा। वहीं अब कोई भी विधायक हो या सांसद के दबाव में नहीं आएंगें और न ही उनके चाटुकारों को फर्जी रूप से व घटिया सामग्री स्कूलों में अब सप्लाई होन देंगे। वहीं स्कूलों में बच्चों को परीक्षा के दौरान रिजल्ट सुधारने हेतु जो टिपाने का कार्य चल रहा था व कमजोर बच्चो की फर्जी अनुपस्थिति का आंकड़ा बढ़ाकर प्राइवेट कर दिया जाता था। यह भी सिलसिला अब बंद कर दिया जाएगा।

पुलिस अब नही लेगी रिश्वत, जिले मे होगा जड़ से माफियाओ व अपराधियो का खात्मा

पुलिस विभाग के मुखिया विनीत जैन ने उक्त शपथ समारोह में गूंज को कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कहा कि, जिले में अब से किसी भी प्रकार की अनदेखी नहीं की जाएगी। जिले के पूरे पुलिस विभाग नें आज से शपथ ली है कि हम ने जो देशभक्ति जन सेवा की शपथ ली थी, उसी शपथ के अनुसार कार्य करेंगे और हम अपराधियों व माफियाओं से मिलने वाली नियमित मासिक एवं त्वरित रिश्वत को नहीं लेंगे। जिले में अब शराब, ड्रग्स, जुआ-सट्टा, भू-माफिया का राज खत्म कर अपराधियों पर अंकुश लगाकर जिस तरह से लॉकडाउन के दौरान जिले में अपराध का ग्राफनिल बटे सन्नाटा हुआ है। ऐसे ही अपराधियों के विरुद्ध नकेल कसकर हम आगे भी जिले में अपराध का ग्राफखत्म कर देंगे। सारंगी में हुई घटना जिसमें जिन ठेकेदारों के गुर्गो ने पुलिस कर्मचारियों की उपस्थिति में अवैध शराब की गाड़ी को पकड़ा और कानून के विरुद्ध जाकर गाड़ी में सवार लोगों को पीटा जिससे एक व्यक्ति की मौत हो गई यह सही है। हम हमारे इस भ्रष्टाचार मुक्त अभियान के साथ जुड़कर अब जिस किसी ने भी उक्त घटना को अंजाम दिया है, उन गुर्गो के साथ ही उनके आकाओं के विरुद्ध भी कार्रवाई की जाएगी।

फर्जी ऋण के साथ सभी भ्रष्ट कार्य की कोरोना के बाद 8 दिन में होगी कार्यवाही

इस शपथ समारोह की पूरी जानकारी कलेक्टर प्रबल सिपाहा ने देते हुए कहा कि, यह सही है कि जिले में भ्रष्टाचार का ग्राफअंतिम चरण तक आ गया था और मेरा भी जिले में, मेरे अधीनस्थ अधिकारियों पर अंकुश नहीं रहा है और इन्होंने मुझे भी मेरा हिस्सा निकालकर देते रहे थे, जिसके कारण ही मेरे द्वारा कोई सख्त कदम भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध नहीं उठाया जा रहा था। पर आज मूर्ख दिवस के उपलक्ष्य में सभी अधिकारियों व पंचायत स्तर तक के भ्रष्ट जनप्रतिनिधियों ने कोरोना वायरस के हाहाकार के बाद जमीर जागा और सभी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मेरे समक्ष शपथ ली है कि, कोई भ्रष्टाचार जिले में नहीं करेगा, तो अब मुझे भी हिस्सा मिलना बंद होना तय है। अब मैं सख्ती से कार्रवाई इस भ्रष्टाचार मुक्त अभियान के तहत करूंगा। सर्वप्रथम प्राथमिकता के साथ खवासा सोसाइटी में भगवानसिंह के परिवार के नाम से उसके ही भाई भामल संस्था के मैनेजर रहे चौनसिंह के विरुद्ध व इस तरह के सभी फर्जी ऋण मामले में 8 दिनों के अंदर ही कार्यवाही करूंगा। तो वही जिले में अतिक्रमण के नाम पर पेटलावद में पूनम गुर्जर जैसे जिस किसी भी पीड़ित परिवार का आशियाना टूटा है उनका मैं पक्का निर्माण करवाकर जल्द ही दूंगा। कलेक्टर ने कहा कि, जिस तरह से पेटलावद एसडीएम मालवीया ने प्रेम सागर के मालिक व बामनिया के फर्जी अग्रवाल कॉलोनी मालिक को संरक्षण देकर लाखों रुपए लिए हैं, ऐसे सभी अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही भी करूंगा और जिन-जिन भू-माफियाओं ने अवैध रूप से जमीनों पर कब्जा कर रखा है उस जमीन को मुक्त किया जाएगा व अवैध अग्रवाल कॉलोनी जैसी सभी अवैध कॉलोनियों के विरुद्ध तत्काल कार्यवाही कर जेल भेजा जाएगा।

आइएएस अधिकारी अपने बैचमेट के सहयोग से कर रहे है जिले के ग्रामीणों की मदद

माही की गूंज, खण्डवा।

कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के लिए देशभर में किए गए लॉक डाउन से परेशान खण्डवा जिले के ग्रामीणों की मदद के लिए जिले के आय.ए.एस. अधिकारी अपने बैचमेट व अन्य परिचित आईएएस अधिकारियों का सहयोग भी ले रहे है। कलेक्टर श्रीमती तन्वी सुन्द्रियाल ने बताया कि छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में पदस्थ उनके आय.ए.एस. बैचमेट रानू साहू के सहयोग से उन्होंने वहां फँसे खण्डवा जिले के परेशान ग्रामीणों के पुनर्वास की व्यवस्था करवाई। इसके अलावा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री रोशन कुमार सिंह एवं हरसूद एसडीएम डॉ. परीक्षित झाडे ने भी अपने बैच के साथी आय.ए.एस. अधिकारियों के सहयोग से खण्डवा जिले के आदिवासी गरीब परिवारों की महाराष्ट्र के पुणे, ओरंगाबाद व गुजरात के सूरत , हिम्मतनगर में ही भोजन व आवास की व्यवस्था करवाई है।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं वर्ष 2015 बैच के आईएएस अधिकारी श्री रोशन सिंह ने बताया कि हरसूद विधायक कुंवर विजय शाह के माध्यम से उन्हें जब यह जानकारी मिली कि गुजरात के हिम्मतनगर व अहमदाबाद में खालवा तहसील के कोरकू आदिवासी अमर, राजू, माल्या, सुभाष, सूरज, रवि, किशोर, नारायण, मंशाराम, रामदास सहित लगभग 20 लोग लॉकडाउन के कारण फँसे हुए है तथा गरीबी के कारण उनके भोजन व ठहरने की व्यवस्था नही हो पा रही है। उन्होंने वहां पदस्थ अपने साथी आय.ए.एस. अधिकारियों को फोन कर खण्डवा जिले के आदिवासी परिवारों की जानकारी दी और उनके वहां रूकने व खाने, पीने तथा स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था भी की। मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री रोशन सिंह पुणे में उनके साथी आयएएस अधिकारी श्री आयुष प्रसाद जो कि जिला परिषद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी के रूप में पदस्थ है, उनसे सम्पर्क कर खण्डवा जिले के आदिवासी परिवारों के पुणे में ही रूकने एवं भोजन की व्यवस्था करवाई गई। श्री आयुष प्रसाद ने स्वयं इन आदिवासी परिवारों से भेंट की और उनके लिए की गई व्यवस्था के फोटो भी शेयर किए। मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सिंह ने बताया कि कालमुखी ग्राम के 12 मजदूर सूरत जिले की मांगरोल तहसील के ग्राम हथोडा में लॉकडाउन के कारण फँसे हुए है, उनकी मदद भी वहां के साथी आयएएस अधिकारियों के माध्यम से आज की है। उन्होंने बताया कि रविवार को ओंरगाबाद, सूरत व गुड़गांव में पदस्थ साथी आयएएस अधिकारियों के माध्यम से वहां फँसे खण्डवा जिले के ग्रामीणों के लिए आवश्यक व्यवस्था की गई है।

इसी तरह भारतीय प्रशासनिक सेवा के वर्ष 2017 बैच के अधिकारी एसडीएम हरसूद डॉ. परीक्षित झाडे ने बताया कि उन्हें यह खबर मिली कि रोशनी तहसील के ग्राम आवल्या में उमरिया जिले के 19 मजदूर फँसे हुए है, जिसके लिए उमरिया जिले में पदस्थ आयएएस अधिकारी श्री योगेश भरसट से उन्होंने बात की तथा यहां से मजदूरों को विशेष वाहन से उमरिया तक पहुंचाने की व्यवस्था की। उन्होंने बताया कि अहमदाबाद में पदस्थ उनके बैच की आयएएस अधिकारी सुश्री सुरभि गौतम से बात कर उन्होंने खण्डवा जिले के खालवा विकासखण्ड के आदिवासी परिवारों के लिए आवश्यक व्यवस्था करवाई। डॉ. झाडे ने बताया कि ओंरगाबाद महाराष्ट्र में लॉकडाउन के कारण परेशान खण्डवा जिले के ग्रामीण परिवारों की मदद के लिए उन्होंने वहां पदस्थ आयएएस अधिकारी भाग्यश्री विस्पुते से चर्चा की एवं उनके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करवाई।

निमाड़ टमाटर उत्पादक संघ निःशुल्क सब्जियां देने को तैयार

माही की गूंज, खरगोन।

कोरोना वायरस के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए प्रशासन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधात्मक आदेश के कारण आवागमन बंद होने से बाजार और गरीब वर्ग के लोगों के बीच सब्जियों की खपत निःशुल्क करने के लिए निमाड़ टमाटर उत्पादक संघ आगे आया है। निमाड़खेड़ी के कृष्णपालसिंह मौर्य ने बताया कि जिले सहित बड़वानी, धार के कई नगरों के किसानों का समुह है, जो न सिर्फतकनिकी जानकारियां आपस में शेयर करते है, बल्कि आवश्यकता होने पर एक-दूसरे को मदद भी करने में आगे रहते है। इस ग्रुप में 256 से अधिक किसान और मार्केटिंग के विशेषज्ञ भी शामिल है, जो आपस में मिलकर कार्य करते है। आज प्रदेश सहित देश में बड़ी आपदा हम सभी के सामने खड़ी है। ऐसी स्थिति में निमाड़ टमाटर उत्पादक संघ के करीब 50 किसान, जिनके पास न सिर्फटमाटर बल्कि करेला, भिंडी, गिल्की और ककड़ी सहित अन्य सब्जियां भी उपलब्ध है, जिसे प्रशासन चाहे, तो किसानों के खेतों से निःशुल्क लेकर गरीब तबके के लोगों को प्राथमिकता के आधार पर बांट सकते है। इन किसानों ने अपनी सहमति देते हुए निमाड़ सब्जी दानदाता समुह के नाम से एक अलग व्हाट्सअप पर ग्रुप भी बनाया है, जिसमें प्रशासनिक अधिकारी भी जुड़कर किसानों से संपर्क कर आवश्यक मात्रा में खेतों से सीधे सब्जियां प्राप्त कर सकता है।

कृषि में एमएससी शिक्षा प्राप्त किए कृष्णपाल मौर्य ने बताया कि फिलहाल 50 किसानों ने निःशुल्क सब्जी प्रदान करने को लेकर अपनी सहमति दी है। इन किसानों में न सिर्फ खरगोन, बल्कि कुक्षी, मनावर, लोनारा, भीकनगांव, सनावद के किसान भी शामिल है। हम लोगों के पास अलग-अलग प्रकार की करीब 100 टन सब्जियां उपलब्ध है। हम सिर्फ प्रशासन को यह सब्जियां प्रदाय करेंगे। इसके अलावा 10 से 20 टन टमाटर और पीली मिर्च भी उपलब्ध है।

कलेक्टर ने पंधाना व बोरगांव बुजुर्ग में व्यवस्थाएं देखी

माही की गूंज, खण्डवा। जिले में कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने हेतु लॉक डाउन किया गया है। इस दौरान नागरिकों को सलाह दी गई है कि वे घरों में ही रहे तथा स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। लॉक डाउन के कारण नागरिकों को कम से कम परेशानी हो इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा व्यवस्थाएं की गई है। इन व्यवस्थाओं की मॉनिटरिंग के लिए कलेक्टर श्रीमती तन्वी सुन्द्रियाल ने पुलिस अधीक्षक डॉ. शिवदयाल सिंह के साथ पंधाना व बोरगांव बुर्जुग का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने एसडीएम पंधाना श्री राहुल गुप्ता को निर्देश दिए कि लॉक डाउन व्यवस्था को सख्ती से लागू करायें। उन्होंने एसडीएम पंधाना कार्यालय में स्थापित कॉल सेंटर व कन्ट्रोल रूम का भी निरीक्षण किया। कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने पंधाना में सब्जी विक्रय के लिए दुकानदारों एवं ग्राहकों के बीच सोशल डिस्टेंसिंग के प्रावधानों का पालन कराने के लिए चूने की लाइनिंग कराने की व्यवस्था भी देखी।

कलेक्टर सुन्द्रियाल व पुलिस अधीक्षक डॉ. सिंह ने इस दौरान बोरगांव पुलिस चौकी एवं पंधाना थाना का दौरा भी किया। उन्होंने पंधाना थाना में ड्यूटीरत स्टॉफके रूकने की व्यवस्था की जानकारी भी थाना प्रभारी से ली। कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने बोरगांव चौकी प्रभारी द्वारा मॉनिटरिंग के लिए लगाए गए सीसीटीवी के नियंत्रण कक्ष को भी देखा और उनके प्रयासों की सराहना की। उन्होंने बुरहानपुर सीमा पर अस्थाई चौकी स्थापित कर वहां से निकलने वाले यात्रियों व वाहनों की मॉनिटरिंग कार्य का भी जायजा लिया। कलेक्टर श्रीमती सुन्द्रियाल ने चौकी प्रभारी को निर्देश दिए कि दूसरे जिलों व राज्यों से आने वाले यात्रियों का सीमा पर रेपिड रिस्पोंस टीम के माध्यम से स्वास्थ्य परीक्षण करायें, यदि यात्री भूखे हो तो उन्हें खाना भी खिलवाये तथा आसपास के जिलों तक बिना वाहन के पद यात्री जा रहे हो तो उनके लिए आरटीओ व संयुक्त कलेक्टर श्री सिंघाड़े से चर्चा कर वाहन व्यवस्था करायें तथा जिस पड़ोसी जिले में यात्री भेजे जाये वहां के जिला प्रशासन को सूचित भी किया जाये।

युवाओं ने पुरानी मशीन को अपडेट कर बनाया वेंटिलेटर

माही की गूंज, थांदला। मुकेश भट्ट

कोरोना वायरस के संक्रमण पाए जाने के पश्चात मरीज को वेंटिलेटर पर रखना होता है, लेकिन प्रदेश या देश में इतने अधिक वेंटिलेटर उपलब्ध नहीं हैं। जिससे हजारों की तादाद में अगर मरीजों की संख्या बढ़े, तो उन्हें वेंटिलेटर दिया जा सके। देश की इस समस्या को ध्यान में रखते हुए थांदला नगर के आशीष कारा ने फेसबुक पर पोस्ट डाली कि क्या किसी प्रकार से मैनुअल वेंटीलेटर मशीन को तैयार किया जा सकता है। क्या ऐसे कोई साधन का जुगाड़ करके वेंटिलेटर के रूप में कार्य करने वाली मशीन को बनाया जा सकता है? उक्त पोस्ट को एक निजी ग्रुप में फेसबुक पर शेयर किया गया, उक्त पोस्ट को थांदला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में तत्कालीन पदस्थ एक पुराने कर्मचारी अय्यूब खान ने देखा। उन्होंने याद किया कि ऐसी एक मशीन 15 साल पहले थांदला हॉस्पिटल में पोर्टेबल मैनुअल वेंटिलेटर मशीन आई थी। जिसका बिल्कुल भी उपयोग नहीं किया गया, परंतु वह अब किस हालत में होगी कैसी होगी एक सोचनीय विषय था।

अय्यूब खान ने उक्त बात ग्रुप एडमिन आशीष कारा तक पहुंचाई। कारा ने डॉक्टर यश तलेरा जो कि कुछ समय पहले भोपाल के चिरायु हॉस्पिटल से प्रैक्टिस कर थांदला लौटे हैं, जिन्हें वेंटीलेटर किस तरह से कार्य करता है व उसके किस वालों में किस तरह का प्रेशर आना चाहिए का अनुभव था। इसके साथ सिविल हॉस्पिटल पहुंचे अय्यूब खान एवं सेवानिवृत्त डॉ. किरण बाला चतुर्वेदी की मदद से उक्त मशीन को बाहर निकाला। मशीन की हालत बहुत खराब हो चुकी थी। उसके सारे पाइप लगभग खराब और ज्वाइंट सारे खत्म हो चुके थे। परंतु मशीन को ऑपरेट करने के लिए आवश्यक मशीन अभी भी चालू स्थिति में थी। चूंकि डॉ यश तलेरा भोपाल में प्रैक्टिस के दौरान मशीन पर कार्य कर चुके थे। उन्होंने बताया कि अगर इन में लगने वाली कुछ ऐसेसीरीज अगर उपलब्ध हो जाए, तो शायद ही वेंटिलेटर ट्रैवलिंग उपयोग में लाया जा सकेगा। फिर क्या था कुछ लोगों को जो कि हाल में कोरोना वायरस के लोगों के दौरान आमजन की मदद में लगे पार्षद गोलू उपाध्याय एवं टीम ने वेंटिलेटर मशीन को ठीक करने के लिए आवश्यक जुगाड़ की समस्त सामग्री उपलब्ध कर दी। जिन सामग्रियों की आवश्यकता थी उनका एक फेसबुक पोस्ट बना दिया कि इस तरह की सामग्री किसी के पास भी उपलब्ध है तो वह संपर्क करें।

हार्डवेयर व्यापारी राहुल तलेरा ने फोन करके उक्त टीम को सूचित किया कि मेरे पास इसमें की सामग्री उपलब्ध है और आप इसे ले जा सकते हैं और उपयोग कर सकते हैं। समस्त आवश्यक सामग्री मिलने के पश्चात वह 2 दिन की इस मेहनती जुगाड़ में उक्त वेंटीलेटर को जॉइंट किया गया। ऑक्सीजन सिलेंडर से और वर्तमान में थांदला सिविल हॉस्पिटल में पदस्थ डॉक्टर कमलेश परस्ते एवं डॉ मनीष दुबे को उक्त वेंटिलेटर की टेस्टिंग हेतु बुलाया गया। दोनों डॉक्टरों ने उक्त मशीन को चेक करा उसकी पंपिंग को टेस्ट करा तो उन्होंने देखा कि मशीन सही तरह कार्य कर रही है व भविष्य में इसका उपयोग किया जा सकता है। उक्त वेंटीलेटर पूर्ण रूप से साफकरने हेतु सैनिटाइजर , विषाणु मुक्त किया जा रहा है। सभी ने डॉक्टर के स्थल एवं पूरी टीम जिसने इस मशीन को पुनः स्थापित करने में योगदान दिया की सराहना की। मशीन को पूर्ण रूप से उपयोगी बनाकर उसका टेस्टिंग संक्रमित मरीज पर किया जाना बाकी है।

महामारी से लड़ने में महिला समूह पीछे नहीं

माही की गूंज, खरगोन। मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा निर्मित आजीविका स्व सहायता समुह इन दिनों कोरोना जैसी महामारी से लड़ने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। एनआरएलएम डीपीएम सीमा निंगवाल ने बताया कि जिलें में गठित महिला समुह अपनी स्वेच्छा ऐसे कार्य कर रही जो वास्तव में सामजिक कार्य भी है और कोरोना के प्रति अपना समर्पण भी दिखा रही है। कसरावद जनपद के बिलगांव के समुह ने अब तक दो हजार से अधिक मॉस्क बनाने का कार्य किया है। इसी तरह सेंगॉव में जनपद सीईओ की मांग पर जितना कपड़ा उपलब्ध उसका उपयोग करते हुए 100 से अधिक मास्क बनाए है। इतना ही नहीं बड़गॉव और बमनाला महिला समुह ने न सिर्फमास्क बनाने का कार्य किया है बल्कि फिनालय और सेनिटायजर भी बना रही है। इन्होने अब तक 2500 लीटर फिनायल और सेनिटायजर बनाने का कार्य किया है। डीपीएम सीमा ने बताया कि इन समुहो के पास अब कच्चा माल नही होने के कारण कार्य नही कर पा रही है अगर इनके पास कच्ची सामग्री उनलब्ध हो जाए तो और अधिक सामग्री बना सकती है। अभी इनके पास काफी लोगो के कॉल आ रहे है।

लॉक डाउन में पलायन, सामने आए फरिश्ते, समाजसेवियों ने किया सहयोग

छोटे बच्चे और महिलाएं 500 किमी पैदल चलकर घर तक पहुंच रहे

माही की गूंज, पेटलावद।

पेटलावद के अधिकारियों और समाजसेवियों ने एक बार फिर मानवता का परिचय देते हुए गुजरात से पैदल आ रहे आदिवासी मजदूरों के लिए भोजन और गंतव्य तक पहुंचाने में सहयोग प्रदान किया। मजदूर छोटे बच्चों और महिलाओं के साथ बिना किसी सुविधा के पैदल चल रहे है। जिसमें बच्चों की हालत काफी खराब। पेटलावद एसडीएम एमएल मालवीय और गौतम रूप के सहयोग से इन मजदूरों को भोजन और वाहन सुविधा उपलब्ध करवाई गई।

लॉकडाउन के तीसरे दिन भी गुजरात से पैदल मजदूरों का आने का दौर लगातार जारी है। मजदूर 500 से 600 किमी की दूरी पैदल तय कर अपने गंतव्य तक पहुंच रहे है। किंतु रास्ते में उन्हें किसी प्रकार की कोई सुविधा या खाने पीने के साधन नहीं मिल पा रहे है। जिस कारण से वे काफी परेशानी का सामना कर रहे है। इस स्थिति को देखते हुए पेटलावद नगर के कुछ समाजसेवी आगे आए और उन मजदूरों की मदद के लिए अपने स्तर से कुछ प्रयास किए। जिसमें गौतम रूप द्वारा अन्य लोगों के सहयोग से ग्रामीण आदिवासी मजदूरों के लिए खाने के लिए सेव परमल की व्यवस्था की गई और उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए वाहन की व्यवस्था की गई।

बच्चों के साथ पैदल यात्रा

तीन दिन पूर्व सूरत से निकले मजदूर शुक्रवार को पेटलावद पहुंचे।जिनके साथ में छोटे बच्चे भी है। जिन्हें तीन दिनों तक पैदल चलने के बाद भी कोई सुविधा या सहायता नहीं मिली। इन मजदूरों के दल को उज्जैन जाना था। पेटलावद पहुंचने पर गौतम रूप,बुद्धिलाल कहार, सौरभ चतुर्वेदी, विकास चौहान,भूपेंद्र राठौड,हरिश राठौड, निलेश सोनी, अर्जुन ठाकुर आदि ने सहयोग कर सेव परमल, बिस्कीट और गाडी की व्यवस्था कर उज्जैन तक पहुंचाया। वाहन को उज्जैन तक ले जाने के लिए एसडीएम एमएल मालवीय के द्वारा पास प्रदान किया गया। सभी समाजसेवियों ने एसडीएम से आग्रह कर वाहन का पास बनवाया। इस मौके पर हल्का पटवारी दुलेसिंह सिंगाड भी उपस्थित थे।

वाहन पलटा 16 लोग सवार

वहीं शुक्रवार सुबह करवड के समीप गुजरात से नागदा की ओर जा रहा एक ट्रेवलर वाहन पलटी खा गयां। जिसमें 16 लोग सवार थे जो की गुजरात से नागदा जा रहे थे। वाहन पलटी खाने के बाद 6 लोगों को चोट लगी जिनका उपचार पेटलावद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर करवाया गया। और बाकी लोगों को करवड के समाजसेवियों ने भोजन करवाया जिसके बाद उन्हें एक अलग वाहन करवा कर गंतव्य तक पहुंचाया गयाइन सभी 16 लोगों को प्राथमिक जांच भी की गई।

सकल व्यापारी संघ ने 7 दिनों में 10 हजार से अधिक जरूरतमंदों को करवाया भोजन

मूक पशुओं का भी रखा गया ध्यान, 7वें दिन 2200 जरूरतमंदों को भोजन के पैकेट बांटे

माही की गूंज, झाबुआ। नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) से बचाव हेतु 22 मार्च से झाबुआ शहर में लॉकडाउन लगा हुआ है। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 24 मार्च की रात 12 बजे से संपूर्ण देश में लॉक डाउन किया गया है। प्रधानमंत्री के लॉक डाउन के आदेश के बाद 25 मार्च से सकल व्यापारी संघ झाबुआ द्वारा शहर में रह रहे गरीब वर्ग के लोगों एवं जरूरतमंदों के लिए निःशुल्क भोजन के पैकेट की व्यवस्था की जा रही है। जिससे लॉकडाउन के दौरान बाजार एवं दुकानें बंद होने से ऐसे लोगों की भूख शांत हो सके। इसके साथ ही इस बीच शहर में घूमने वाले पशुओं के लिए भी व्यापारी संघ आहार की व्यवस्था कर रहा है। बीते 7 दिनों में सकल व्यापारी संघ द्वारा 10 हजार से अधिक गरीबों और जरूरतमंदों के लिए भोजन की व्यवस्था की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त गुजरात एवं राजस्थान राज्य से लौटे 40 हजार से अधिक ग्रामीणों को नमकीन खिचड़ी एवं थुल्ली का भी वितरण किया जा चुका है।

संघ के अध्यक्ष नीरज सिंह राठौर ने बताया कि 31 मार्च, मंगलवार को व्यापारी संघ के पदाधिकारी-सदस्यों द्वारा 2200 गरीबें और जरूरतमंदों को भोजन के पैकेट वितरित किए गए। इस प्रकार 7 दिनों में कुल 10 हजार से अधिक लोगों को भोजन प्रदान किया जा रहा है। इसके अलावा इस दौरान शहर में इमरजेंसी सेवाओं में लगे पुलिसकर्मियों, स्वास्थ्य कर्मचारियों एवं अन्य किसी जरूरजमंदों के भी मोबाईल पर फोन आने पर उन्हें उनके स्थान पर जाकर यह सेवाएं प्रदान की जा रही है। यह कार्य लॉकडाउन तक आगामी दिनों में भी सतत जारी रखा जाएगा।

नहीं सजेगी सब्जी मंडी, नगर हित में व्यापारियों ने लिया निर्णय

माही की गूंज, बामनिया।

कोरोना वायरस के चलते पूरा देश एक हो गया है। नगर में वायरस के खतरे को लेकर लोग ज्यादा जाग्रत नहीं थे। ऐसे में नगर के युवा आगे आए और नगर समिति का गठन किया और नगर के व्यवस्था में सुधार किया। नगर में ही लग रही सब्जी मंडी के कारण भारी भीड़ हो रही थी। जिसे ग्राम पंचायत और नगर समिति के सहयोग से नगर के बाहर स्कूल मैदान में लगाना शुरू किया और नगर में प्रवेश के सभी रास्तों पर युवाओं ने गैर जरूरी कार्य से नगर में आ रहे वाहनों पर रोक लगाई। सब्जी मंडी नगर से बाहर लगने के बाद भी लोग सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं कर रहे थे। ऐसे में नगर के सब्जी विक्रेता नगर हित में आगे आए और उन्होंने सब्जी मंडी लगाने से मना कर दिया। सब्जी व्यवसाय करने वालों का कहना है कि लोग सब्जी के नाम पर घूमने आ रहे थे और सोशल डिस्टेंसिंग का बिलकुल पालन नहीं कर रहे थे। ज्यादातर ग्रामीण बिना मास्क के ही बाजारों में आ रहे थे। ऐसे में वायरस के फैलने की संभावना ज्यादा होती है। जिसको देख कर मंडी के माध्यम से सब्जी नहीं बेचने का निर्णय लिया गया।

लॉक डाउनः 24 घंटे ड्यूटी कर रहे हैं पुलिसकर्मी, स्वास्थ्य विभाग लोगों को कर रहा है जागरूक

माही की गूंज , सारंगी।

लॉक डाउन के तहत पूरा नगर सुनसान तथा बंद है। प्रशासन को लोगों का और सहयोग मिल रहा है। मन में कोरोना वायरस संक्रमण की भयावहता की तस्वीरें सुरक्षा साधनों के अभाव के कोरोना से निपटने के लिए यह तीन विभाग रात दिन लगे हुए हैं। वास्तव में यह हमारे हीरे हैं, जो अपनी जान जोखिम में डालकर भी हमारी जान की सलामती के जतन कर रहे हैं। आप भी इनके समर्थन का सम्मान करें, इन्हें व्यवस्था में पूरा सहयोग करें। स्वास्थ पुलिस स्थानीय प्रशासन का अमला जी जान लगाकर काम कर रहे हैं स्वास्थ्य विभाग में ग्रामीण क्षेत्र के कर्मचारी कोरोना लड़ाई में सबसे आम भूमिका निभा रहे हैं। इनके लिए महाराष्ट्र गुजरात राजस्थान से लौट रहे। ग्रामीण बड़ी चुनौती बने हुए हैं। कर्मचारियों द्वारा बाहर से आ रहे लोगों की लगातार जांच कर उन्हें घर में रहने की सलाह दी जा रही है। कोरोना वायरस के बारे में भी समझाया जा रहा है।

पुलिस विभागरूप लॉक डाउन सोशल डिस्ट्रेंसिंग मेंटेन करने वह लोगों का जमावड़ा रोकने में पुलिस अहम भूमिका निभा रही है। चौकी प्रभारी श्याम कुमावत ने बताया लगातार नगर में पुलिस जवान गश्त लगा रहे हैं लोगों को समझाइश दे रहे हैं कि आप अपने घरों में ही रहे से बाहर बिल्कुल नहीं निकले प्रशासन का पूरा सहयोग करें कम से कम लोगों के संपर्क में रहें एक दूसरे से दूरियां बना कर रहे बाजारों में फ़ालतू नहीं घूमे मास्क लगाए । ग्राम पंचायत सफाई कर्मचारी रू इस विकट परिस्थिति में भी ग्रामपंचायत के सफाई कर्मचारी भी नगर में लगातार सफाई कर रहे हैं बल्कि शहर को संक्रमण मुक्त रखने की अतिरिक्त जवाबदारी का बखूबी निर्वहन कर रहे हैं।

सोशल डिस्टेंसिंग के साथ ग्रामीण कर रहे लॉक डाउन का पालन

माही की गूंज, परवलिया। पूरे देश में लॉकडाउन की स्थिति बनी हुई है। वहीं गांव में पुलिस प्रशासन द्वारा एनाउंसमेंट कर ग्रामवासियों से अपील की जा रही है कि आप अपने घरों में रहे। साथ ही सभी व्यापारी बंधु से भी निवेदन कर बताया जा रहा है कि आप अपनी दुकान के बाहर 1 मीटर की दूरी पर चूने का घेरा बनाकर उसमें ग्राहक को खड़ा कर सामान दें। ताकि एक दूसरे के बीच में दूरी बनी रहे। साथ ही व्यापार सुबह 8 से 10 बजे तक ही संचालन करें।आवश्यक खाद्यान सामग्री दें। ग्राहकों से ज्यादा भाव ना लें। ग्राहक जो अनाज लेकर आ रहे हैं उसे भी उचित भाव में खरीदें। अगर इन नियमों का पालन नहीं किया गया तो शासन द्वारा कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस विकट परिस्थिति में आप और हम मिलकर लड़े व प्रशासन का सहयोग करें। 144 धारा के तहत कोई इन नियमों का उल्लंघन करता है, तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। कुछ व्यापारी द्वारा अपने दुकानों के सामने गोल घेरे बनाए है, लेकिन कुछ ने नहीं। जिसके बाद चौकी प्रभारी नीलम सिंह द्वारा उनको जाकर समझाइश दी जा रही है कि आप गोल घेरे बनाए भीड़ न करें व समय अनुसार दुकान खोले। पुलिस प्रशासन के सख्त रवैया से लॉक डाउन पूरी तरह से सफल हैं। गांव के युवा भी प्रशासन का सहयोग कर रहे हैं।

प्रवासी मजदूर वापस घरों की ओर लौटे

माही की गूंज, कुदनपुर।

जिले के ग्रामीण सूरत, पूना, बैंगलोर, अहमदाबाद, मुंबई, मद्रास आदि शहरों में मजदूरी के लिए गए थे। लॉक डाउन के चलते उनके वहां राशन पानी की भी व्यवस्था नहीं होने से वे सभी जैसे-तैसे निकल कर अपने गांव जाना चाहते हैं। 21 दिन बंद रहने से राशन और रुपए के अभाव में यह प्रवासी मजदूर गांवों की ओर लौट आए। मप्र और गुजरात की सीमा पर लौटने से कोरोना संक्रमण का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा था। शुक्रवार से रविवार तक लगातार प्रवासी मजदूरों की बेबसी और पैदल चलने के दृश्य ही देखने को मिले।

लॉक डाउन में बनी में फागिंग मशीन से छोड़ा गया धुआं, नालियों में डाली दवाई

माही की गूंज, बनी। लॉक डाउन के चलते कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए ग्राम पंचायत बनी ने हर गली मोहल्ले में फागिंग मशीन से धुएं छोड़ा। जिससे संक्रमण की रोकथाम हो सके। वही पंचायत द्वारा गांव की नालियों की साफ-सफाई कराई। जिसके बाद इसमें दवाई भी डाली गई। सरपंच राजू गणावा द्वारा फागिंग मशीन उपलब्ध नहीं होने पर ग्राम पंचायत रायपुरिया से मशीन किराए से लाकर पूरे गांव में मच्छरों से निजात पाने के लिए धुआं छोड़ा गया। इस कार्य में सरपंच राजू गणावा, समाजसेवी जीवन पाटीदार, पंच शांतिलाल पाटीदार, मणिलाल जैन, ऋषभ गुप्ता सहित अन्य नागरिकों का सहयोग रहा।

अलग-अलग दुर्घटनाओं में तीन की मौत, छाया परिवार में मातम

माही की गूंज, पेटलावद/रायपुरिया।

बुधवार 25 मार्च की शाम 6.30 बजे करीब रायपुरिया थाना क्षेत्र के गांव गोट में अपने खेत पर गेहूं निकाल रहे किसान के बेटे की मौत हो गई। पुलिस से मिलीजानकारी के अनुसार गोट निवासी प्रेमसिंह अपने खेत पर ट्रैक्टर थ्रेसर से गेहूं निकाल रहा था। जहां ट्रैक्टर के ऊपर 6 वर्षीय अमित पिता प्रेमसिंह मैड़ा अचानक निचे गिरकर घायल हो गया था। बच्चे को तत्काल इलाज के लिए रायपुरिया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। इस घटना से पूरे परिवार में मातम छा गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

हादसे में मौत

दूसरी घटना रात्रि 12.30 बजे के लगभग घटी। जिसमें तीन युवक गांव अमलवानी से शादी में शामिल होने के बाद सेमल कुंडिया अपनी मोटरसाइकिल से जा रहे थे। तभी रास्ते में उनकी मोटरसाइकिल का संतुलन बिगड़ गया और वह पुल के नीचे गिर गए। इस दौरान ईश्वर पिता मानसिंह डामोर निवासी अमलवानी उम्र 19 वर्ष की मौत हो गई। एसआई कुंवरसिंह चौहान ने बताया कि पुलिस ने जांच शुरू कर दी गई तथा दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पेटलावद भेजा गया।

कुएं में गिरने से मौत

तीसरी घटना ग्राम रायपुरिया थाना क्षेत्र के ग्राम मोरझरिया की है। जहां एक बालिका मझिला पिता धन्ना सिंगाड़ उम्र 9 वर्ष जो कि अपनी बहन के साथ खेलते-खेलते समीप स्थित कूएं में गिर गई। परिजनों को सूचना मिली और कूए पर आए इतने में बालिका की मौत हो चुकी थी। घटना सुबह 11 बजें करीब की बताई जा रही है। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पीएम हेतु पेटलावद सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भेजा।

सिविल डिफेंस वॉलेंटियर कर रहे जागरूक

माही की गूंज, झाबुआ। जिला होमगार्ड विभाग के कमांडेंट गुलाबसिंह एवं प्लाटून अधिकारी कटारे के मार्गदर्शन में सिविल डिफेंस वॉलेंटियर के करीब 15 सदस्य आदिवासी बाहुल जिले के प्रत्येक गांवों में जाकर नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) के प्रति ग्रामीणों को जागरूक करने का कार्य कर रहे है। यह स्वयं सेवक अपने-अपने ग्रामीण क्षेत्रों में खुद में भी कोरोना वायरस का संक्रमण फैलने के खतरे के बीच इसकी परवाह किए बगैर ग्रामीणों के बीच पहुंचकर उन्हें आवष्यक सावधानियां बरतने की सलाह दे रहे है। विशेष रूप से इन दिनों पड़ोसी राज्यों गुजरात एवं राजस्थान से लौट रहे ग्रामीणों को विशेष हिदायत एवं समझाइश दी जा रही है।

लॉक डाउनः परिवार सहित फंसे चाचा-भतीजे

माही की गूंज, बनी। ग्राम बनी में 19 मार्च को दशमी पर्व पर लगने वाले मेले में मुस्ताक भाई और उनका भतीजा अब्दुल दोनों राजस्थान से झूला लेकर मेला करने आये थे। दोनों चाचा भतीजे ने मेला तो खुशी-खुशी किया। मगर जब तक झूला खोल पाते उसके पहले ही प्रधानमंत्री ने कोरोना संक्रमण से निपटने के लिए तीन हफ्तों के लॉक डाउन की घोषणा कर दी। इस वजह से आवागमन के सारे साधन बंद होने के कारण इन लोगों को अपने परिवार सहित बनी में है रुकना पड़ा। दोनों परिवार में 12 सदस्य होने के कारण 30 मार्च को इन लोगों के पास राशन खत्म हो चुका था। इन लोगों ने गांव के नागरिकों के सामने अपनी समस्या बताई। जिस पर गांव वालों ने सरपंच और सचिव को इस बात की सूचना दी। सरपंच और सचिव ने मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए 30 हजार रुपए में से दोनों परिवार वालो को 5किलो शक्कर, 200ग्राम चाय पत्ती, 1किलो तेल, 2 किलो चावल, 30 किलो गेहूं आदि राशन दिया गया। यह सहायता प्रत्येक परिवार को अलग-अलग दी गई।

निकले थे घर के लिए, पहुंच गए इन्दौर

माही की गूंज, बनी।
ऋषभ गुप्ता

आज पूरा देश कोरोना के संकट का सामना कर रहा है। प्रधानमंत्री के निवेदन पर पूरा देश लॉक डाउन है। कोई भी आवागमन के साधन नहीं होने के कारण मजदूर वर्ग के लोगों को अपने घर तक पहुंचने के लिए सुबह के चार बजे से शाम तक कई घंटों पैदल चलने के लिए मजबूर होना पड़ा। बाजना के पास गांव पाड़लिया जोधपुरा के पांच सदस्य जो कि सूरत में मिस्त्री के साथ काम करते थे। काम बंद होने और कोरोना के भय के कारण अपने घर जाने को विवश होना पड़ा। मगर सूरत पुलिस ने उनको एक ट्रक को रुकवा कर बैठा दिया। रात के अंधेरे में इन लोगों को रास्ते का कोई पता नहीं चला। कई घंटों सफ़र करने के बाद जब इन लोगों ने ट्रक को रुकवाने की कोशिश की मगर ट्रक ड्राइवर ने इनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। शायद वो भूल गया होगा कि मैंने कोई सवारी पीछे बैठाई है।

इन लोगों के कई बार प्रयास करने पर ड्राइवर ने इंदौर से 62 किमी पहले गाड़ी रोककर सुबह चार बजे के करीब उतारा। तभी से ये लोग अपने गांव पहुंचने के लिए पैदल कई घंटों चलकर पेटलावद तहसील के गांव बनी पहुंचे। गांव के लोगों ने अजनबी लोगों को देखकर पूरी जानकारी ली, तब इन लोगों ने आप बीती घटना सुनाई। मगर कोरोना के डर से गांव कर लोगों ने दूरी बनाई रखी और उन्हें अपना मेडिकल चेकअप करवा के घर जाने के सलाह दी। कुछ समय बाद ये लोग किसी प्रायवेट वाहन से अपने घर की ओर निकल गए।

श्रीमाल परिवार का कोरोना वायरस पर नाटक सोशल मीडिया में छाया

माही की गूंज, पेटलावद।

तहसील के एक छोटे से ग्राम करवड के जैन समाज के एक परिवार ने बच्चों के साथ मिलकर एक ऐसा वीडियो बनाया है। जिसमें वह खुद नाट्य रूपांतरण करते हुए कोरोना वायरस की भूमिका निभा रहे हैं और भारत को एक संदेश दे रहे हैं कि यदि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा यह लॉक डाउन नहीं किया जाता तो हमारा कारोबार दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ जाता। लेकिन मोदीजी ने लॉक डाउन कर हमारे पूरे प्लान और कारोबार पुरा चौपट कर दिया है। लेकिन ग्रामीणों क्षेत्र में अभी भी लोगों को जानकारी का अभाव होने से पूरा गांव खुले हैं। वह पूर्ण रूप से लॉक डाउन नहीं है। जिस कारण नाट्य रूपांतरण में कोरोना वायरस ग्रामीण क्षेत्रों में जाने का प्रयास कर रहे हैं और यह संदेश दे रहे हैं कि ग्रामीण क्षेत्र को भी पूरी तरह लॉक डाउन नही किया गया तो ग्रामीण क्षेत्रों से एक बड़ी तादाद में लोग संक्रमित होने का डर है। फ्लिहाल पुलिस अपना काम मुस्तैदी से कर रही है, लेकिन फ्रि भी लोग बेवजह मोटरसाइकिल पर घूम रहे हैं और जिले में एक दूसरे स्थान पर आसानी से पहुंच रहे हैं। ग्राम करवड का यह वीडियो सोशल मीडिया पर इन दिनों खूब वायरल हो रहा है। लोग इस वीडियो को लाइक और शेयर भी कर रहे हैं और धन्यवाद भी दे रहे हैं कि उन्होंने किस तरह कोरोना वायरस बनकर भारत और हमारे समाज का संदेश दिया है कि वे किस तरह कोरोनावायरस से बच सकते हैं।

छापरी सरपंच ने बांटे मास्क, स्वच्छता को लेकर दी समझाइश

माही की गूंज, झाबुआ। नोवल कोरोना वायरस को देखत हुए छापरी गांव में संरपच ने मास्क का वितरण किया। जिसमें 1000 से ज्यादा लोगों को मास्क बांटे गए। सरपंच दिनेश अमलियार ने बताया गया कि लोगों में जागरूकता लाने के लिए मास्क का वितरण किया गया। साथ ही मास्क का उपयोग करने और हाथों को हर घण्टे साबुन से धोने के बारे में समझाइश भी दी गई। इसके साथ ही बताया कि भीड़भाड़ वाले इलाके से दूरी बनाए रखने और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने के लिए जागरूक किया गया। सरपंच ने बताया कि ग्रामीणों को लॉक डाउन का पालन करवाने और सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने की भी बात बताई ताकि वह बीमारी से बच सकें।

गायब सरकारी डॉक्टरों को शासकीय अस्पताल में रहने के लिए जारी किया पत्र

कोरोना जैसे गंभीर बीमारी से लड़ने में डॉक्टर दिखा रहे उदासीनता

माही की गूंज , पेटलावद।

इस विकट घड़ी से जब पूरा विश्व मौत के मुंहने पर खड़ा है और जीवन में हर व्यक्ति अब भगवान को याद कर रहा है। आज का भगवान है डॉक्टर। पेटलावद के ग्रामीण इलाकों के डॉक्टर घर को रवाना हो गए। ऐसे में ग्रामीण इलाकों के मरीज पेटलावद स्वास्थ्य केंद्र के भरोसे हैं, लेकिन यहां पदस्थ अधिकांश डॉक्टर अपने कर्तव्य का पालन करने की बजाए मैदान छोड़ कर गायब हो गए हैं। वही कुछ दिनों पूर्व ही नगर को नए निजी हॉस्पिटल की सौगात दे कर नगर में अच्छी स्वास्थ्य की उम्मीद जगाने वाले डॉक्टर जो पूर्व में पदस्थ स्वास्थ केंद्र में पदस्थ थे, वो भी अब अपना क्लिनिक बंद कर अपने मुश्किल समय में बाहर निकल गए। जबकि पेटलावद की जनता को इस विकट परिस्थितियों में सबसे अधिक आवश्यकता थी।इसके साथ ही शहर का एक बहुचर्चित हॉस्पिटल जो शासकीय हॉस्पिटल की सेटिंग से पेसेंट अपने यहां स्थानांतरित करवाकर करोड़ों रुपए कमा चुका है, वो भी पेसेंट्स को अपने यहां से भगा रहे हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ दोनों डॉक्टर पति पत्नी केवल इमरजेंसी में इलाज करने की बात कर रहे है। वही शासकीय परिसर में भी दिखाई नहीं दे रहे।

ओपीडी पर बिना सोशयल डिस्टेंड के लगी भीड़।

ड्यूटी टाइम में गायब डॉक्टर।

शासन ने निजी हॉस्पिटलो को अधिगृहित कर लिया है पर उन्होंने यह नहीं कहा कि आप मरीजों को मत देखो और शहर में अभी कोई कोरोना से संक्रमित भी नहीं है। फ़िर ये हॉस्पिटल आम पेसेंट्स से दूरी बनाकर भाग रहे हैं। सरकार लाख दावे करें पेटलावद के शासकीय हॉस्पिटल में सारे दावे खोखले साबित हो रहे हैं। यह हॉस्पिटल अब वास्तव में भगवान भरोसे है। यहां भगवान रूपी डॉक्टर नदारद है। सरकारी अस्पताल में एक डॉक्टर दंपति भी पदस्थ है। उसमें मैडम साहिबा ने तो हॉस्पिटल आना ही बंद कर दिया है। खुद को बिना कोरोना के ही आइसोलेट कर लिया है और साहब राउंड लगा कर चले जाते हैं। यहां जब हमने एक कर्मचारी से जानकारी ली तो एक कर्मचारी ने बताया कि सामान्य बीमारी से पीड़ित सारे मरीजों की शासन के आदेश से छुट्टी कर दी है। केवल बाहर से आ रहे पेसेंट्स की ही जांच की जा रही हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या वाकई में प्रशासन ने ऐसा कोई आदेश जारी किया है? क्या बाकी मरीजों को मरने के लिये छोड़ने का प्रशासन ने आदेश जारी किया क्या?

क्या कोरोना के नाम पर बाकी की कोई सुध नहीं लेना है। मामले में बीएमओ एमएल चौपड़ा का कहना है कि सभी पदस्थ डॉक्टरों को लेटर जारी कर स्वास्थ्य केंद्र में रहने के सख्त निर्देश जारी कर दिए गए है। बीएमओ ने बताया कि फ़िलहाल निजी हॉस्पिटलों को शासन द्वारा अधिग्रहित करने के संबंध में कोई शासन द्वारा कोई आदेश नहीं दिया है।

लॉक डाउन के दौरान रहेगा स्वैच्छिक रक्तदान का आयोजन

माही की गूंज, झाबुआ। राज्य शासन ने सभी जिला कलेक्टरों को निर्देश दिये हैं कि आम नागरिकों से जिले के शासकीय ब्लड बैंक में अपाइंटमेंट लेकर स्वैच्छिक रक्तदान के लिये अपील जारी करें। लॉक डाउन के कारण स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित नहीं कर पाने के कारण ब्लड बैंक (ब्लड सेंटर) में रक्त की कमी को देखते हुए यह कार्यवाई की गई है। आयुक्त लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रतीक हजेला ने कलेक्टर्स से कहा है कि जिले के ब्लड बैंक द्वारा स्वैच्छिक रक्तदाता के मोबाइल नंबर, ई-मेल पर रक्तदान के लिये अपाइंटमेंट लेटर भेजा जाए। स्वैच्छिक रक्तदाओं को ब्लड सेंटर द्वारा भेजा जाने वाला अपाइंटमेंट लेटर ही रक्तदान के दिन एवं समय के लिये पास के रूप में मान्य किया जाये।

मध्यप्रदेश के निवासी लॉक डाउन के दौरान कही फंसे हो तो 104 तथा 180 पर कॉल करें

माही की गूंज, झाबुआ। यदि मध्यप्रदेश के निवासी लॉक डाउन के दौरान कही फंस गए हैं तो मद्द के लिए भोपाल स्थिति नम्बर 104 या 180 पर कॉल करे। इसी तरह मध्यप्रदेश के निवासी प्रदेश के बाहर कही फसे है तो मदद के लिए 0755-2411180 पर कॉल करें।

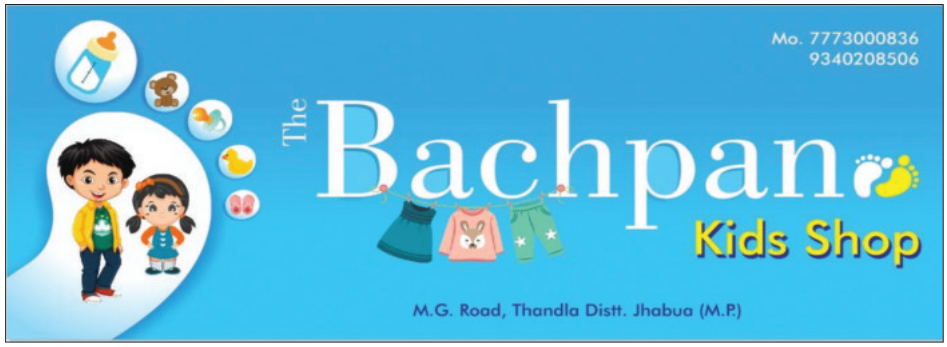

आज और कल रहेगा झाबुआ जिले में संपूर्ण लॉक डाउन

आवश्यक चीजों की घर पहुंच सेवा मिलेगी, कलेक्टर ने जारी किए सख्त आदेश

माही की गूंज, झाबुआ। जिला कलेक्टर प्रबल सिपाहा ने कोरोना वायरस (कोविड-19) से रोकथाम हेतु एवं जिलेवासियों से सोशल डिस्टेंस का पूर्णतः पालन करवाने के लिए कड़े कदम उठाए है। जिसमें 1 से 3 अप्रैल तक झाबुआ जिले में संपूर्ण लॉक डाउन रहेगा। इन तीन दिनों में कोई भी व्यक्ति अपने घरों से बाहर नहीं निकलेगा। दो एवं चार पहिया वाहन भी नहीं चलेंगे। लोगों को प्रतिदिन की रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुएं सकल व्यापारी संघ, किराना, सब्जी, दूध व्यवसाइयों के माध्यम से घर पहुंच सेवा से ही प्रदान की जाएगी।

कलेक्टर प्रबल सिपाहा ने बताया कि मप्र की महानगरी इंदौर में कोरोना वायरस (कोविड-19) के लगातार संक्रमित मरीजों के आने के चलते मप्र शासन के निर्देश पर इंदौर कलेक्टर द्वारा इंदौर में तीन दिन का संपूर्ण लॉक डाउन किया गया है। इसी क्रम में झाबुआ जिले में सोशल डिस्टेंसिंग का कड़ाई से लोगों से पालन करवाने के लिए 1 से 3 अप्रैल तक तीन दिनों का संपूर्ण लॉक डाउन के आदेश जारी किए गए है। जिसके तहत इन तीन दिनों में कोई भी व्यक्ति अपने घरों से बाहर नहीं निकलेगा। दो एवं चार पहिया वाहन भी नहीं चलेंगे। इस दौरान पुलिस की भी अत्यधिक सख्ती रहेगी।

अप्रैल माह में जारी होने वाले बिजली बिल के लिए हुई नई व्यवस्था

माही की गूंज, झाबुआ। कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के कारण प्रदेश में सभी जिलों में लॉक डाउन किया गया है, जिसके कारण विद्युत वितरण कंपनी की मीटर रीडिंग, बिल वितरण एवं बिल भुगतान सेवाएं प्रभावित हुई है। इस कारण से उपभोक्ताओं की सुविधा के दृष्टिगत निर्णय लिए गए है। लॉक डाउन के दौरान जिन निम्न दाब उपभोक्ताओं की मीटर रीडिंग निर्धारित दिनांक तक नहीं हो पाएगी, उनके देयक प्रावधिक आधार पर पूर्व माह की रीडिंग के आधार पर बनाये जायेंगे। अगले माह की रीडिंग प्राप्त होने पर प्रावधिक रूप से भुगतान की गई राशि का स्वतः समायोजन हो जायेगा। लॉक डाउन की स्थिति मे विद्युत देयकों का वितरण नहीं हो सकेगा। अतः उपभोक्ता अपने देयक कंपनी की वेब साइट से डाउनलोड कर सकते है। उपभोक्ता जिन्होंने अपने मोबाइल नंबर दर्ज किये हुए है, उन्हे देयक की जानकारी मोबाइल नम्बर पर भी प्रेषित की जायेगी। उपभोक्ता, अपने देयकों का भुगतान, कंपनी की वेबसाइट से या उपाय मोबाइल एप से या किऑस्क अथवा वेबसाइट से कर सकते है। उपभोक्ताओं को लॉक डाउन की स्थिति मे भी विद्युत का सतत प्रदाय जारी रखने के समस्त प्रयास किये जा रहे है। विषम परिस्थितियों मे समस्त उपभोक्ताओं से आनलाइन भुगतान करने के साथ ही सहयोग अपेक्षित है।

चोरी का मामला छोरी में तब्दील, विधायक का भी रहा हस्तक्षेप

लॉक डाउन के बाद भी हो रहे शादी समारोह, पुलिस भी कर रही इसकी पुष्टी

माही की गूंज, खवासा। उमेश मालवीय

समीपस्थ ग्राम पंचायत रवाली में 25-26 मार्च की मध्यरात्रि में ग्रामीणों ने एक बाईक पर सवार अज्ञात तीन व्यक्तियों को पकड़ा और पिटाई भी की। मामला गूंज के सामने आया तो गूंज की तहकीकात में ग्रामीणों ने बताया कि कुछ दिनों से चोर हमारे गांव में आ रहे हैं। कुछ जगह चोरी को अंजाम भी दिया है। जिस वजह से हम ग्रामीण पूरी तरह से रात्रि में सतर्क थे। वहीं 25-26 की मध्यरात्रि में कुछ मोटर साइकिल सवार बंद लाइट में जिस रास्ते से रात में पैदल चलना भी मुश्किल है, उस रास्ते पर से जा रहे थे। बाईक की हेडलाईट तो बंद थी परंतु ब्रेक मारने पर मोटर साईकिल की लाईट जलती दिखाई दे रही थी। जिस पर सभी ग्रामीण सक्रिय हुए और बाईक चालकों को पकड़ने का प्रयास किया। तो देखा बाईक सवार बाईक को खड़ी कर बिलीपाड़ा फलिये के निवासी अमरसिंग पिता कुंवरिया अमलियार के घर पर चोरी करने हेतु सेंध लगा रहे थे। ग्रामीणों को देख चोर 3 बाईक पर सवार होकर भागने लगे। जिसमें से एक बाईक पर सवार 3 चोरों को पकड़ लिया, पर वे भी भागने लगे। जिसके कारण उनकी पंचायती भी हुई।

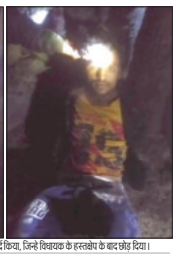

तीन चोरो को पकड़ कर ग्रामीणो ने पुलिस के सुपुर्द किया, जिन्हे विधायक के हस्तक्षेप के बाद छोड़ दिया।

मामले की जानकारी पुलिस को दी व पुलिस के आने के बाद तीनों चोरों को पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। ग्रामीणों का कहना है कि, अपराधियों में प्रशासन की शक्ति व लॉक डाउन आदेश के बाद भी कोई डर नहीं है। नतीजन 3 बाईक पर तीन-तीन लोग सवार होकर चोरी को अंजाम देने के लिए आ गए। पकड़े गए तीन चोरों को पुलिस हिरासत से क्षेत्रीय विधायक वीरसिंग भूरिया ने अपने गृह क्षेत्र के होने के कारण तीनों को आकर छुड़ा ले गए। वहीं अब पुलिस कह रही है कि यह चोरी का नहीं छोरी का मामला है।

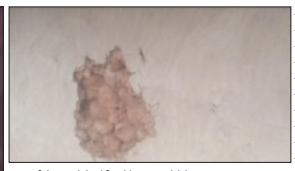

ग्रामीणो द्वारा पकडे चोर, चोरी करने हेतु यहा लगा रहे थे सेंध।

बाईक सवार गांव की एक छोरी के संपर्क में होकर छोरी ने ही गांव में ही हो रही शादी समारोह में होने की बात कह कर बुलाया था। लेकिन पुलिस जो लड़की का नाम बता रही उस नाम की कोई लड़की उस गांव में व उस दिन होने वाली शादी समारोह में नहीं थी। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि पुलिस ने विधायक के हस्तक्षेप के बाद दबाव में आकर होने वाली चोरी के मामले को छोरी के साथ जोड़कर मामले को रफ-दफ कर दिया।

वहीं चौकी प्रभारी वीरेन्द्रसिंह चौहान ने बताया कि, रम्भापुर क्षेत्र के ग्राम किशनपुरा का निवासी मनीष पिता भारतसिंह गणावा जो कि केटरिंग का कार्य करता है और एक माह पूर्व बड़ौदा से मनीष व बदला हुआ नाम सीमा निवासी रतनाली जो 12वीं तक पढी लिखी है। एक ही रेल डिब्बे में बैठकर साथ आ रहे थे। उस समय सीमा और मनीष का आंखों ही आंखों में प्रेम हो गया और थोड़ी बातचीत के बाद एक दूसरे ने मोबाइल नंबर दे दिए और प्रतिदिन उस लड़के से लड़की की बातचीत हो रही थी। इसी को लेकर लड़की ने गांव में हो रही शादी समारोह में होना बताया व वहां लड़के को बुलाया गया। जिस पर मनीष अपने 2 साथी राजेश, रूपसिंह देवधा व कमलेश रतनसिंह गणावा रात्रि में बाईक पर सवार होकर आए थे। पूरी पुष्टि होने के बाद यह मामला चोरी का नहीं छोरी के साथ संबंध होने का सामने आया। जिसके कारण तीनों के विरुद्ध प्रतिकात्मक कार्यवाही कर छोड़ दिया गया है।

चौकी प्रभारी ने बताया कि, हां विधायक जी, क्षेत्र में राउंड पर आए हुए थे, जो पुलिस चौकी पर भी आए थे, यह सही है। इस पर गूंज ने चौकी प्रभारी से पूछा कि कोरोना वायरस के चलते लॉकडाउन की अनदेखी कर बाईक सवारों का आना व शादी समारोह का होना क्या दर्शाता है सर? तो इनका कहना था कि सही है, अनदेखी कर बाईक सवारों का आना व शादी समारोह का होना गलत है। पर हम भी क्या कर सकते हैं? यह भी सही है कि अगर ग्रामीण इनको नहीं पकड़ते तो वह छोरी इनके साथ चली जाती।

सांसद डामोर ने प्रधानमंत्री राहत कोष में एक करोड़ की निधि तथा एक माह का वेतन किया जमा

माही की गूंज, झाबुआ। पूरे देश में कोरोना वायरस के बढ़ते प्रभाव के चलते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लोगों से जहां घरों मे रह कर ही लॉक डाउन की अपील की है। झाबुआ-रतलाम-आलीराजपुर के सांसद गुमानसिंह डामोर ने पीएम मोदी के आव्हान पर कोरोना पीड़ितों की मदद एवं इस बीमारी के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष में अपना एक माह का वेतन तथा सांसद निधि से एक करोड की धन राशि जमा करवाई है।

गूंज ने खबर के लिए खींचा फोटो, तब 4 दिन बाद पंचायत ने छिटवाई दवा

माही की गूंज, भाभल। कोरोना वायरस से पूरा विश्व परेशान हैं, तो वही ग्राम पंचायत भाभल ने बुधवार को ग्राम को सैनेटाइज करने के लिए 4 दिन बाद दवा का छिड़काव किया। वह भी तब जब गूंज ने इस बाबद खबर हेतु फोटो खींचा था। तब जाकर पंचायत को लगा कि आज दवा का छिड़काव किया जाना चाहिए अन्यथा ग्राम पंचायत की मीडिया के माध्यम से किरकिरी हो जाएगी।

आपको बता दें कि कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम हेतु कई सख्त निर्णय लिए जा रहे हैं। जिसमें पंचायत स्तर के जवाबदारों की भी जवाबदारी निश्चित की गई। परंतु भाभल में न तो आम लोगों में लॉकडाउन का कोई असर है, न ही कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के कोई उपाय किए जा रहे हैं। सामान्य स्थिति में ही ग्राम एवं आसपास के लोग भाभल के तेजाजी मंदिर व आस-पास ही बड़ी संख्या में बिना किसी मास्क के ही कंधे पर हाथ डालकर तो चिपक कर बैठ बतियाते है, पर उन्हें कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने एवं सोशल डिस्टेंसिंग के साथ लॉकडाउन का क्या अर्थ है उन्हें बताने, समझाने व जागरूक करने वाला कोई नहीं है। वही ग्राम पंचायत के जवाबदार तमाम निर्देशों के बाद भी महामारी के इस संक्रमण का हाहाकार मचने के बाद भी बड़ी लापरवाही करते नजर आ रहे है। बता दें कि, चार दिन पूर्व ग्राम पंचायत के जवाबदारों ने ग्राम को सैनेटाइज करने हेतु सैनेटाइजर मंगवाया और उसका पानी के साथ टंकी में चार दिन पूर्व से घोल कर के रख दिया, पर चार दिन बाद भी उस सैनेटाइजर के घोल से ग्राम को सैनेटाइज करने की मशक्कत नहीं की। जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि, पंचायत स्तर पर किस तरह की लापरवाही के साथ कोरोना जैसे लाइलाज बीमारी से मचे हुए हाहाकार के बाद भी प्रशासनिक आदेशों की अवहेलना की जा रही है।

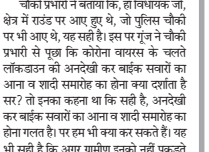

सासंद समर्थक भाजपा संगठन पर कर रहे कब्जा करने का प्रयास

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

प्रदेश में भाजपा सरकार के आते ही वर्चस्व की लड़ाई शुरू हो गई। जिले की राजनीति में आसमान से उतरे सांसद गुमानसिंह और उसके समर्थक अब सरकार में अपनी धाक जमाने के लिए अपने ही भाजपा संगठन को पूरी ताकत से निपटने में लगे है! चूंकि नए संगठन की जल्द की घोषणा होनी है, लेकिन देश में कोरोना इम्पैक्ट के कारण फिलहाल संगठन के चुनाव रुके पड़े हैं। परंतु संगठन की गुटबाजी चरम पर है। जिले की राजनीति में कांग्रेसियों के कंधे पर सवार हो कर आए गुमानसिंह राजनीति में आने के बाद से अपनी फौज खड़ी करने में लगे हैं। उसी के चलते वर्तमान संगठन को अपने कब्जे में कर संगठन का कोई काम नहीं करने दे रहे हैं। जिलाध्यक्ष हमेशा सांसद के आगे पीछे ही दिखते हैं। संगठन की इक्का दुक्का बैठकें भी सांसद के निवास स्थान पर हो रही थी। जिसमें संगठन सहित भाजपा के कई नेताओं ने संगठन की बैठकों से दूरी बना ली। जिले की राजनीति में सांसद के बढ़ते प्रभाव और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से विशेष प्रेम के कारण कई पुराने नेताओं और संगठन के पदाधिकारियों ने पार्टी से दूरी बना ली। जिसका परिणाम पार्टी को झाबुआ उपचुनाव में हार का मुंह देखना पड़ा। वहीं अपने पंसदीदा को उपचुनाव में टिकिट नहीं होने से सांसद ने उपचुनाव में रुचि भी नहीं दिखाई और जीती हुई भाजपा की सीट न केवल कांग्रेस के पास चली गई, बल्कि कांग्रेस के कद्दावर नेता कांतिलाल भूरिया की जिले की राजनीति में बड़ी वापसी करवा दी। संगठन के कई पदाधिकारी सांसद का खुल कर विरोध कर संगठन को नुकसान पहुंचाने के आरोप लगा रहे हैं।

रायपुरिया मंडल के साथ मारपीट, सोशल मीडिया पर डाला इस्तीफा

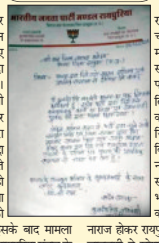

पिछले दिनों ग्राम झकनावदा में सांसद समर्थकों ने अपने नेता के विरोध करने वाले रायपुरिया मंडल मंत्री कुलदीप लववंशी को सांसद समर्थकों ने जिसमे भाजपा और कांग्रेस दोनों शामिल हैं। लॉक डाउन के दौरान खरीदी के लिए दिए गए समय में तारखेड़ी से झकनावदा खरीदी के लिए झकनावदा पहुंचे। रायपुरिया मंडल के कुलदीप लववंशी का पहले से योजनाबद्ध तरीके इंतजार कर रहे सांसद के समर्थकों द्वारा सोशल मीडिया पर हुई बहस को मुद्दा बना कर विवाद शुरू कर दिया। देखते ही देखते मामला मारपीट में तब्दील हो गया। मामला कोई समझ पता कि क्या हुआ हैं। मौके पर मौजूद भीड़ ने इनको अलग किया। बताया जा रहा है इसके बाद मामला झकनावदा चौकी पर पहुँच गया और रायपुरिया मंडल के मंत्री कुलदीप लववंशी पर प्रकरण दर्ज करने का दबाव बनाया गया। चूंकि मामला भाजपा-भाजपा के बीच का था। पुलिस ने प्रकरण दर्ज करने में कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई।

मामला पुलिस अधीक्षक तक पहुंच गया। दोनों ओर से पुलिस पर दबाव भी डाला गया। मिली जानकारी के अनुसार न केवल सांसद बल्कि कांग्रेस के विधायक ने भी कुलदीप पर प्रकरण दर्ज करने के लिए दबाव बनाना शुरू कर दिया। इधर बात संगठन में आगे गई तो संगठन की ओर से भी दबाव बनाकर किसी तरह से विवाद को आगे बढ़ने से रोका गया। बताया जा रहा है जिसके बाद दोनों पक्षों के मध्य चौकी पर ही समझौता हुआ। उधर मामले की जानकारी तारखेड़ी के लोधा समाज और रायपुरिया मंडल के पदाधिकारियों को लगी तो विवाद के लिए झकनावदा पहुंचने की तैयारी करने लगे। जिसे लॉक डाउन और जिले में लगी धारा 144 को देखते हुए किसी को भी झकनावदा कूलदीप ने नहीं आने दिया। संगठन की ओर से सहयोग नहीं मिलने और कांग्रेस से भाजपा में आए लोगों और क्षेत्र में कांग्रेसियों से भाजपा की साठगांठ के नाराज होकर रायपुरिया मंडल के पदाधिकारी कुलदीप लाववंशी ने सोशल मीडिया पर अपना इस्तीफा डाल दिया। जिसे कई भाजपाइयों ने वापस तक लेने की सलाह दी, लेकिन अभी तक इस्तीफा वापस नहीं लिया गया।

बढ़ेगा और विवाद, झकनावदा क्षेत्र में कांग्रेस हावी

बताया जा रहा है पूरा खेल पर्दे के पीछे से कांग्रेस के एक नेता द्वारा खेला गया, जो कांग्रेस में होने के बाद भी सांसद गुमानसिंह का खास माना जाता है। वहीं जिन लोगों ने कुलदीप से मारपीट की वो भी कहीं न कहीं कांग्रेस से आयातित या फिर सांसद के समर्थक हैं, जो क्षेत्र में बढ़ते भाजपा और सांसद विरोधी वर्चस्व को निपटाने के लिए लगे हैं। आने वाले समय में संगठन में अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयास कर रहे हैं। सांसद की भूमिका इसलिए भी संदिग्ध हो जाती हैं क्योंकि सांसद ने कई पुराने भाजपाई नेताओं को ताक में रख रक कांग्रेस से भाजपा में आए नेताओ को उपकृत कर रखा हैं। वही लोकसभा चुनाव के बाद में सांसद गुमान भरी बैठक में रायपुरिया मंडल अध्यक्ष पर बूथ स्तर पर राशि खर्च नहीं करने का आरोप लगा चुके हैं। विवाद गहराने के बाद बात सांसद की मापी तक जा पहुंची थी। मंडल अध्यक्ष अपने सभी बूथ प्रभारियों को इकट्ठा कर जिलाध्यक्ष ओम शर्मा और सांसद को रायपुरिया बुलाने पर अड़ गए थे। बाद में संगठन के दबाव के चलते मामले को जैसे तैसे दबाया गया। कहा जा सकता है पार्टी में रजिश का दौर चल रहा है और आगे विवाद और गहराने की उम्मीद हैं। संगठन में सांसद के बढ़ते प्रभाव और कांग्रेसियों से नजदीकियां संगठन के लिए आने वाले समय में बड़ी चुनौती के रूप में सामने आएंगा।

वहीं संगठन को अब तक अपनी पकड़ में रखने वाले सांसद की नजर अब नए संगठन के विस्तार पर है। जिसमें वो अपने नेता कम कर्मचारियों को फीट करने की तैयारी में है। जबकि संगठन पर अब तक राजनीति हावी नहीं हुई हैं, लेकिन ऐसा पहली बार देखा जा रहा है। संगठन केवल एक नेता के भरोसे इसकी कठपुतली बन कर चल रहा है, जो भविष्य में भाजपा के लिए बड़ी परेशानी खड़ी कर सकता हैं।

किराएदारों से जबरन मकान खाली कराने पर होगी दण्डात्मक कार्यवाही

माही की गूंज, झाबुआ। कोरोना वायरस संक्रमण से बचाव व नियंत्रण के लिए 25 मार्च से 14 दिनों तक घोषित किए गए लॉकडाउन की अवधि में केन्द्र सरकार द्वारा कामगारों, छात्रों तथा श्रमिकों के लिए समुचित व्यवस्था किए जाने तथा उनका स्वास्थ्य परीक्षण कराए जाने के निर्देश दिए गए हैं। केन्द्र सरकार द्वारा उद्योगों, कम्पनियों, व्यवसायिक संस्थानों के संचालकों को उनके यहां कार्यरत कर्मचारियों को लॉकडाउन अवधि में बिना किसी कटौती के पूरा वेतन भुगतान किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। जो श्रमिक, कामगार किराए के मकानों में रहते हैं, उनसे लॉकडाउन अवधि में किराया नहीं लेने के निर्देश मकान व दुकान मालिकों को दिए गए हैं। यदि किसी मकान मालिक द्वारा छात्रों, कामगारों से मकान खाली कराया जाता है, तो दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी।

इनसे सीखें.. युवाओं ने खुद किया गांव सील

कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए युवाओं की पहल

माही की गूंज, खच्चरटोड़ी। झाबुआ जिला की तहसील मेघनगर के अंतर्गत आने वाला गांव खच्चरटोडी। यहां के लोग शिक्षित है। ऐसे में कोरोना वायरस के खतरे को समझते हुए युवाओं ने गांव को बचाने की ठान ली है। कोरोना वायरस के खतरे को लेकर जहां लोग नियमों का उल्लंघन कर रोड पर बेवजह निकल रहे है। ऐसे में कोरोना के बढते हुए प्रभाव को देखते कर खच्चरटोडी के युवाओं ने खुद ही गांव को सील कर दिया है। गांव के युवा हिमांशु साबलिया, प्रशान्त टगरिया, यतिक, मिलन, शैलेन्द्र ने बताया कि गांव का रास्ता बंद नहीं होने के कारण आस -पास गांव के ग्रामीण बेवजह मोटरसाइकिल पर निकल रहे थे। इसी कारण हमने गांव के अन्तिम छोर पर टेक्टर को रोड पर खड़ा कर रास्ता बंद कर दिया है। इसमें केवल इमरजेंसी कार्य से जाने वाले व्यक्ति को ही निकलने दे रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422